MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

बच्चों के नाम रखने के लिये इस किताब में सेंकड़ों अच्छे नामों की फ़ेहरिस्त भी शामिल है

NAAM RAKHNE KE AHKAM (HINDI)

नाम रखने के अह़काम

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)
شعبہ اصلاحی کتب

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जेल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ यह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़्र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)
+91 98987 32611
E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ۇ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के
नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो

(ابو داؤد،٤/٣٧٤،حديث:٤٩٤٨)

नाम रखने के अहकाम

–: पेशकश :–

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

नाशिर मक्तबतुल मदीना, दा'वते इस्लामी (हिन्द)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

नाम किताब : नाम रखने के अहकाम

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो 'बए इस्लाही कुतुब)

त़बाअ़ते अव्वल : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 1435 हि. (ता 'दाद : 3100)

त़बाअ़ते दुवुम : जुमादल उख़रा, सि. 1440 हि. (ता 'दाद : 2100)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दा 'वते इस्लामी (हिन्द)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1435 हि. ह़वाला : 192

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین و علی اٰلہ و اصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि उर्दू किताब

"नाम रखने के अहकाम"

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

12-11-2013

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"बरकत वाले नाम" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ٦/١٨٥، حدیث: ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (6) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (7) कुरआनी आयात और (8) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (9) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (10) जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (11) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़् : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على إحسانه و بفضل رسوله صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक **1425** हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद पढ़ने वाले का नाम बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता है

सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है। (مسند البزار، ٤/٢٥٥، حديث: ١٤٢٥)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर ख़ुश नसीब है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश किया जाता है।

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाम पूछा करते

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी को आमिल (ज़कात व उ़श्र वग़ैरा हासिल करने वाला ज़िम्मेदार) बना कर भेजते तो उस का नाम पूछते, अगर उस

www.dawateislami.net

का नाम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द आता तो खुश होते और उस की खुशी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे पर देखी जाती और अगर उस का नाम नापसन्द होता तो उस की नापसन्दीदगी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे पर देखी जाती।

(ابو داوٗد،کتاب الطب، باب فی الطیرۃ،٤/٢٥،حدیث:٣٩٢٠)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : इस लिये उ़लमा फ़रमाते हैं कि अपनी अवलाद के नाम अच्छे रखो, नाम का असर नाम वाले पर पड़ता है। बुरे नाम वाले को लोग अपने पास नहीं बैठने देते। अच्छे नाम वाले के काम भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अच्छे होते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/263)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम बच्चे के लिये पहला तोह़फ़ा है

नाम किसी भी आदमी की शख़्सिय्यत का अहम ह़िस्सा होता है जिस से वोह पहचाना और पुकारा जाता है। घर, ख़ान्दान, मह़ल्ले, स्कूल, मद्रसे, जामिआ़, बाज़ार और दफ़्तर में नाम ही उस की शनाख़्त होता है जिस त़रह़ कि किताब का नाम उस की शनाख़्त होता है। कई मरतबा नाम घरेलू माह़ोल और तहज़ीबी रिवायात की अ़क्कासी भी करता है। नाम अच्छा हो तो इन्सान का ज़मीर उसे काम भी अच्छा करने की तरग़ीब देता रहता है। बच्चे के पैदा होते ही उस का नाम रखने के लिये ग़ौरो फ़िक्र शुरूअ़ हो जाता है, ऐसे में बाप को चाहिए कि अपने

बच्चे का अच्छा नाम रखे कि येह उस की तरफ़ से अपने बच्चे के लिये पहला और बुनयादी तोहफ़ा होता है जिसे बच्चा उम्र भर अपने सीने से लगाए रखता है । **सरकारे मदीनए मुनव्वरा,** सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَوَّلُ مَا يُنْحِلُ الرَّجُلُ وَلَدَهٗ اِسْمًا فَلْيُحْسِنْ اِسْمَهٗ या'नी आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है इस लिये चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे । (جمع الجوامع،۳/۲۸۵،حدیث:۸۸۷۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी के हां बच्चा पैदा हो तो मुबारक बाद देने के बा'द वालिदैन से उमूमन येही सुवाल होता है कि **नाम क्या रखा ?** बसा अवक़ात बच्चे का वालिद अपने दोस्त अहबाब और रिश्तेदारों से पूछता दिखाई देता है कि **नाम क्या रखें ?**

नाम कैसा होना चाहिए ? नाम कौन रखे ? कौन सा नाम रखना अफ़्ज़ल है ? कौन से नाम रखना नाजाइज़ है ? किसी का नाम बिगाड़ना कैसा ? कुन्यत किसे कहते हैं ? कुन्यत रखने की क्या अहम्मिय्यत है ? लक़ब क्या होता है ? ज़ेरे नज़र किताब **''नाम रखने के अहकाम''** (जिस का नाम शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अता फ़रमाया है) इस किताब में इसी नौइय्यत की मा'लूमात फ़राहम करने की कोशिश की गई है, बच्चों और बच्चियों के नाम रखने के लिये 538 अच्छे नामों की फ़ेहरिस भी शामिले किताब है । इस किताब को ख़ूब समझ कर कम अज़ कम तीन मरतबा पढ़िये और दूसरों को भी पढ़ने की तरग़ीब दीजिये । **(शो'बए इस्लाही कुतुब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)**

www.dawateislami.net

क़ियामत के दिन नाम से पुकारा जाएगा

नाम का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ दुन्यावी ज़िन्दगी तक नहीं बल्कि जब मैदाने ह़श्र क़ाइम होगा तो इन्सान को उसी नाम से मालिके काइनात عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बुलाया जाएगा जिस नाम से उसे दुन्या में पुकारा जाता है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।

(ابو داؤد،کتاب الادب،باب في تغيير الاسماء،٤/٣٧٤،حديث:٤٩٤٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखें

बच्चों का नाम रखना इतना अहम है कि जो बच्चे मां के पेट में ज़ाएअ़ हो जाएं उन का भी नाम रखने की ताकीद की गई है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखो कि येह कच्चे बच्चे तुम्हारे पेशरव (आगे आगे चलने वाले या आगे गुज़रने वाले) हैं।

(کنز العمال، کتاب النکاح،الباب السابع، الجزء١٦،٨/١٧٥، حديث:٤٥٢٠٦)

एक ह़दीसे पाक में तो यहां तक इरशाद हुवा कि कच्चा बच्चा नाम न रखने की सूरत में बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में वालिदैन की शिकायत करेगा कि इन्हों ने मेरा नाम न रख कर मुझे ज़ाएअ़ कर दिया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **सरकारे** नामदार,

www.dawateislami.net

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : कच्चे बच्चे का भी नाम रखो कि इन के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे मीज़ान के पलड़े को भारी करेगा, बेशक कच्चा बच्चा क़ियामत के दिन अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! इन्हों ने मेरा नाम न रख कर मुझे ज़ाएअ़ कर दिया।

(کنز العمال، کتاب النکاح،الباب السابع، جزء١٦،ص١٧٥، حدیث: ٤٥٢٠٧)

"**सिक़्त़**" या'नी कच्चे बच्चे की वज़ाहत करते हुए मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अ़रबी में "**सिक़्त़**" वोह बच्चा कहलाता है जो छे माह पूरे होने से पहले शिकमे मादर (या'नी मां के पेट) से ख़ारिज हो जाए। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/519)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बच्चा फ़ौत हो जाए तो ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1254 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** (जिल्द 1) के सफ़ह़ा 841 पर है : बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा उस की ख़िल्क़त (या'नी पैदाइश) तमाम (या'नी मुकम्मल) हो या ना तमाम (ना मुकम्मल) बहर ह़ाल उस का नाम रखा जाए और क़ियामत के दिन उस का ह़श्र होगा (या'नी उठाया जाएगा) (बहारे शरीअ़त, 3/659, دُرِّمُختار، ٣/١٥٣) लड़का हो तो लड़कों का सा और लड़की हो तो लड़कियों का सा नाम रखा जाए और मा'लूम न हो सका कि लड़की है या लड़का तो ऐसा नाम रखा जाए जो मर्द व औ़रत दोनों के लिये हो सकता हो। (बहारे शरीअ़त, 3/603) (मसलन : राह़त, नुस्रत, तस्लीम वग़ैरा)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नाम कब रखें ?

अफ़्ज़ल येह है कि सातवें दिन बच्चे का अ़क़ीक़ा किया जाए और नाम रखा जाए, अ़क़ीक़ा करने से पहले भी नाम रखना जाइज़ है। (नुज़्हतुल क़ारी, 5/430), ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : नबिये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन उस का नाम रखने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।

(ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی تعجیل اسم المولود، ٤/٣٨٠، حدیث: ٢٨٤١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम कौन रखेगा ?

नाम रखने की ज़िम्मेदारी बुन्यादी त़ौर पर बच्चे के वालिद की बनती है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अवलाद का वालिद पर येह ह़क़ है कि उस का अच्छा नाम रखे और अच्छा अदब सिखाए। (شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد و الاهلین، ٦/٤٠٠، حدیث: ٨٦٥٨)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इस ह़दीस के तह़्त नक़्ल करते हैं : उम्मत को अच्छा नाम रखने का हुक्म देने में इस बात पर तम्बीह है कि आदमी के काम उस के नाम के मुत़ाबिक़ होने चाहिए क्यूंकि नाम इन्सान की शख़्सिय्यत के लिये जिस्म की त़रह़ होता और उस की शख़्सिय्यत की अ़क्कासी करता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मत इस बात का तक़ाज़ा करती है कि नाम और काम में मुनासबत और तअ़ल्लुक़ हो। नाम का असर शख़्सिय्यत पर और शख़्सिय्यत का असर नाम पर ज़ाहिर होता है। (فیض القدیر، ٣/٥٢٢، تحت الحدیث: ٣٧٤٥)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : अच्छे नाम का असर नाम वाले पर पड़ता है, अच्छा नाम वोह है जो बे मा'ना न हो जैसे बुधवा, तलवा वग़ैरा और फ़ख़्र व तकब्बुर न पाया जाए जैसे बादशाह, शहनशाह वग़ैरा और न बुरे मा'ना हों जैसे आसी वग़ैरा। बेहतर येह है कि अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) या हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए इज़्ज़ाम, अहले बैते अतहार (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) के नामों पर नाम रखे जैसे इब्राहीम व इस्माईल, उसमान, अली, हुसैन व हसन वग़ैरा, औरतों के नाम आसिया, फ़ातिमा, आइशा वग़ैरा और जो अपने बेटे का नाम मुहम्मद रखे वोह اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ बख़्शा जाएगा और दुन्या में उस की बरकात देखेगा। (मिरआतुल मनाजीह, 5/30)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमारे मुआशरे में नाम रखने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

बच्चे या बच्ची (बिलख़ुसूस पहली अवलाद) की पैदाइश के बा'द उमूमन क़रीबी रिश्तेदारों मसलन दादी, नानी, फूफी, ख़ाला, ताया चचा वग़ैरा का इस्रार होता है कि इस का नाम मैं रखूंगा और हर एक अपनी पसन्द का नाम भी चुन कर ले आता है। अगर वालिद राज़ी हो तो इस में हरज नहीं लेकिन अहम बात येह है कि नाम रखने वाले बा'ज़ अवक़ात दीनी मा'लूमात की कमी की वज्ह से बच्चों के ऐसे नाम भी रख देते हैं जो शरअन ना जाइज़ होते हैं या जिन के मआनी अच्छे नहीं होते, ऐसे नाम रखने से बहर हाल बचा जाए। वालिदैन की ख़्वाहिश होती है कि इन के बेटे या बेटी का नाम निहायत ही ख़ूब सूरत हो, मगर नाम के हतमी

www.dawateislami.net

इन्तिख़ाब के वक़्त अल्फ़ाज़ की ज़ाहिरी ख़ूब सूरती का ख़याल तो होता है लेकिन दीगर पहलूओं पर तवज्जोह नहीं होती चुनान्चे, बा'ज़ अवक़ात लोग अह्ले इल्म से ऐसे ऐसे नामों के मआ़नी पूछते हैं जो उर्दू, अ़रबी या फ़ारसी किसी लुग़त में नहीं मिलते, ज़ाहिर है इस त़रह़ के बे मा'ना नाम रखना भी मुनासिब नहीं ।

नाम कैसा होना चाहिए ?

इस ह़वाले से मदनी फूल अ़त़ा करते हुए **सदरुश्शरीआ़,** बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی बहारे शरीअ़त में लिखते हैं : ऐसा नाम रखना जिस का ज़िक्र न क़ुरआने मजीद में आया हो, न ह़दीसों में हो, न मुसलमानों में ऐसा नाम मुस्ता'मल हो, इस में उ़लमा को इख़्तिलाफ़ है, बेहतर येह है कि न रखे । (बहारे शरीअ़त, 3/603) मदनी मश्वरा है कि वालिद या रिश्तेदार बच्चे का जो भी नाम मुन्तख़ब करें पहले इस के बारे में मुफ़्तियाने किराम या उ़लमाए अह्ले सुन्नत دامت فیوضھم से रहनुमाई लें और इस पर अ़मल भी करें । (अपने शरई मसाइल के ह़ल के लिये दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत के इन नम्बर्ज़ पर भी राबित़ा किया जा सकता है : **03000220112-5** (वक़्त सुब्ह़ **10** से **4** बजे तक, **1** से **2** बजे तक वक़्फ़ा बराए नमाज़ व त़आ़म और जुमुआ़ के दिन ता'त़ील है ।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कहीं हुब्बे जाह तो नहीं ?

बा'ज़ अवक़ात ऐसा नाम भी तलाश किया जाता है जो घर, ख़ानदान, मह़ल्ले में दूर दूर तक किसी का न हो, जो भी सुने फ़ौरन

कह उठे कि येह नाम तो पहली बार सुना है, कैसा ज़बरदस्त नाम रखा है ! येह अल्फ़ाज़ सुन कर नाम रखने वाला फूले नहीं समाता, लेकिन ऐसों को एक लम्हे के लिये सोच लेना चाहिए कि कहीं येह ख़ुशी **हुब्बे जाह** (या'नी ता'रीफ़ की ख़्वाहिश) के मरज़ का नतीजा तो नहीं ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाम रखते वक़्त अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ○ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई भी जाइज़ काम अच्छी निय्यत से किया जाए तो उस का भी सवाब मिलता है, लिहाज़ा एक दम नाम रख देने के बजाए पहले ह़स्बे ह़ाल निय्यतें कर लेनी चाहिए मसलन ❁ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ जाइज़ नाम रखूंगा ❁ जिन नामों की अह़ादीसे मुबारका में तरग़ीब आई है वोह नाम रखूंगा ❁ निस्बत की बरकतें लेने के लिये अम्बियाए किराम, सह़ाबए किराम और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के नाम पर नाम रखूंगा। ❁ नाम के ह़तमी इन्तिख़ाब के लिये उ़लमाए किराम से मश्वरा कर लूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम

अगर किसी बच्चे का नाम "अ़ब्द" से शुरूअ़ करना हो तो सब से अफ़्ज़ल नाम **अ़ब्दुल्लाह** और **अ़ब्दुर्रह़मान** हैं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे नामों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा नाम अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान हैं ।"

(مسلم،كتاب الآداب،باب النهى عن التكني بابى القاسم...الخ،ص١١٧٨،حديث:٢.(٢١٣٢))

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى लिखते हैं : इन दोनों में ज़ियादा अफ़्ज़ल **अ़ब्दुल्लाह** है कि उ़बूदिय्यत (या'नी अ़ब्द होने) की इज़ाफ़त (या'नी निस्बत) अ़लमे ज़ात (या'नी **अल्लाह**) की त़रफ़ है । इन्हीं (या'नी अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान) के हुक्म में वोह अस्मा (या'नी नाम) हैं जिन में उ़बूदिय्यत की इज़ाफ़त (या'नी निस्बत) दीगर अस्माए सिफ़ातिय्या की त़रफ़ हो, मसलन अ़ब्दुर्रह़ीम, अ़ब्दुल मलिक, अ़ब्दुल ख़ालिक़ वग़ैरहा । ह़दीस में जो इन दोनों नामों को तमाम नामों में ख़ुदा तआ़ला के नज़्दीक प्यारा फ़रमाया गया इस का मत़लब येह है कि जो शख़्स अपना नाम **अ़ब्द** के साथ रखना चाहता हो तो सब से बेहतर अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान हैं, वोह नाम न रखे जाएं जो जाहिलिय्यत में रखे जाते थे कि किसी का नाम अ़ब्दे शम्स (सूरज का बन्दा) और किसी का अ़ब्दुद्दार (घर का बन्दा) होता ।

(बहारे शरीअ़त, 3/601)

"अ़ब्दुर्रह़मान" और "अ़ब्दुल्लाह" नाम मुकम्मल बोलने की आ़दत बनाएं

सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद लिखते हैं : अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान बहुत अच्छे नाम हैं मगर इस ज़माने में येह अक्सर देखा जाता है कि बजाए अ़ब्दुर्रह़मान उस शख़्स को बहुत से लोग **रह़मान** कहते हैं और ग़ैरे ख़ुदा को **रह़मान** कहना ह़राम है । इसी त़रह़ अ़ब्दुल ख़ालिक़ को **ख़ालिक़** और अ़ब्दुल मा'बूद को **मा'बूद** कहते हैं, इस क़िस्म के नामों में ऐसी नाजाइज़ तरमीम (तब्दीली) हरगिज़ न की जाए । इसी त़रह़ बहुत कसरत से नामों में तसग़ीर का रवाज है या'नी नाम को इस त़रह़ बिगाड़ते हैं जिस से ह़क़ारत निकलती है और ऐसे नामों में तसग़ीर हरगिज़ न की जाए लिहाज़ा जहां येह गुमान हो कि नामों में तसग़ीर की जाएगी (वहां) येह नाम न रखे जाएं दूसरे नाम रखे जाएं । (बहारे शरीअ़त, 3/356) (एक और मक़ाम पर सदरुश्शरीआ़ लिखते हैं :) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की तसग़ीर करना कुफ़्र है, जैसे किसी का नाम अ़ब्दुल्लाह या अ़ब्दुल ख़ालिक़ या अ़ब्दुर्रह़मान हो उसे पुकारने में आख़िर में अलिफ़ वग़ैरा ऐसे ह़ुरूफ़ मिला दें जिस से तसग़ीर समझी जाती है । (बहारे शरीअ़त, 2/462)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"अ़ब्दुल्लाह" नाम रखा

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 19 से ज़ाइद ख़ुश नसीब बच्चों का नाम "**अ़ब्दुल्लाह**" रखा, ऐसी ही एक रिवायत मुलाह़ज़ा कीजिये, : चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन

www.dawateislami.net

मुत़ीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि उन के वालिद ने ख़्वाब में देखा कि उन्हें खजूरों की थैली दी गई, उन्हों ने नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपना ख़्वाब बयान किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हारी कोई ज़ौजा उम्मीद से है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ! बनू लैस (क़बीले) से तअ़ल्लुक़ रखने वाली ज़ौजा। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़नक़रीब उस के हां तुम्हारा बेटा पैदा होगा। जब बच्चा पैदा हुवा वोह उसे नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे खजूर की घुट्टी दी, उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा और उस के लिये बरकत की दुआ़ फ़रमाई। (الاصابة، ٥/٢١،رقم:٦٢٠٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक "जिन्न" का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि इब्तिदाए इस्लाम में हम मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में सुल्त़ाने इन्सो जान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे, हम ने मक्के के एक पहाड़ से एक ग़ैबी आवाज़ सुनी जो मुशरिकीन को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभार रही थी। नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह शैत़ान है और जिस शैत़ान ने किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام के ख़िलाफ़ ऐसा ए'लान किया है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे हलाक कर दिया। बा'द में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे एक त़ाक़तवर जिन्न के ज़रीए हलाक कर दिया जिस का नाम **सम्ह़ज** है, मैं ने उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रख दिया है।" शाम को हम ने उस जगह से ग़ैबी आवाज़ में येह अश्आ़र सुने :

نَحْنُ قَتَلْنَا مِسْعَرًا لَمَّا طَغٰی وَاسْتَکْبَرَ
وَصَغَّرَ الْحَقَّ وَسَنَّ الْمُنْکَرَا بِشَتْمِهٖ نَبِیَّنَا الْمُظَفَّرَا

या'नी : हम ने मिस्अ़र (ख़बीस जिन्न) को क़त्ल कर दिया वोह सरकश और मुतकब्बिर था, वोह हमारे कामयाब व कामरान नबी की बदगोई करता था और ह़क़ का मुन्किर था। (الاصابة،٣/١٤٨،رقم:٣٤٨٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ब्दुर्रह़मान नाम रखा

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان का नाम अ़ब्दुर्रह़मान भी रखा, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ज़मानए जाहिलिय्यत में मेरा नाम अ़ब्दे शम्स (सूरज का बन्दा) था, फिर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम अ़ब्दुर्रह़मान रखा। (اسد الغابة،٦/٣٣٧، رقم:٦٣١٩)

तुम "अबू राशिद अ़ब्दुर्रह़मान" हो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राशिद अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه नबिये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अपनी क़ौम के 100 अफ़राद का वफ़्द ले कर ह़ाज़िर हुए और दौलते ईमान से नवाज़े गए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी ह़ाज़िरी का अह़वाल सुनाते हैं कि मेरे साथ आने वाले लोगों ने मुझ से कहा : पहले तुम जा कर नबिये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करो, अगर तुम्हें उन में पसन्दीदा बात नज़र आए तो हमें आ कर बताना

हम भी हाज़िरी देंगे वरना तुम वापस आ जाना हम लौट जाएंगे। मैं ने हाज़िर हो कर कहा : اَنْعِمْ صَباحاً يَا مُحَمَّد या'नी सुब्ह बख़ैर ऐ मुहम्मद ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह अहले ईमान का सलाम नहीं। मैं ने अ़र्ज़ किया : तो फिर किस त़रह़ सलाम करूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम अहले ईमान के हां आओ तो कहो : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰه मैं ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰه आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰه وبَرَكَاتُه फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम दरयाफ़्त फ़रमाया : मैं ने कहा : अबू मुआ़विय्या अ़ब्दुल्लाति वल उ़ज़्ज़ा। नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि तुम "अबू राशिद अ़ब्दुर्रह़मान" हो। नबिये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाई, मुझे बिठाया, मुझे अपनी चादर और अ़सा अ़त़ा फ़रमाया।

(جمع الجوامع، ۱۵/۵۵۱، حدیث: ۱۵۱۰۲ ملخصًا)

अपने बेटे का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रखो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू सबरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सह़ाबी इब्ने सह़ाबी हैं। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का शुमार कूफ़ा में रिहाइश पज़ीर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में होता है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि मेरे वालिद अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मेरे दादा के साथ राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हां गए, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे दादा से पूछा : तुम्हारे इस बेटे का नाम क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़

www.dawateislami.net

की : अ़ज़ीज़ । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया इस का नाम अ़ज़ीज़ नहीं "अ़ब्दुर्रह़मान" रखो, सब से अच्छे नाम अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुर्रह़मान और ह़ारिस हैं । (اسد الغابة،٣/٤٦٦،رقم:٣٣١٣)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अ़ज़ीज़ अस्माए इलाहिय्या में से है इ़ज़्ज़त से बना है, मुसलमान में फ़िरोतनी (या'नी इन्किसारी), इ़ज्ज़ो नियाज़ चाहिए । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/420)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़रूरी वज़ाह़त

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : येह न समझना चाहिए कि येह दोनों नाम (या'नी अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान) **मुह़म्मद व अह़मद** से भी अफ़्ज़ल हैं, क्यूंकि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्मे पाक **मुह़म्मद व अह़मद** हैं और ज़ाहिर येही है कि येह दोनों नाम ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मुन्तख़ब फ़रमाए, अगर येह दोनों नाम ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के नज़दीक बहुत प्यारे न होते तो अपने मह़बूब के लिये पसन्द न फ़रमाया होता । अह़ादीस में **मुह़म्मद** नाम रखने के बहुत फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं ।

(बहारे शरीअ़त, 3/601)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अस्माए इलाहिय्या के साथ नाम रखने के मदनी फूल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामों की दो क़िस्में हैं : ज़ाती और सिफ़ाती, ज़ाती नाम सिर्फ़ "**अल्लाह**" है। इस ज़ाती नाम को किसी इन्सान के लिये रखना जाइज़ नहीं है अगर **अ़ब्द** की इज़ाफ़त के साथ "**अ़ब्दुल्लाह**" रखा जाए तो जाइज़ बल्कि बाइ़से फ़ज़ीलत है। फिर सिफ़ाती नामों की दो क़िस्में हैं :

(1) जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास हैं, मसलन : रह़मान (हमेशा रह़्म फ़रमाने वाला), क़ुद्दूस (बड़ा पाक), क़य्यूम (अज़ ख़ुद हमेशा क़ाइम रहने वाली ज़ात) वग़ैरा, अगर येह नाम **अ़ब्द** की इज़ाफ़त के साथ रखे जाएं मसलन अ़ब्दुल क़ुद्दूस, अ़ब्दुल क़य्यूम तो जाइज़ है।

(2) जो नाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास नहीं हैं मसलन : अ़ली, रशीद, कबीर, बदीअ़ वग़ैरा, येह नाम **अ़ब्द** की इज़ाफ़त और इस के बिग़ैर रखना भी जाइज़ है, अलबत्ता इस क़िस्म के नामों के रखने की सूरत में येह ज़रूरी है कि इन नामों के वोह मा'ना मुराद न लिये जाएं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान के ही लाइक़ हैं, मसलन : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का "**रशीद, कबीर**" होना **ज़ाती** है और मख़्लूक़ के अन्दर येह मा'ना **अ़ताई** हैं। **सदरुश्शरीआ़,** बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द 3 ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 602 में फ़रमाते हैं : बा'ज़ अस्माए इलाहिय्या जिन का इत़लाक़ (बोला जाना) **ग़ैरुल्लाह** पर जाइज़ है इन के साथ नाम रखना जाइज़ है, जैसे **अ़ली, रशीद, कबीर, बदीअ़,** क्यूंकि बन्दों के नामों में वोह मा'ना मुराद नहीं हैं जिन का इरादा

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला पर इत़्लाक़ करने (बोलने) में होता है और इन नामों में अलिफ़ व लाम मिला कर भी नाम रखना जाइज़ है, मसलन **अल अ़ली**, **अर्रशीद**। हां इस ज़माने में चूंकि अ़वाम में नामों की तसग़ीर करने का बकसरत रवाज हो गया है, लिहाज़ा जहां ऐसा गुमान हो ऐसे नाम से बचना ही मुनासिब है। ख़ुसूसन जब कि अस्माए इलाहिय्या के साथ **अ़ब्द** का लफ़्ज़ मिला कर नाम रखा गया, मसलन **अ़ब्दुर्रह़ीम**, **अ़ब्दुल करीम**, **अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** कि यहां मुज़ाफ़ इलैह से मुराद **अल्लाह** तआ़ला है और ऐसी सूरत में तसग़ीर (छोटा करना) अगर क़स्दन होती तो مَعَاذَاللّٰہ **कुफ़्र** होती, क्यूंकि येह उस शख़्स की तसग़ीर नहीं बल्कि मा'बूदे बरह़क़ की तसग़ीर है मगर अ़वाम और नावाक़िफ़ों का येह मक़्सद यक़ीनन नहीं है, इसी लिये वोह हुक्म नहीं दिया जाएगा बल्कि उन को समझाया और बताया जाए और ऐसे मौक़अ़ पर ऐसे नाम ही न रखे जाएं जहां येह एह़तिमाल (गुमान) हो। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار،٩/٦٨٨)

"जब्बार" नाम तब्दील कर के "अ़ब्दुल जब्बार" रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल जब्बार बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पहला नाम "जब्बार बिन ह़ारिस।" था, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम "अ़ब्दुल जब्बार" (ज़बरदस्त कुदरत वाले के बन्दे) हो। (اسد الغابة،١/٣٨٧،رقم:٦٦٧)

अ़र्ज़ : "अ़ब्द" से रखे जाने वाले नामों की फ़ेहरिस इसी किताब के सफ़ह़ा 122 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नामे मुहम्मद की बरकतों पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने मुस्तफ़ा

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे अक़्दस "**मुहम्मद**" पर नाम रखना बहुत बड़ी सआ़दत है। एक सर्वे के मुताबिक़ दुन्या में सब से ज़ियादा रखा जाने वाला नाम "**मुहम्मद**" है। नामे "**मुहम्मद**" की फ़ज़ीलत ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक से बयान फ़रमाई है, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

❁ जिस के हां बेटा पैदा हो और मेरी महब्बत और हुसूले बरकत के लिये उस का नाम **मुहम्मद** रखे तो वोह और उस का बेटा दोनों जन्नत में जाएंगे। (کنزالعمال، کتاب النکاح، الفصل الاول فی الاسماء، ۱۶/۱۷۵، حدیث ۴۵۲۱۵)

❁ जिस ने मेरे नाम से बरकत की उम्मीद करते हुए मेरे नाम पर नाम रखा, क़ियामत तक सुब्हो शाम उस पर बरकत नाज़िल होती रहेगी।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، الفصل الاول فی الاسماء، ۱۶/۱۷۵، حدیث ۴۵۲۱۳)

❁ रोज़े क़ियामत दो शख़्स रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे, हुक्म होगा : इन्हें जन्नत में ले जाओ। अ़र्ज़ करेंगे : इलाही हम किस अ़मल पर जन्नत के क़ाबिल हुए, हम ने तो जन्नत का कोई काम किया नहीं ? फ़रमाएगा : जन्नत में जाओ ! मैं ने हल्फ़ किया है कि जिस का नाम **अहमद** या **मुहम्मद** हो, दोज़ख़ में न जाएगा।

(مسند الفردوس، ۲/۵۰۳، حدیث: ۸۵۱۵)

❁ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस का नाम तुम्हारे नाम पर होगा, उसे अ़ज़ाब न दूंगा।

(کشف الخفاء، حرف الخاء، ۱/۳۴۵، حدیث: ۱۲۴۳)

www.dawateislami.net

❁ जब कोई क़ौम किसी मश्वरे के लिये जम्अ़ हो और उन में कोई शख़्स "**मुह़म्मद**" नाम का हो और वोह उसे मश्वरे में शरीक न करें तो उन के लिये मुशावरत में बरकत न होगी। (الکامل فی ضعفاء الرجال، ۱/۲۷۵)

❁ जिस के तीन बेटे हों और वोह उन में से किसी का नाम **मुह़म्मद** न रखे, वोह ज़रूर जाहिल है। (معجم کبیر، ۱۱/۵۹، حدیث:۱۱۰۷۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिज़्क़ में बरकत हो जाती

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق फ़रमाते हैं : अह्ले मक्का आपस में येह गुफ़्तगू किया करते थे कि जिस घर में भी **मुह़म्मद** नाम का कोई फ़र्द होता है तो उस घर में ख़ैरो बरकत होती है और उन के रिज़्क़ में कसरत होती है। (المنتقی شرح مؤطا امام مالک، ۹/۴۵۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लफ़्ज़े "मुह़म्मद" के बारे में ईमान अफ़रोज़ मदनी फूल

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में लिखते हैं : लफ़्ज़े **मुह़म्मद** के मा'ना हैं : हर त़रह़ ता'रीफ़ किया हुवा, हर वक़्त, हर ज़माना, हर ज़बान में ह़म्दो सना किये हुए, ह़क़ीक़त येह है कि जैसे हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम ख़लक़त से अफ़्ज़ल, तमाम रसूलों के सरदार हैं इसी त़रह़ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम शरीफ़ भी तमाम

www.dawateislami.net

नबियों के नामों का सरदार है, इस नामे पाक के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, जिन में से चन्द येह हैं :

(1) इस नामे पाक को **अल्लाह** तआ़ला के नाम या'नी लफ़्ज़े "**अल्लाह**" से बहुत मुनासबत है, **अल्लाह** में ह़र्फ़ चार, चारों ह़र्फ़ नुक़्तों से ख़ाली हैं, इन में एक "शद्द (ّ) ", दो "ह़रकतें", एक "सुकून (ْ)" है, इसी त़रह़ लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" चार ह़र्फ़, चारों ह़र्फ़ नुक़्तों से ख़ाली, एक "शद्द (ّ)", दो "ह़रकतें" एक "सुकून" ।

(2) लफ़्ज़े "**अल्लाह**" बोलने से दोनों होंट जुदा हो जाते हैं, लफ़्ज़े "**मुह़म्मद**" कहते हैं तो दोनों लब मिल जाते हैं, कि वोह मख़्लूक़ को ख़ालिक़ से मिलाने ही तो आए हैं, अगर उन का वासित़ा न हो तो मख़्लूक़ ख़ालिक़ से बहुत दूर है।

(3) लफ़्ज़े "**अल्लाह**" अपनी दलालत में ह़र्फ़ों का मोह़ताज नहीं, अगर अव्वल (या'नी शुरूअ़) का अलिफ़ न रहे, तो "لله" बन जाता है, अगर अव्वल (या'नी शुरूअ़) का लाम भी न रहे तो "له" है, अगर दरमियान का अलिफ़ भी न हो तो "ه" है यूंही लफ़्ज़े "**मुह़म्मद**" दलालत में ह़र्फ़ों का ह़ाजत मन्द नहीं, अगर अव्वल (या'नी शुरूअ़) की मीम अलग हो जाए तो "حمد" रहता है अगर "ح" भी उड़ जाए तो "مَدّ" है या'नी खींचना, मख़्लूक़ को खींच कर ख़ालिक़ तक पहुंचाना, अगर बीच की मीम भी न रहे तो "दाल" ब मा'ना रहबर।

(4) सब के नाम इन के मां-बाप रखते हैं, लक़ब क़ौम देती है, ख़ित़ाब हुकूमत से मिलता है, मगर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के

www.dawateislami.net

नाम, लक़ब व ख़िताब सब रब तआ़ला की त़रफ़ से हैं कि अ़ब्दुल मुत्त़लिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़िरिश्ते की बिशारत से येह नाम रखा।

(5) दूसरों के नाम पैदाइश के सातवें दिन रखे जाते हैं, मगर हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम आ़लम की पैदाइश से पहले अ़र्शे आ'ज़म पर लिखा गया था और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत से क़रीबन 600 बरस पहले अपनी क़ौम को फ़रमाया : اِسْمُہٗۤ اَحْمَد उन का नामे पाक अह़मद है, पिछली क़ौमें आप के नाम की बरकत से दुआ़एं मांगती थीं।

(6) कोई शख़्स आप को "**मुह़म्मद**" कह कर बुरा नहीं कह सकता, अगर कहेगा तो ख़ुद अपने मुंह से झूटा होगा कि उन्हें कहता तो है "**मुह़म्मद** " या'नी लाइक़े ह़म्द और करता है बुराइयां, इसी लिये कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम "**मुज़म्मम** (مُذَمَّم)" रख कर आप की शाने अक़्दस में बकवास बकी, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कि देखो हम को हमारे रब तआ़ला ने इन कुफ़्फ़ार की गालियों से बचाया, येह लोग "**मुज़म्मम**" को बुरा कहते हैं, होगा कोई "**मुज़म्मम**" हम तो "**मुह़म्मद**" हैं।

(بخاری،کتاب المناقب،باب ماجاء فی اسماء رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم، ۲/ ۴۸۴، حدیث:۳۵۳۳)

(7) हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम "**मुह़म्मद**" बहुत जामेअ़ है, जिस में हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान हो गए हैं, **आदम** के मा'ना हैं मिट्टी से पैदा होने वाले, **इब्राहीम**

के मा'ना हैं "मेहरबान बाप, अबुर्रहीम", **नूह** के मा'ना हैं "ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या व ज़ारी व नौहा करने वाले", **ईसा** के मा'ना हैं "बहुत शरीफ़ुन्नफ़्स, करीमुत्तबअ़" इन तमाम नामों में एक एक वस्फ़ की त़रफ़ इशारा है, मगर "**मुह़म्मद**" के मा'ना हैं हर त़रह़ हर वस्फ़ में बेह़द ता'रीफ़ किये हुए, इस में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ला ता'दाद कमालात व ख़ूबियों की त़रफ़ इशारा हो गया।

(**8**) लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" में ग़ैबी ख़बर भी है कि हमेशा या'नी दुन्या व आख़िरत में इन की हर जगह हर त़रह़ ह़म्दो सना हुवा करेगी, इसी ख़बर की सदाक़त हम अपनी आंखों से देख रहे हैं कि आज भी हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बराबर किसी की ता'रीफ़ नहीं होती, बल्कि जो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वाबस्ता हो गए उन की भी ता'रीफ़ हो गई, फ़र्श पर इन की धूम, अ़र्श पर इन के चर्चे, आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

अ़र्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श में त़ुरफ़ा धूम धाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

(**9**) जो अपने बेटे का नाम मह़ब्बत में "**मुह़म्मद**" रखे, **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़्म फ़रमाएगा कि मुझे ऐसे शख़्स को अ़ज़ाब देते हुए ह़या आती है जिस ने मेरे मह़बूब की मह़ब्बत में अपने बेटे का नाम "**मुह़म्मद**" रखा है। (तफ़्सीरे नई़मी, 5/220 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

“मुह़म्मद” नाम रखा

कई सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ऐसे हैं जिन का नाम खुद सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने “**मुह़म्मद**” रखा, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़म्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साह़िबज़ादे हैं । जब आप की विलादत हुई आप के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले गए ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बच्चे को घुट्टी दें और इस का नाम रखें, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के सर पर हाथ फेरा और इन का नाम “**मुह़म्मद**”रखा और अपनी कुन्यत “**अबुल क़ासिम**” अ़त़ा फ़रमाई । (اسد الغابة،٥/١٠١،رقم:٤٧٣٨ ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शुऐ़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इमाम अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत फ़रमाते हैं कि जो येह चाहे कि उस की औ़रत के ह़म्ल में लड़का हो तो उसे चाहिए कि अपना हाथ औ़रत के पेट पर रख कर कहे اِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمَّيْتُهٗ مُحَمَّدًا या'नी अगर येह लड़का हुवा तो मैं ने इस का नाम **मुह़म्मद** रखा ।” اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ लड़का होगा ।

(फ़तावा रज़विय्या, 24/690)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे अदबी न होने पाए

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : **मुहम्मद** बहुत प्यारा नाम है, इस नाम की बड़ी ता'रीफ़ ह़दीसों में आई है। अगर तसग़ीर (या'नी नाम बिगड़ने) का अन्देशा न हो तो येह नाम रखा जाए और एक सूरत येह है कि अ़क़ीक़े का नाम येह हो और पुकारने के लिये कोई दूसरा नाम तजवीज़ कर लिया जाए(1) और हिन्दुस्तान (पाक व हिन्द) में ऐसा बहुत होता है कि एक शख़्स के कई नाम होते हैं इस सूरत में नाम की बरकत भी होगी और तसग़ीर से भी बच जाएंगे। (बहारे शरीअ़त, 3/356)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का त़रीक़ए कार

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : फ़क़ीर غفراللہ تعالٰی ने अपने सब बेटों भतीजों का अ़क़ीक़े में सिर्फ़ **मुहम्मद** नाम रखा फिर नामे अक़्दस के हिफ़्ज़े आदाब और बाहम तमीज़ (या'नी पहचान) के लिये उ़र्फ़ जुदा मुक़र्रर किये। (फ़तावा रज़विय्या, 24/689)

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत की अदा

जब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से किसी का नाम रखने की दरख़्वास्त की जाती है तो

---

1 ....मसलन : **बिलाल रज़ा, हिलाल रज़ा** वग़ैरा

www.dawateislami.net

उ़मूमन आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस बच्चे का नाम **मुह़म्मद** और पुकारने के लिये उ़र्फ़ मसलन रजब रज़ा रखते हैं। नाम के साथ रज़ा का इज़ाफ़ा, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की निस्बत से करते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1000 डॉलर इन्आ़म

एक अख़्बारी इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ नामे "**मुह़म्मद**" के क़द्रदान एक मुसलमान हुक्मरान ने ए'लान किया है कि जो लोग अपने नौ मौलूद बच्चों के नाम नबिये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे नामी "**मुह़म्मद**" के नाम पर रखेंगे उन्हें एक हज़ार डॉलर का हदिय्या पेश किया जाएगा। जश्ने विलादते नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मौक़अ़ पर किये जाने वाले ए'लान में मुसलमान हुक्मरान ने कहा है कि एक हज़ार डॉलर का हदिय्या वालिदा की त़रफ़ से पेश किया जाएगा क्यूंकि येह ख़याल बुन्यादी त़ौर पर वालिदा ने ही पेश किया है। ए'लान में येह भी कहा गया है कि जो वालिदैन अपनी बेटियों के नाम उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के नामों पर रखेंगे उन को भी एक हज़ार डॉलर हदिय्या पेश किया जाएगा। इस ए'लान पर उस मुल्क में रहने वाले मुसलमान ख़ानदानों में ख़ुशगवार रद्दे अ़मल सामने आया है।

(जंग उर्दू ऑन लाइन 16 जन्वरी 2014 ब तसर्रुफ़ क़लील)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पुकारा जाने वाला नाम रखने की एक अहम एहतियात

ख़याल रहे कि पुकारने के लिये नाम ऐसा रखा जाए जिसे **मुहम्मद** के साथ मिला कर बोलने में बे अदबी वग़ैरा न हो, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़क़ीर कभी जाइज़ नहीं रखता कि कल्बे अ़ली (अ़ली का कुत्ता), कल्बे हुसैन, कल्बे हसन, ग़ुलामे अ़ली, ग़ुलामे हुसैन, ग़ुलामे हसन, निसार हुसैन (हुसैन पर निसार होने वाला), फ़िदा हुसैन (हुसैन पर फ़िदा होने वाला)क़ुरबान हुसैन, ग़ुलामे जीलानी (जीलानी का ग़ुलाम) وَاَمثال ذٰلک के अस्मा (या'नी इसी त़रह़ के दूसरे नामों) के साथ नामे पाक (या'नी मुह़म्मद) मिला कर कहा जाए, اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا حُسْنَ الْاَدَبِ وَنَجِّنَا مِنْ مُوْرِثَاتِ الْغَضَبِ اٰمین (ऐ **अल्लाह** ! हमें हुस्ने अदब से नवाज़ और अस्बाबे ग़ज़ब से बचा । आमीन । ت)

(फ़तावा रज़विय्या, 24/683)

मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इस्लाह़ फ़रमाई

सिराजुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलामे आसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : मैं ने अपने नाम के शुरूअ़ में बरकत के लिये लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" शामिल कर लिया था । इस पर शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़म मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने तम्बीह फ़रमाई कि यहां इस्मे रिसालत (या'नी **मुह़म्मद**) नहीं होना चाहिए । मैं ने फ़ौरन अ़र्ज़ किया कि, हुज़ूर फिर "मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़य्य" का क्या हुक्म होगा ? इस के जवाब में ह़ज़रत ने फ़रमाया : कुजा अ़ब्दुल ह़य्य व

www.dawateislami.net

कुजा ग़ुलामे आसी (या'नी कहां अ़ब्दुल ह़य्य और कहां ग़ुलामे आसी) ? अ़ल्लामा फ़रमाते हैं : "येह जवाब सुन कर मैं ह़ैरत ज़दा रह गया और ह़ज़रत के तफ़क़्क़ोह फ़िद्दीन की अ़ज़मत दिल में ख़ूब ख़ूब रच बस गई।"

ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने अपने इरशाद से येह रहनुमाई फ़रमाई है कि जिस नाम के शुरूअ़ में लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" लाया जाए, अगर उस नाम का इत़्लाक़ लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" पर दुरुस्त हो तो वहां लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" लाना दुरुस्त होगा (जैसे मुह़म्मद सादिक़) और अगर नाम का इत़्लाक़ लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" पर दुरुस्त न हो तो वहां लफ़्ज़ "**मुह़म्मद**" शुरूअ़ में लाना दुरुस्त न होगा (जैसे मुह़म्मद ग़ुलाम हुसैन)। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ब्दुल ह़य्य[1] हैं लिहाज़ा मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़य्य कहना दुरुस्त है लेकिन ग़ुलामे आसी नहीं हैं, इस लिये "मुह़म्मद ग़ुलामे आसी (या'नी "आसी" का ग़ुलाम)" कहना नामुनासिब है। (जहाने मुफ़्तिये आ'ज़म, स. 451)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेटे का नाम मुह़म्मद रखो तो उस की इ़ज़्ज़त करो

जब कोई शख़्स अपने बेटे का नाम **मुह़म्मद** रखे तो उसे चाहिए इस नामे पाक की निस्बत के सबब उस के साथ ह़ुस्ने सुलूक करे और उस की इ़ज़्ज़त करे। मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि नबिये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम

1....या'नी **अल्लाह** के बन्दे हैं क्यूंकि "ह़य्य" **अल्लाह** तआ़ला का सिफ़ाती नाम है

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम बेटे का नाम **मुहम्मद** रखो तो उस की इ़ज़्ज़त करो और मजलिस में उस के लिये जगह कुशादा करो और उस की निस्बत बुराई की त़रफ़ न करो । (الجامع الصغیر، ص۴۹،حدیث:۷۰۶) एक और ह़दीसे पाक में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब लड़के का नाम **मुहम्मद** रखो तो उसे न मारो और न मह़रूम करो ।

(مسند البزار، ۹/ ۳۲۷،حدیث:۳۸۸۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम बदल दिया

एक शख़्स का नाम **मुहम्मद** था ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि एक आदमी उस को गाली दे रहा है, बुला कर कहा कि देखो तुम्हारी वज्ह से **मुहम्मद** को गाली दी जा रही है, अब ता दमे मर्ग (या'नी अपनी मौत तक) तुम इस नाम से पुकारे नहीं जा सकते, चुनान्चे, उसी वक़्त उस का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रख दिया गया । फिर बनू त़ल्ह़ा के पास पैग़ाम भेजा जो लोग इस नाम के हों उन के नाम बदल दिये जाएं । इत्तिफ़ाक़ से वोह लोग सात आदमी थे और उन के सरदार का नाम **मुहम्मद** था । उस ने कहा : ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही ने मेरा नाम **मुहम्मद** रखा है । बोले : अब मेरा इस पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता । (المسند للامام احمد بن حنبل،۶/۲۶۷،حدیث:۱۷۹۱۶ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मैं बे वुज़ू था

सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी ने एक बार अय्याज़ के बेटे को पुकारा : ऐ अय्याज़ के बेटे ! इस्तिन्जे के लिये पानी ला। अय्याज़ ने थोड़े दिनों बा'द अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर ! मुझ से या उस से (या'नी मेरे बेटे से) क्या क़ुसूर हुवा कि आप ने उस का नाम न लिया ? फ़रमाया : तेरे बेटे का नाम **मुह़म्मद** है, मैं उस दिन बे वुज़ू था, मैं ने कभी बिग़ैर वुज़ू **नामे मुह़म्मद** को अपनी ज़बान से अदा न किया।

هزار بار بشَویَم دَهن بَمُشك وگلاب!

هُنوز نامِ تو گُفتَن کمالِ بے ادبی اَسْت

(**या 'नी :** मैं अपने मुंह को हज़ार बार मुश्को गुलाब से धोऊं तब भी आप का नाम लेना बे अदबी है)

(तफ़्सीरे नईमी, 4/221)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐसी सूरत में "मुह़म्मद" पर दुरूदे पाक नहीं लिखा जाएगा

अगर किसी शख़्स का नाम **मुह़म्मद** हो तो बा'ज़ कम इ़ल्म लोग उस का नाम लिखते हुए नाम के साथ दुरूद "صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" लिखते हैं या फिर "ص" या "صلعم" वग़ैरा लिख देते हैं, यहां पर चूंकि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात मुराद नहीं होती इस लिये दुरूदे पाक न लिखा जाए और न ही कोई अ़लामत "ص" या "صلعم" वग़ैरा लिखें बल्कि जहां सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे अक़्दस लिखें तो

www.dawateislami.net

मुकम्मल दुरूद (मसलन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) लिखिये "ﷺ" या "صلعم" वग़ैरा की अ़लामत नामे मुबारक के साथ लिखना भी नाजाइज़ व ह़राम है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1554 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त** (जिल्द 1)" के सफ़ह़ा 77 पर है : नामे पाक लिखे तो उस के बा'द صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखे, बा'ज़ लोग बराहे इख़्तिसार "صلعم" या "ﷺ" लिखते हैं, येह मह्ज़ नाजाइज़ व ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, 1/77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मुह़म्मद नबी, अह़मद नबी" नाम न रखा जाए

मुह़म्मद नबी, अह़मद नबी, मुह़म्मद रसूल, अह़मद रसूल, नबिय्युज़्ज़मान नाम रखना भी नाजाइज़ है, बल्कि बा'ज़ का नाम नबिय्युल्लाह भी सुना गया है, ग़ैरे नबी को नबी कहना हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं हो सकता।

तम्बीह : अगर कोई येह कहे कि नामों में अस्ली मा'ना का लिह़ाज़ नहीं होता, बल्कि यहां तो येह शख़्स मुराद है उस का जवाब येह है कि अगर ऐसा होता तो शैत़ान इब्लीस वग़ैरा इस क़िस्म के नामों से लोग गुरेज़ न करते और नामों में अच्छे और बुरे नामों की दो क़िस्में न होतीं और ह़दीस में न फ़रमाया जाता कि अच्छे नाम रखो, नीज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुरे नामों को बदला न होता कि जब इस अस्ली मा'ना का बिल्कुल लिह़ाज़ नहीं तो बदलने की क्या वज्ह ? (बहारे शरीअ़त, 3/605)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"मुह़म्मद बख़्श, अह़मद बख़्श" नाम रखना जाइज़ है

मुह़म्मद बख़्श, अह़मद बख़्श, नबी बख़्श, पीर बख़्श, अ़ली बख़्श, हुसैन बख़्श और इसी क़िस्म के दूसरे नाम जिन में किसी नबी या वली के नाम के साथ बख़्श का लफ़्ज़ मिला कर नाम रखा गया हो जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, 3/604)

"ग़ुलामे मुह़म्मद, ग़ुलामे सिद्दीक़" नाम रखना जाइज़ है

ग़ुलामे मुह़म्मद, ग़ुलामे सिद्दीक़, ग़ुलामे फ़ारूक़, ग़ुलामे अ़ली, ग़ुलामे ह़सन, ग़ुलामे हुसैन वग़ैरा अस्मा जिन में अम्बिया व सह़ाबा व औलिया के नामों की त़रफ़ ग़ुलाम की इज़ाफ़त कर के नाम रखा जाए येह जाइज़ है इस के अ़दमे जवाज़ की कोई वज्ह नहीं। (बहारे शरीअ़त, 3/604)

"अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा, अ़ब्दुन्नबी" नाम रखना जाइज़ है

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा, अ़ब्दुन्नबी, अ़ब्दुर्रसूल नाम रखना जाइज़ है कि इस निस्बत की शराफ़त मक़्सूद है और उ़बूदिय्यत के ह़क़ीक़ी मा'ना यहां मक़्सूद नहीं है। रही **अ़ब्द** की इज़ाफ़त ग़ैरुल्लाह की त़रफ़ येह क़ुरआनो ह़दीस से साबित है।[1]

(बहारे शरीअ़त, 3/604) इसी त़रह़ अ़ब्दुल जमाल और अ़ब्दुर्रफ़ीक़ नाम रखना भी जाइज़ है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....इस ह़वाले से तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 666 ता 669 और 671 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

"यासीन, ताहा" नाम रखना मन्अ़ है

ताहा, यासीन नाम भी न रखे जाएं कि येह मुक़त्तआ़ते कुरआनिय्या से हैं जिन के मा'ना मा'लूम नहीं ज़ाहिर येह है कि येह अस्माए नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हैं और बा'ज़ उ़लमा ने अस्माए इलाहिय्या से कहा। बहर ह़ाल जब मा'ना मा'लूम नहीं तो हो सकता है कि इस के ऐसे मा'ना हों जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास हों और इन नामों के साथ मुह़म्मद मिला कर "**मुह़म्मद ताहा**", "**मुह़म्मद यासीन**" कहना भी मुमानअ़त को दफ़्अ़ (या'नी दूर) न करेगा।

(बहारे शरीअ़त, 3/605)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ग़फ़ूरुद्दीन" नाम रखना मन्अ़ है

ग़फ़ूरुद्दीन (नाम) भी सख़्त क़बीह़ व शनीअ़ है, ग़फ़ूर के मा'ना मिटाने वाला, छुपाने वाला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़फ़ूरे ज़ुनूब है या'नी अपनी रह़मत से अपने बन्दों के ज़ुनूब (या'नी गुनाह) मिटाता उ़यूब छुपाता है, तो ग़फ़ूरुद्दीन के मा'ना हुए दीन का मिटाने वाला। (फ़तावा रज़विय्या, 24/681)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किसी बुज़ुर्ग को क़य्यूमे ज़मां कहना कैसा?

सुवाल : किसी का नाम अ़ब्दुल क़य्यूम हो उस को **क़य्यूम** कह कर पुकारना कैसा? इसी त़रह़ किसी बुज़ुर्ग को "क़य्यूमे जहां या क़य्यूमे ज़मां" कह सकते हैं या नहीं?

www.dawateislami.net

जवाब : ऐसा कहना **सख़्त हराम** है। बा'ज़ **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़दीक बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मख़्सूस नामों जैसे **क़य्यूम, कुद्दूस या रहमान** कह कर पुकारना **कुफ़्र** है। "क़य्यूमे जहां" या "क़य्यूमे ज़मां" कहने का एक ही हुक्म है। चुनान्चे, मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 15 सफ़ह़ा 280 पर फ़रमाते हैं : **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने "क़य्यूमे जहां" ग़ैरे ख़ुदा को कहने पर **तकफ़ीर** फ़रमाई। मजमउ़ल अन्हुर में है : "अगर कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अस्माए मुख़तस्सा (या'नी मख़्सूस नामों) में से किसी नाम का इत़लाक़ मख़्लूक़ पर करे जैसे इसे (या'नी मख़्लूक़ के किसी फ़र्द को) **कुद्दूस, क़य्यूम** या **रहमान** कहे तो येह **कुफ़्र** हो जाएगा।" (مجمع الانهر، ۲/ ۵۰٤) وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم

आदमी को क़य्यूम, कुद्दूस और रहमान कह कर न पुकारिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" के सफ़ह़ा 591 पर मज़कूरए बाला सुवाल जवाब के बा'द लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सख़्त ताकीद है कि किसी भी शख़्स को **रहमान, क़य्यूम** और **कुद्दूस** वग़ैरा मत कहिये बल्कि आ़दत बनाइये कि जिस का नाम **अल्लाह** के किसी नाम में "अ़ब्द" की इज़ाफ़त के साथ हो मसलन जिन का नाम अ़ब्दुल मजीद या अ़ब्दुल करीम वग़ैरा हो उन को मजीद या करीम कह कर न पुकारें, इस में से "अ़ब्द" ख़ारिज न करें, हां ! ग़ैरे ख़ुदा को "मजीद" या "करीम" कहना **कुफ़्र** नहीं। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 591)

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल क़ादिर को क़ादिर कहना कैसा ?

सुवाल : अ़ब्दुल क़ादिर, अ़ब्दुल क़दीर, अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरा नाम वाले अफ़राद को क़ादिर, क़दीर और रज़्ज़ाक़ कह कर पुकारना कैसा है ?

जवाब : इस त़रह़ के एक सुवाल का जवाब देते हुए शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द** मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ऐसे नामों से लफ़्ज़े अ़ब्द का ह़ज़्फ़ (या'नी अलग कर देना) बहुत बुरा है और कभी नाजाइज़ व गुनाह होता है और कभी सरह़दे कुफ़्र तक भी पहुंचता है। **क़ादिर** का इत़लाक़ तो ग़ैर पर जाइज़ है, इस सूरत में अ़ब्दुल क़ादिर को **क़ादिर** कह कर पुकारना **बुरा** है मगर **क़दीर** का इत़लाक़ ग़ैरे ख़ुदा पर नाजाइज़। كمافِي الْبَيْضاوی (जैसा कि बैज़ावी में है) और अगर किसी का नाम अ़ब्दुल क़ुद्दूस, अ़ब्दुर्रह़मान, अ़ब्दुल क़य्यूम है तो उसे **क़ुद्दूस, रह़मान, क़य्यूम** कहना ऐसा ही है जैसे उसे (कि) जिस का नाम अ़ब्दुल्लाह हो (उस को) "**अल्लाह**" कहना बहुत सख़्त बात है। وَالْعِيَاذُبِاللّٰه تَعَالٰی जिस का नाम अ़ब्दुल क़ादिर हो उसे भी अ़ब्दुल क़ादिर ही कहा जाए, जिस का अ़ब्दुल क़दीर उसे अ़ब्दुल क़दीर ही कहना ज़रूर है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ को अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, अ़ब्दुल मुक़्तदिर को अ़ब्दुल मुक़्तदिर। ग़ैर पर इत़लाक़े क़दीर व मुक़्तदिर (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी ग़ैर को क़दीर और मुक़्तदिर कह सकते हैं या नहीं इस मस्अले) में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है।

كَمَافِي غَايَةِ الْقَاضى حاشيه شَرحُ الْبَيْضاوى (फ़तावा मुस्त़फ़विय्या, स. 89-90)

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 593)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"अ़ब्दुल क़य्यूम" नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा अ़ब्दुल क़य्यूम अज़्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आक़ा अबू राशिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बनू अज़्द के वफ़्द के हमराह नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए, बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू राशिद से पूछा : तुम्हारा नाम क्या है ? बोले : अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा अबू मुग़विय्या । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम "अ़ब्दुर्रह़मान अ़बू राशिद" हो । फिर इरशाद फ़रमाया : येह तुम्हारे साथ कौन है ? अ़र्ज़ की : मेरा गुलाम । फ़रमाया : इस का नाम क्या है ? अ़र्ज़ किया : क़य्यूम (हमेशा क़ाइम रहने वाला) । इरशाद फ़रमाया : "येह अ़ब्दुल क़य्यूम (हमेशा क़ाइम रहने वाले का बन्दा) है ।" (اسد الغابة،٣/٥٢٥،رقم:٣٤٢١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन से नाम रखवाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन से बच्चों का नाम रखवाना बाइ़से ख़ैरो बरकत होता है, **दौरे रिसालत** सरापा बरकत में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का मा'मूल था कि जब उन के घर कोई बच्चा पैदा होता तो येह उसे रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के लिये दुआ़ करते, नाम रखते और बसा अवक़ात उसे घुट्टी भी देते, चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

से रिवायत है कि लोग अपने बच्चों को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में लाया करते थे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाते और **तहनीक** फ़रमाया (या'नी घुट्टी दिया) करते थे।

(مسلم،کتاب الادب ،باب استحباب تحنيك ،ص١١٨٤،حديث:٢١٤٧)

ऐसी ही चन्द रिवायात मुलाहज़ा हों :

﴾1﴿ बच्चे का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि जब ह़ज़रते अबू त़लह़ा अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) पैदा हुए तो मैं उसे ले कर ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा, उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चादर ओढ़े हुए अपने ऊंट को रोग़न मल रहे थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास खजूरें हैं? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। फिर मैं ने कुछ खजूरें निकाल कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कीं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह खजूरें अपने मुबारक मुंह में डाल कर चबाईं और बच्चे का मुंह खोल कर उस के मुंह में डाल दीं, वोह बच्चा उसे चूसने लगा। फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अन्सार को खजूरों के साथ मह़ब्बत है।" और उस बच्चे का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

(مسلم:کتاب الادب،باب استحباب تحنيك المولود....الخ،ص ١١٨٣ ،حديث: ٢١٤٤)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ "इब्राहीम" नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मेरे हां लड़का पैदा हुवा, मैं उस को ले कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम "इब्राहीम" रखा और उसे खजूर से घुट्टी दी।

(مسلم،کتاب الادب،باب استحباب تحنیك المولود....الخ،ص ١١٨٤،حدیث: ٢١٤٥)

﴾3﴿ "अ़ब्दुल मलिक" नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना नुबैत़ बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां बच्चा पैदा हुवा। वोह उसे ले कर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप इस का नाम रखें।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम अ़ब्दुल मलिक रखा और उस के लिये बरकत की दुआ़ की।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد،٨/٣٢٥،رقم:٤٥٨٥)

﴾4﴿ "सिनान" नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहमान सिनान बिन सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ग़ज़वए हुनैन के दिन पैदा हुवा, मेरे वालिद को मेरी विलादत की ख़ुश ख़बरी सुनाई गई तो उन्हों ने कहा : महबूबे

www.dawateislami.net

रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिफ़ाअ़ में तीर चलाना मुझे बेटे की ख़ुश ख़बरी से ज़ियादा महबूब है।

(مسند امام احمد بن حنبل،۷/۲٤٦،حدیث:۲۰۰۹۳)

फिर मेरे वालिद मुझे जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लाए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे घुट्टी दी, मेरे मुंह में लुआ़बे दहन डाला, मेरे लिये दुआ़ की और मेरा नाम "सिनान (या'नी नेज़े की नोक)" रखा। (الاستیعاب، ۲/۲۱۷،رقم:۱۰۷٦)

﴿5﴾ "मुसरिअ़" नाम रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसरिअ़ बिन यासिर जुहनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना यासिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को किसी सरिय्या [1] में भेजा गया, उसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना मुसरिअ़ की विलादत हुई, उन की वालिदा बच्चे को नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाईं और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे हां बच्चा पैदा हुवा है और इस के वालिद लश्कर के साथ हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस का नाम रखें, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चे को लिया, उस पर हाथ फेरा और दुआ़ दी : ऐ **अल्लाह** ! इन के मर्दों को कसरत

---

1 ... वोह जंगी लश्कर जिस में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस शामिल हुए उसे "ग़ज़वा" और जिस में लश्कर रवाना फ़रमाया मगर ख़ुद शामिल न हुए उसे "सरिय्या" कहते हैं। (सीरते रसूले अ़रबी, स. 127 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

अ़ता फ़रमा, इन के गुनाहों को कमतर फ़रमा, इन को किसी का मोह़ताज न कर, फिर इरशाद फ़रमाया : मैं ने इस का नाम मुसरिअ़ (जल्दी करने वाला) रखा है इस ने इस्लाम में जल्दी की है।

(اسدالغابة،٥/١٦٤،رقم:٤٨٦١ والاصابة،٦/٥٠١،رقم:٩٢٣١)

﴾6﴿ "यह़या" नाम रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हद में हुई, नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर चबा कर घुट्टी दी और फ़रमाया : मैं इस का वोह नाम रखूंगा जो ह़ज़रते यह़या बिन ज़करिय्या (عَلَیْہِمَا السَّلَام) के बा'द किसी का नहीं रखा गया, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम **यह़या** रखा।

(اسدالغابة،٥/٤٨٦،رقم:٥٥٠٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या عَلَیْہِ السَّلَام का नाम किस ने रखा?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़िब्लए अव्वल में दुआ करने वाले अ़ज़ीमुल क़द्र उ़म्र रसीदा पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शते हुए न सिर्फ़ इन को बेटे की बिशारत दी बल्कि इन का नाम यह़या عَلَیْہِ السَّلَام भी ख़ुद अ़ता फ़रमाया और इरशाद हुवा :

www.dawateislami.net

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اِسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ (پ١٦،مریم:٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ज़करिय्या हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिन का नाम यह्या है इस के पहले हम ने इस नाम का कोई न किया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿7﴾ "मरयम" नाम अ़ता फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज रात मेरे हां बच्ची की विलादत हुई है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर सूरए मरयम नाज़िल हुई है, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी बेटी का नाम मरयम रख दिया और मेरी कुन्यत "अबू मरयम" रखी।

(اسدالغابة،٦/٣٠٠،رقم:٦٢٤٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पीरख़ाने से नाम अ़ता हुवा

आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के घर जब आप के छोटे शहज़ादे मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान (मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की विलादत हुई तो आप उस वक़्त अपने मुर्शिद ख़ाने में थे। ह़ज़रते अबुल हुसैन नूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने आप को पैदाइशे फ़रज़न्द की

www.dawateislami.net

मुबारक बाद दी और फ़रमाया : आप बरेली तशरीफ़ ले जाएं। और "अबू बरकात मुह़युद्दीन जीलानी" नाम तजवीज़ फ़रमाया। कुछ दिन बा'द ह़ज़रते नूरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बरेली तशरीफ़ लाए तो शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत को आग़ोशे नूरी में डाल दिया गया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी अंगुश्ते मुबारक मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुंह में रख कर क़ादिरी व बरकाती बरकात से ऐसा माला माल कर दिया कि येही शहज़ादे बड़े हो कर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द बने। (तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, 2/447, मुलख़्ख़सन) ह़ज़रते मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द का पैदाइशी और असली नाम **मुह़म्मद** है, वालिदे माजिद आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने उ़र्फ़ी नाम मुस्त़फ़ा रज़ा रखा, येह उ़र्फ़ी नाम इस क़दर मश्हूर हुवा कि ख़ासो आ़म में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इसी नाम से याद किया जाता है। (जहाने मुफ़्तिये आ'ज़म, स. 102)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लोगों के बुरे नाम रखना

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 204 पर लिखते हैं : किसी मुसलमान बल्कि काफ़िरे ज़िम्मी[1] को भी बिला ह़ाजते शरइय्या ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना या ता'बीर करना जिस से उस की दिल शिकनी हो उसे ईज़ा पहुंचे, शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है। अगर्चे बात फ़ी नफ़्सिही सच्ची हो,

1 .....अब दुन्या में तमाम काफ़िर ह़र्बी हैं। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 242)

www.dawateislami.net

فَاِنَّ کُلَّ حَقٍّ صِدْقٌ وَلَیْسَ کُلُّ صِدْقٍ حَقًّا (हर हक़ सच है मगर हर सच हक़ नहीं) (फ़तावा रज़विय्या, 23/204) लिहाज़ा जिस का जो नाम हो उस को उसी नाम से पुकारना चाहिए, अपनी त़रफ़ से किसी का उल्टा सीधा नाम मसलन लम्बू, ठिंगू, कालू वग़ैरा न रखा जाए, उ़मूमन इस त़रह़ के नामों से दिल आज़ारी होती है और वोह इस से चिड़ता भी है लेकिन पुकारने वाला जान बूझ कर बार बार मज़ा लेने के लिये उसे इसी नाम से पुकारता है, ऐसा करने वालों को संभल जाना चाहिए क्यूंकि रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ ۚ (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : (या'नी वोह नाम) जो उन्हें नागवार मा'लूम हों। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा इस बुराई से आ़र दिलाना भी इस नह्य (या'नी मुमानअ़त के हुक्म) में दाख़िल और ममनूअ़ है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुवर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उस को नागवार हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों ममनूअ़ नहीं जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब अ़तीक़ (जहन्नम से आज़ाद) और ह़ज़रते उ़मर का फ़ारूक़ (ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ करने वाला) और ह़ज़रते उ़समाने ग़नी का ज़ुन्नूरैन (दो

www.dawateislami.net

नूरों वाला) और हज़रते अ़ली का अबू तुराब (मिट्टी वाला) और हज़रते ख़ालिद का सैफुल्लाह (अल्लाह की तल्वार) और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम (या'नी नाम के मर्तबे में) हो गए और साहिबे अल्क़ाब को नागवार नहीं वोह अल्क़ाब भी ममनूअ़ नहीं जैसे कि आ'मश (कमज़ोर निगाह वाला), आ'रज (लंगड़ा) । (''क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना'' के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल लिखते हैं) तो ऐ मुसलमानो ! किसी मुसलमान की हंसी बना कर या उस को ऐ़ब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 950)

फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं

हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी शख़्स को उस के नाम के इलावा नाम से बुलाया उस पर फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं । (جمع الجوامع،۲۳/۷،حدیث:۲۰۶۱۲) या'नी किसी बुरे लक़ब से जो उसे बुरा लगे, न कि ऐ बन्दए ख़ुदा ! वग़ैरा से ।

(التیسیر شرح الجامع الصغیر، حرف المیم، تحت الحدیث:۲۰۶۱۲، ۴۱۶/۲)

किसी को बे वुक़ूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** हुवा : जो शख़्स किसी आ़लिम की निस्बत या किसी दूसरे की लफ़्ज़ मरदूद कहे या

www.dawateislami.net

यूं कहे कि वोह "बे वुक़ूफ़" है, कुछ नहीं जानता और "उल्लू" है, तो उस शख़्स की निस्बत शरअ़ शरीफ़ क्या हुक्म देगी ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **जवाब** दिया : बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को ऐसे अल्फ़ाज़ से याद करना मुसलमान को नाह़क़ ईज़ा देना है और मुसलमान की नाह़क़ ईज़ा शरअ़न ह़राम । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللہ

(رَوَاہُ الطَّبَرَانِیْ فِی الْاَوْسَطِ عَنْ اَنَسٍ رضی اللہ تعالٰی عنہ بِسَنَدٍ حَسَنٍ)

जिस ने बिला वजहे शरई किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे इज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी । (المعجم الاوسط، ٢/٣٨٧،حديث:٣٦٠٧) फिर उ़लमाए दीने मतीन की शान तो निहायत अरफ़अ़ो आ'ला है उन की जनाब में गुस्ताख़ी करने वाले को ह़दीस में मुनाफ़िक़ फ़रमाया :

ثَلٰثَۃٌ لَایَسْتَخِفُّ بِحَقِّھِمْ اِلَّامُنَافِقٌ ذُوالشَّیْبَۃِ فِی الْاِسْلَامِ وَذُوالْعِلْمِ وَاِمَامٌ مُّقْسِطٌ رَوَاہُ الطَّبَرَانِیْ فِی الْکَبِیْرِعَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ وَاَبُوالشَّیْخِ فِی التَّوْبِیْخِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللہ رضی اللہ تعالٰی عنھم عَنِ النَّبِی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तीन शख़्स हैं जिन का ह़क़ हलका न जानेगा मगर मुनाफ़िक़, (एक) इस्लाम में बुढ़ापे वाला (दूसरा) आ़लिम (तीसरा) बादशाहे इस्लाम आ़दिल । (المعجم الكبير، ٨/٢٠٢، حديث:٧٨١٩) ऐसा शख़्स शरअ़न लाइक़े ता'ज़ीर है । (फ़तावा रज़विय्या, 13/644) وَاللہُ سُبْحٰنَہٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ وَعِلْمُہٗ جَلَّ مَجْدُہٗ اَتَمُّ وَاَحْکَم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

महब्बत भरे नाम से पुकारना

बसा अवक़ात हमारे मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان या अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के नामों को मुख़्तसर या तसग़ीर (छोटे) कर के महब्बत भरे अन्दाज़ से पुकारते, इस की चन्द मिसालें मुलाहज़ा फ़रमाएं :

❁ हज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को या उ़सैम (مسنداحمد،١٠/١٠١، حديث:٢٦١٩٠) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को या उनैस (مسلم، ص١٢٦٤،حديث:٢٣٠٩) और या ज़ल उज़ुनैन (ऐ दो कानों वाले) (ترمذی، ٣/٣٩٩، حديث:١٩٩٨) ❁ हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को या जुवैबर (جمع الجوامع،١٤/٢٠٨،حديث:١٠١٨٩) और या जुबैर (جمع الجوامع،١٤/٢٠٩،حديث:١٠٢٠٠) ❁ हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को या क़ुदैम (ابی داوٗد، ٣/١٨٣، حديث:٢٩٣٣) ❁ हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को या आ़इश (بخاری، ٢/٥٥١،حديث:٣٧٦٨) और **शुक़ैरा** (गहरे भूरे रंग वाली) (جمع الجوامع،٣/١٣٥، حديث:٧٨٢٣) और **हुमैरा** (सुर्ख़ रंग वाली) (الطبقات ابن سعد،٨/٦٣-٦٤،رقم:٤١٢٨) और या उ़वैश ! (جمع الجوامع،٥/٤٤٥،حديث:١٦٣٨٠) ❁ हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को या ज़ुवैनब (جمع الجوامع،٥/٤٨٩، حديث:١٦٨٣٥) कह कर पुकारा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेहन में रहे कि हमें इस सिलसिले में बहुत एह्तियात़ की ज़रूरत है कि कहीं वोह नाम जिसे हम महब्बत भरा समझ रहे हों सामने वाले को पसन्द न हो मगर वोह अदब व मुरव्वत की वज्ह से कुछ कहने की हिम्मत न रखता हो और

www.dawateislami.net

बसा अवक़ात हमारा अन्दाज़ दिल आज़ारी का भी सबब बन सकता है लिहाज़ा एह़तियात़ का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तुम "सफ़ीना" हो

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं एक सफ़र में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से जब कोई थकता अपनी तल्वार, ढाल और तीर मुझ पर डाल देता यहां तक कि मुझ पर बहुत सा सामान जम्अ़ हो गया, राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो इरशाद फ़रमाया : तुम सफ़ीना (जहाज़) हो। उस रोज़ अगर मैं एक, दो, तीन, चार, पांच, छे, सात ऊंटों का बोझ भी उठा लेता तो मुझ पर भारी न होता। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से आप का नाम पूछा जाता तो कहते : मैं बिल्कुल नहीं बताऊंगा, मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा लक़ब सफ़ीना रखा है।

(مسند امام احمد، مسند الانصار حدیث ابی عبدالرحمن سفینة، ۸/۲۱۵، حدیث: ۲۱۹۸٤-۲۱۹۸۷ ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लक़ब किसे कहते हैं ?

नाम के इ़लावा ऐसे लफ़्ज़ से किसी को पुकारना लक़ब कहलाता है जिस में ता'रीफ़ व बुराई का कोई ख़ास मा'ना हो। (التعریفات للجرجانی، ص۱۳٦) येह उ़मूमन अह्ले मह़ब्बत या दुश्मनों की त़रफ़ से दिया जाता है, ख़ुद नहीं रखा जाता।

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अल्क़ाबात इसी किताब के सफ़हा **166** पर मौजूद हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तख़ल्लुस की ता'रीफ़

शाइ़र का वोह मुख़्तसर नाम तख़ल्लुस कहलाता है जो अश्आ़र में इस्ति'माल होता है, येह उ़मूमन कलाम के आख़िरी शे'र में आता है।

12 अकाबिरीने अह्ले सुन्नत के तख़ल्लुस

इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह्मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	रज़ा
उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	ह़सन
ह़ज़रते मौलाना किफ़ायतुल्लाह काफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی	काफ़ी
आ'ला ह़ज़रत के जद्दे अमजद के शागिर्द मौलाना मुह़म्मद ह़सन इ़ल्मी बरेल्वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی	इ़ल्मी
मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	नूरी
हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	ह़ामिद
मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रते मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی	जमील
सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی	नई़म
ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह्मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	सालिक
वालिदे सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुई़नुद्दीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن	नुज़्ह़त
अमीरे अह्ले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه	अ़त्तार
शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی	आ'ज़मी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

महब्बत बढ़ाने का सबब

हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ें तुम्हारे भाई के दिल में तुम्हारी सच्ची महब्बत का बाइस बनेंगी : ﴾1﴿ जब तुम उसे मिलो तो सलाम करो ﴾2﴿ मजलिस में उस के लिये फ़राख़ी और वुस्अ़त पैदा करो, और ﴾3﴿ उसे उस के पसन्दीदा नाम से बुलाओ। (جمع الجوامع،٤/١٤١،حديث:١٠٨١٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छे नाम और कुन्यत से पुकारो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम में जिस त़रह़ एक मुसलमान के लिये नाम की अहम्मिय्यत है और अच्छे नाम रखने का हुक्म दिया गया है इसी त़रह़ कुन्यत भी अहम्मिय्यत की ह़ामिल है और मुसलमान को कुन्यत से पुकारने की तरग़ीब दिलाई गई है, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला बिन ह़िज़्यम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, स़ाह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि किसी शख़्स को उस के मह़बूब नाम और कुन्यत से बुलाया जाए। (جمع الجوامع،١٤/٣٣٨-٣٣٩،حديث:١٠٩٠٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुन्यत किसे कहते हैं ?

اَلْكُنْيَةُ مَا صَدَرَ بِاَبٍ اَوْ بِاُمٍ اَوْ بِابْنٍ اَوْ بِابْنَةٍ कुन्यत से मुराद वोह नाम है जो ''अब, उम, इब्ने या इब्नत'' से शुरूअ़ हो। (التعریفات، ص۱۳۲)

मसलन अबुल क़ासिम, अबू बिलाल, अबू रजब और इब्ने अह़मद वग़ैरा

कुन्यत में "अबू" के मा'ना

मर्द की कुन्यत में ''अबू'' का लफ़्ज़ आता है, अगर्चे ''अब'' का लुग़वी मा'ना बाप है लेकिन कुन्यत में हर जगह ''अबू'' से मुराद बाप नहीं होता, चुनान्चे, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : कुन्यत में ''अबू'' आता है इस के मा'ना हर जगह वालिद नहीं होते हैं बल्कि अक्सर जगह इस के मा'ना होते हैं : ''वाला''। जैसे ''अबू जहल'' जहालत वाला, ''अबू हुरैरा'' या'नी बिल्लियों वाले, ऐसे ही ''अबुल ह़कम'' या'नी फ़ैसला करने वाला, ''अबू बक्र'' के मा'ना हैं अव्वलिय्यत वाले। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/415)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अबू हुरैरा (छोटी बिल्ली वाले)

एक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आस्तीन में छोटी सी बिल्ली मुलाह़ज़ा फ़रमाई तो फ़रमाया : या अबा हुरैरा या'नी ऐ छोटी सी बिल्ली वाले।

(عمدة القاری،کتاب المغازی،قصة دوس والطفیل، ۱۲/۳۵٤،تحت الحدیث:٤۳۹۳)

www.dawateislami.net

तब से इस कुन्यत (या'नी अबू हुरैरा) को इतनी शोहरत मिल गई कि आप का नाम **अ़ब्दुर्रह़मान** लोगों की ग़ालिब अक्सरिय्यत को याद ही नहीं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अबू तुराब (मिट्टी वाले)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के घर तशरीफ़ लाए तो आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को घर में न पाया, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम्हारे चचाज़ाद कहां हैं ? इन्हों ने जवाब दिया : मेरे और उन के दरमियान कुछ इख़्तिलाफ़ हो गया था इस लिये वोह मुझ से नाराज़ हो कर घर से चले गए और मेरे पास क़ैलूला (या'नी दोपहर का आराम) नहीं किया। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से फ़रमाया : जाओ ! देखो वोह कहां हैं ? उस शख़्स ने आ कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! वोह मस्जिद में लैटे हुए हैं। सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी शरीफ़ علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم आराम फ़रमा रहे थे, चादर इन के पहलू से हट गई थी और पहलूए मुबारक पर मिट्टी लग गई थी। सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मिट्टी साफ़ करते हुए फ़रमाने लगे : قُمْ يَا اَبَا تُرَابٍ قُمْ يَا اَبَا تُرَابٍ उठ ऐ ख़ाक वाले ! उठ ऐ ख़ाक वाले ।

(بخاری،کتاب الصلاۃ، باب نوم الرجال فی المسجد، ۱/۱۶۹،حدیث:۴۴۱)

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को तमाम नामों में सब से ज़ियादा महबूब अबू तुराब था और जब इन्हें अबू तुराब कह कर पुकारा जाता तो बहुत ख़ुश होते थे ।

(بخاری،کتاب الادب،باب التکنی بابی تراب وان کانت لہ کنیۃ اخری،۴/۱۵۵،حدیث:۶۲۰۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अबू ज़र (च्यूंटियों वाला)

शारेहे बुख़ारी शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन उ़मर बिन अहमद सफ़ीरी शाफ़ेई (अल मुतवफ़्फ़ा 956 हि.) नक़्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू ज़र इस लिये हुई कि आप के पास रोटी रखी थी कि अचानक उस पर च्यूंटियां नुमूदार हो गईं, आप ने च्यूंटियों समेत रोटी का वज़्न किया तो उस से रोटी के वज़्न में कोई इज़ाफ़ा नहीं हुवा, आप ने इरशाद फ़रमाया : "इन च्यूंटियों को देखो ! दुन्या के तराज़ू में इन का कोई असर ज़ाहिर नहीं हुवा और पलड़ा भारी नहीं हुवा लेकिन आख़िरत का मीज़ान बड़ा होने के बा वुजूद हलका है और एक च्यूंटी की वज्ह से भी वज़्न बढ़ जाता है," उस दिन से आप की कुन्यत अबू ज़र रख दी गई । (شرح البخاری للسفیری،۲/۴۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुन्यत की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम में कुन्यत की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि ۞ सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समेत मुतअ़द्दिद अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कसीर सहाबा व सहाबिय्यात عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ला ता'दाद उ़लमा, फुक़हा, मुह़द्दिसीन और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने कुन्यत को इख़्तियार फ़रमाया। ۞ मज़कूरा शख़्सिय्यात में से कसीर ता'दाद ने न सिर्फ़ एक बल्कि दो और दो से ज़ियादा कुन्यतें भी रखीं। ۞ कई सहाबए किराम, सहाबिय्यात और बुज़ुर्गाने दीन के अस्ल नाम आ़म मुसलमानों को मा'लूम ही नहीं और येह ह़ज़रात नाम के बजाए अपनी कुन्यतों से मश्हूर हैं, मसलन : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़समान), ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (अ़ब्दुर्रह़मान), ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी (ख़ालिद बिन ज़ैद), ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा (नो'मान बिन साबित), ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद (सुलैमान बिन अश्अ़स) वग़ैरा (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखना

अगर्चे मा'रूफ़ येही है कि जिस की अवलाद हो वोही कुन्यत रखता है लेकिन साह़िबे अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखी जा सकती है। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने ऐसे सह़ाबा को भी कुन्यत अ़त़ा फ़रमाई जिन की उस वक़्त अवलाद न थी, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : क्या वजह है कि तुम अपनी कुन्यत "अबू यह़्या" रखते हो जब कि अभी तुम्हारे यहां अवलाद नहीं है ? ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी कुन्यत "अबू यह़्या" रखी है।

(سنن ابن ماجه،كتاب الادب،باب الرجل يكنى قبل ان يولد له،٤/٢٢٠، حديث:٣٧٣٨)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की अवलाद होने से पहले उन की कुन्यत "अबू अ़ब्दिर्रह़मान" रखी।

(عمدة القارى، كتاب البر والصلة،باب الكنية للصبى، ١٥/٣٢٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने बच्चों की कुन्यत रखें

अपने छोटे बच्चों की भी कुन्यत रख देनी चाहिए, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, कहते हैं : بَادِرُوْا بِاَبْنَائِكُمُ الْكُنٰى، لَا تَلْزَمُهَا الْاَلْقَاب या'नी : अपने बच्चों की कुन्यत रखने में जल्दी करो, कहीं उन के (बुरे) अल्क़ाब न पड़ जाएं।

(كنز العمال،كتاب النكاح،الباب السابع، ٨/١٧٦،جزء١٦،حديث:٤٥٢٢٢)

इस रिवायत के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने जो कुछ इरशाद फ़रमाया उस का ख़ुलासा पेश करता हूं : इस रिवायत में इस बात की तरग़ीब दिलाई गई है कि अपने बच्चों के लिये कम उ़म्री में ही कोई अच्छी कुन्यत रख दी जाए। बा'ज़ अवक़ात एक ही नाम कई अफ़राद में मुश्तरक होता है और इस सूरत में लोग ऐसे शख़्स को बुलाने के लिये कोई न कोई लक़ब रख देते हैं जो कि अक्सर बुरा होता है। बच्चे की कुन्यत रखने का फ़ाएदा येह है कि जब वोह बड़ा होगा तो येह कुन्यत उसे बुलाने और पुकारने के लिये इस्ति'माल होगी और कोई इस का बुरा लक़ब नहीं रखेगा।

(فیض القدیر،۳/۲۵۱،تحت الحدیث:۳۱۱۶،ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुन्यत याद करने की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत "अबुल अ़ब्बास" नाम "बल्या", वालिद का नाम "मल्कान" जब कि लक़ब "ख़िज़्र" है जिस के मा'ना हैं सब्ज़ चीज़। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام जहां तशरीफ़ फ़रमा होते वहां आप की बरकत से हरी हरी घास उग जाती थी इस लिये लोग आप को ख़िज़्र कहने लगे।

बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का और उन के वालिद का नाम,

www.dawateislami.net

आप की कुन्यत और लक़ब (या'नी अबुल अ़ब्बास बल्या बिन मल्कान अल ख़िज़्र) याद रखेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा।

(صاوی، ٤/١٢٠٧، پ١٥، الکھف:٦٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुन्यत शरीअ़त के मुताबिक़ होनी चाहिए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! एक मुसलमान के लिये ज़िन्दगी के दीगर मुआ़मलात की त़रह़ कुन्यत रखने में भी शरीअ़त का पास रखना ज़रूरी है क्यूंकि बा'ज़ कुन्यतें ऐसी भी हैं जो शरअ़न ममनूअ़ हैं। जिस त़रह़ हमारे मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत से नाम तब्दील फ़रमाए इसी त़रह़ बा'ज़ कुन्यतों को भी तब्दील किया चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब वोह अपनी क़ौम के हमराह रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप ने लोगों को सुना कि वोह उन्हें अबुल ह़कम कह कर बुलाते हैं। रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें बुला कर इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही ह़कम (या'नी फ़ैसला फ़रमाने वाला) है और ह़ुक्म का इख़्तियार उसी को है, तुम्हारी कुन्यत अबुल ह़कम क्यूं है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : जब मेरी क़ौम के दरमियान किसी मुआ़मले में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो वोह लोग मेरे पास आते हैं और मैं जो फ़ैसला कर दूं वोह उस पर राज़ी हो जाते हैं। सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह बहुत अच्छा है, क्या तुम्हारा

www.dawateislami.net

कोई बेटा है ? अर्ज़ गुज़ार हुए, शुरैह, मुस्लिम और अब्दुल्लाह हैं। इरशाद फ़रमाया : इन में से बड़ा कौन है ? मैं ने अर्ज़ की : शुरैह। फ़रमाया : तो फिर तुम्हारी कुन्यत अबू शुरैह है।

(ابوداود،کتاب الادب، باب فی تغییر الاسم القبیح ٤/٣٧٦،رقم:٤٩٥٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बड़े बेटे या बेटी के नाम पर कुन्यत इख़्तियार करना बेहतर है

शर्हुस्सुन्नह में है : बेहतर येह है कि मर्द अपने बड़े बेटे की निस्बत से कुन्यत रखे, अगर बेटा न हो तो बड़ी बेटी की निस्बत से, यूंही औरत को चाहिए कि अपने बड़े बेटे की मुनासबत से कुन्यत इख़्तियार करे और अगर बेटा न हो तो बड़ी बेटी की निस्बत से। (شرح السنة،کتاب الاستئذان، باب تغییر الاسماء،٦/٣٩٤) छोटे बेटे या बेटी के नाम से कुन्यत इख़्तियार करने में भी हरज नहीं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام की कुन्यत

हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की एक कुन्यत "अबू मुहम्मद" है, इस का सबब बयान करते हुए आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : इमाम क़स्तलानी मवाहिबे लदुन्निया व मिनहे मुहम्मदिय्या में रिसालए मीलाद व इमाम अल्लामा इब्ने तुग़रुबक से नाक़िल, मरवी हुवा : आदम

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : इलाही ! तू ने मेरी कुन्यत अबू मुह़म्मद किस लिये रखी ? हुक्म हुवा : ऐ आदम ! अपना सर उठा। आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सर उठाया सिरा पर्दए अ़र्श में मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर नज़र आया। अ़र्ज़ की : इलाही ! येह नूर क्या है ? फ़रमाया :

هٰذَا نُوْرُ نَبِيٍّ مِّنْ ذُرِّيَّتِكَ اِسْمُهٗ فِى السَّمَاءِ اَحْمَد وَفِى الْاَرْضِ مُحَمَّدٌ لَوْلَاهُ مَاخَلَقْتُكَ وَلَاخَلَقْتُ سَمَاءً وَلَاۤ اَرْضًا

येह नूर एक नबी का है तेरी ज़ुर्रिय्यत या'नी अवलाद से, इस का नाम आस्मान में अह़मद है और ज़मीन में **मुह़म्मद,** अगर वोह न होता मैं तुझे न बनाता, न आस्मानो ज़मीन को पैदा करता।

(المواهب اللدنية، ١/ ٣٥، فتاوىٰ رضويه، ٣٠/ ١٩٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुन्यत अ़ता फ़रमाया करते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस त़रह़ मुतअ़द्दिद मदनी मुन्नों का नाम रखा यूं ही आप ने कई ख़ुश नसीब अफ़राद को कुन्यत भी अ़ता फ़रमाई, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़बीबा बिन्ते असअ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बयान है कि जब मेरे यहां बेटे की विलादत हुई तो उसे सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ले जा कर अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस का नाम रख दीजिये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ल नाम रखा और अबू उमामा कुन्यत अ़ता फ़रमाई।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، ٨/ ٣٢٤ رقم: ٤٥٨٣)

www.dawateislami.net

हज़रते उसमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कुन्यत अ़ता फ़रमाई

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़य्याश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां बच्चे की विलादत हुई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बच्चे का नाम **अ़ब्दुल्लाह** रखा और बच्चे के वालिद हज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत **अबू अ़ब्दुल्लाह** मुक़र्रर फ़रमाई । (اسد الغابة،٣/٣٤١،رقم:٣٠٦٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रत भी अपनी कुन्यत रखे

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने सरताज, मह़बूबे रब्बुल इबाद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सिवा अपनी तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की कुन्यत रखी है । रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम "**उम्मे अ़ब्दुल्लाह**" हो ।

(سنن ابن ماجه،كتاب الادب،باب الرجل يكنى قبل ان يولد له،٤/٢٢١،حديث:٣٧٣٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मदीने के पहले बच्चे के वालिद की कुन्यत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मश्हूर क़दीमुल इस्लाम सहाबी हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे हैं। मरवी है कि हिजरत के बा'द सब से पहले हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) पैदा हुए। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा और ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू अ़ब्दुल्लाह कुन्यत अ़ता फ़रमाई। (الاستعیاب، ۳/۸۹٤، رقم:۱۵۱۹ و الاصابة ٤٠/٦٤، رقم: ٣٦٦٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेटी के नाम पर भी कुन्यत रखी जा सकती है

अगर्चे मा'रूफ़ येही है कि उ़मूमन बेटे के नाम पर कुन्यत रखी जाती है लेकिन अगर कोई बेटी के नाम पर कुन्यत रखना चाहे तो येह न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि ह़दीस से साबित है, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू मरयम (नज़ीर) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं ने नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज रात मेरे हां बच्ची की विलादत हुई है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर सूरए मरयम नाज़िल हुई है, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी बेटी का नाम मरयम रख दिया और मेरी कुन्यत अबू मरयम रखी। (اسد الغابة، ٦/٣٠٠، رقم: ٦٢٤٠)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत और कुन्यत

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ऐसी बुज़ुर्ग हस्ती हैं जो लाखों लाख मुसलमानों के लिये मरजए़ अ़क़ीदत हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी कुन्यत देने की अदाए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदा करते हुए दा'वते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना से फ़ारिग़ुत्तह़सील उन मदनी इस्लामी भाइयों को जिन्हों ने 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कर ली हो, उन को कुन्यतें अ़त़ा फ़रमाते हैं।

इस के इ़लावा भी कसीर इस्लामी भाइयों को अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुन्यतें अ़त़ा कीं जिन में से 76 दर्ज की जा रही हैं :

❁ अबू इख़्लास ❁ अबू इस्माईल ❁ अबू उसैद ❁ अबू इश्फ़ाक़ ❁ अबू अक्बर ❁ अबू अक्मल ❁ अबुल अशराफ़ ❁ अबुल अन्वार ❁ अबुल ईमान ❁ अबुल बिन्तैन ❁ अबुल ह़सन ❁ अबुल ह़सनैन ❁ अबुल ख़ियार ❁ अबुल अ़त़ा ❁ अबुन्नूर ❁ अबुल वफ़ा ❁ अबू इन्आ़म ❁ अबू अन्वारिल मदीना ❁ अबू

www.dawateislami.net

अन्वर ۞ अबू बिलाल ۞ अबू सौबान ۞ अबू जमाल ۞ अबू जुनैद ۞ अबू ह़ाशिर ۞ अबू ह़ामिद ۞ अबू ह़म्माद ۞ अबू ख़लील ۞ अबू राशिद ۞ अबू रिज़ा ۞ अबू रजब ۞ अबू ज़ाहिद ۞ अबू ज़ियाद ۞ अबू साइल ۞ अबू सज्जाद ۞ अबू सईद ۞ अबू सलमान ۞ अबू शाहिद ۞ अबू शराफ़त ۞ अबू शा'बान ۞ अबू शफ़ीक़ ۞ अबू शहीर ۞ अबू साबिर ۞ अबू सादिक़ ۞ अबू सालेह़ ۞ अबू सदाक़त ۞ अबू त़ाहिर ۞ अबू आ़रिफ़ ۞ अबू उ़बैद ۞ अबू अ़तीक़ ۞ अबू उ़ज़ैर ۞ अबू अ़फ़ीफ़ ۞ अबू अ़क़ील ۞ अबू अ़ली ۞ अबू उ़मर ۞ अबू गुफ़रान ۞ अबू फ़राज़ ۞ अबू फ़य्याज़ ۞ अबू करम ۞ अबू कलीम ۞ अबू कुमैल ۞ अबू माजिद ۞ अबू मुबीन ۞ अबू मुह़म्मद ۞ अबू मदनी ۞ अबू मसऊ़द ۞ अबू मन्सूर ۞ अबू मूसा ۞ अबू मीलाद ۞ अबू नासिर ۞ अबू नो'मान ۞ अबू नईम ۞ अबू वाजिद ۞ अबू वासिफ़ ۞ अबू हिलाल ۞ अबू यासिर ۞ अबू यूसुफ़।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुन्यत की सुन्नत को ज़िन्दा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुन्यत रखना सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत है लेकिन फ़ी ज़माना दीगर कई सुन्नतों की त़रह़ येह भी तर्क होती जा रही है ।

www.dawateislami.net

आइये ! अदाए सुन्नत की निय्यत से कुन्यत को इख़्तियार कीजिये । अगर आप साहिबे अवलाद हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को एक से ज़ियादा मदनी मुन्नों या मुन्नियों से नवाज़ा है तो बेहतर येह है कि अपने बड़े बेटे की निस्बत से कुन्यत इख़्तियार करें अगर बेटा न हो तो बेटी की निस्बत से कुन्यत रखें, अवलाद होते हुए किसी और नाम से कुन्यत रखना भी दुरुस्त है और अगर आप शादी शुदा या साहिबे अवलाद नहीं तो भी कुन्यत रखी जा सकती है जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की कुन्यतें इसी किताब के सफ़हा **157** पर मौजूद हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जब किसी का नाम याद न हो तो कैसे पुकारते?

ह़ज़रते सय्यिदुना जारिया अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब किसी का नाम याद न होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे "या इब्ने अ़ब्दिल्लाह या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह के बेटे !" कह कर बुलाते थे।

(جمع الجوامع،۵/۴۴۹،حدیث:۱۶۴۱۸)

इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : जिस का नाम मा'लूम न हो उस को ऐसे लफ़्ज़ से पुकारना चाहिए जिस से उसे

www.dawateislami.net

अज़िय्यत न हो, इस में झूट न हो और न ही ख़ुशामद मसलन : ऐ भाई, ऐ मेरे सरदार, ऐ फ़ुलां, ऐ फ़ुलां कपड़े वाले, ऐ फ़ुलां जूती वाले, ऐ घोड़े वाले, ऐ ऊंट वाले, ऐ तल्वार वाले, नेज़े वाले वग़ैरा ऐसे अल्फ़ाज़ जो पुकारने वाले और पुकारे जाने वाले दोनों के हस्बे हाल हों।

(الاذکار، کتاب الاسماء، باب نداء من لا یعرف اسمه، ص ۲۳۱ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पुकारने और ज़िक्र करने का अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान चाहे वोह हम से बड़े हों या छोटे, उन को पुकारने, ज़िक्र करने में उन के मक़ाम व मर्तबे का ख़याल रखा जाए और इसी मुनासबत से अल्फ़ाज़ और अल्क़ाब का इन्तिख़ाब किया जाए। सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : فَلَیْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ یَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَلَمْ یُوَقِّرْ کَبِیْرَنَا जो हमारे छोटे पर शफ़्क़त न करे और हमारे बड़े की ता'ज़ीम न करे तो वोह हम में से नहीं।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة الصبیان، ۳/۳۶۹، حدیث: ۱۹۲۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : या'नी हमारी जमाअ़त से या हमारे त़रीक़े वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार हैं वोह हमारे मक़्बूल लोगों में से नहीं, येह मत़लब नहीं कि वोह हमारी

www.dawateislami.net

उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफ़िर नहीं होता। (मिरआतुल मनाजीह, 6/560)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत में मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त पाने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एह़तिराम और ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे।

(شعب الایمان،باب فی رحم الصغیر،۷/۴۵۸،حدیث:۱۰۹۸۱)

एक मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी में जिन शख़्सिय्यात का ज़िक्र करने और पुकारने की ज़रूरत पड़ती है उन को 11 हिस्सों में तक़्सीम किया जा सकता है : (1) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (2) दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (3) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان (4) बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى (5) उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम (6) दीनी असातिज़ा (7) सादाते किराम (8) बूढ़े इस्लामी भाई (9) मां-बाप (10) रिश्तेदार (11) हम उ़म्र इस्लामी भाई।

इन सब को पुकारने की तफ़्सील येह है :

(1) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारने, उन का ज़िक्र करने का अदब हमें क़ुरआने

www.dawateislami.net

मजीद से सीखने को मिलता है चुनान्चे, पारह 18 सूरए नूर की आयत 33 में इरशाद होता है :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَیْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (پ۱۸، النور:٦٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा करे तो अदबो तकरीम और तौक़ीर व ता'ज़ीम के साथ आप के मुअ़ज़्ज़म अल्क़ाब से नर्म आवाज़ के साथ मुतवाज़ेआ़ना व मुन्कसिराना (या'नी आ़जीज़ी भरे) लहजे में "या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या ह़बीबल्लाह" कह कर। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 667)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का पुकारने का अन्दाज़

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जब रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हम कलाम होते तो यूं अ़र्ज़ किया करते :

❁ فِدَاكَ اَبِىْ وَ اُمِّىْ (मेरे मां-बाप आप पर कुरबान)

(شعب الایمان،باب فی الزهد وقصر الامل، ۳۰۳/۷، رقم:۱۰۳۸۸)

www.dawateislami.net

۞ بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ (या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों)

(بخاری، کتاب الصوم باب الریان للصائمین، ۱/۶۲۵، رقم:۱۸۹۷)

۞ नीज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुकार के जवाब में لَبَّیْکَ وَ سَعْدَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَ اَنَا فِدَاؤُکَ (या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर कुरबान जाऊं मैं ख़िदमत में हाज़िर हूं)

(شعب الایمان،باب فی مقاربۃ والموادۃ، ۶/۴۵۸، رقم:۸۸۹۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रसूलल्लाह क्यूं न कहा ?

सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان न सिर्फ़ ख़ुद सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निहायत अदब से पुकारा करते थे बल्कि उन्हें येह भी गवारा न था कि कोई उन के सामने सिर्फ़ नाम ले कर हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निदा करे, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : उ़लमाए यहूद में से एक शख़्स सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مُحَمَّد मैं ने उस को ज़ोर का धक्का दिया जिस से वोह गिरते गिरते बचा, कहने लगा : तुम ने मुझे धक्का क्यूं दिया है ? मैं ने कहा : इस लिये कि तुम ने **या रसूलल्लाह** नहीं कहा।

(مسلم،کتاب الحیض،باب بیان صفۃ منی الرجل والمرأۃ،ص۱۷۶،رقم:۳۱۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आ'ला हज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अन्दाज़

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने एक सुवाल का जवाब देते हुए नबिये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अल्क़ाबात यूं लिखे :

حضورِ اقدس قاسِمُ النِّعَم، مالِکُ الْاَرْض ورِقَابِ الْاُمَم،مُعْطِی، مُنْعِم، قُثَم، قَیِّم، وَلِی، وَالِی، عَلِی، عَالِی، کاشِفُ الْکَرْب، رَافِعُ الرُّتَب، مُعِیْن کافِی، حَفِیْظٌ وَافِی، شَفِیْع شَافِی، عَفُوّ عَافِی، غَفُور جَمِیْل، عَزِیز جَلِیل، وَهَّاب کریم، غَنِی عظیم، خَلِیفۂ مُطْلَق حَضْرَتِ رَبّ، مَالِکُ النَّاسِ ودَیَّانُ الْعَرَب، وَلِیُّ الْفَضْل جَلِی الْاِفْضَال، رَفِیْعُ الْمِثْل، مُمْتَنِعُ الْاَمْثَال صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم وآلہ وصحبہ

(फ़तावा रज़विय्या, 14/626)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मा'मूल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज़किरा करते हैं तो एक एक लफ़्ज़ से अदबो एह़तिराम झलकता है, आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ उ़मूमन हम क़ाफ़िया अल्क़ाबात के साथ प्यारे प्यारे मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे मुबारक करते हैं, मसलन : ۞ सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ۞ **सरवरे काइनात,** शाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल

www.dawateislami.net

अर्ज़े वस्समावात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ❁ **सरकारे दो आ़लम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ❁ रसूले बे मिसाल, साह़िबे जूदो नवाल, ह़बीबे रब्बे ज़ुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ❁ रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ❁ सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पुकारना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सब से अफ़्ज़ल हैं ह़त्ता कि जो किसी ग़ैरे नबी को किसी नबी से अफ़्ज़ल या बराबर बताए, काफ़िर है । (बहारे शरीअ़त, 1/47) अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का तज़्किरा करते हुए भी अदबो एह़तिराम का ख़याल रखना इन्तिहाई ज़रूरी है, मसलन नाम ज़िक्र करने से पहले "ह़ज़रते सय्यिदुना" जब कि नाम के बा'द عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (या'नी हमारे नबी पर और इन पर दुरूद और सलाम हों) कहना और लिखना चाहिए। मुख़्तलिफ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जो ख़ास अल्क़ाबात हैं उन के नामों के साथ वोह अल्क़ाब ज़िक्र करना भी मुनासिब है, मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माई़ल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब एक नबी का ज़िक्र हो तो عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, दो का ज़िक्र हो तो علی نبینا وعلیھما الصلوٰۃ والسلام और दो से ज़ियादा का ज़िक्रे ख़ैर हो तो عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कहना और लिखना चाहिए।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को पुकारना

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बा'द मलाइकए मुर्सलीन और सादात फ़िरिश्तगाने मुक़र्रबीन और उन के बा'द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बहुत बुलन्द मर्तबे के ह़ामिल हैं और कोई वली चाहे कितने ही बुलन्द मक़ाम तक क्यूं न पहुंच जाए लेकिन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का हम मर्तबा हरगिज़ नहीं हो सकता। (फ़तावा रज़विय्या, **23/354-357**)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है :

لَا تَسُبُّوا اَصْحَابِی فَلَوْ اَنَّ اَحَدَکُمْ اَنْفَقَ مِثْلَ اُحُدٍ ذَھَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ اَحَدِھِمْ وَلَا نَصِیفَہ

मेरे सह़ाबा को बुरा न कहो, अगर तुम में से कोई शख़्स उ़ह़ुद पहाड़ जितना सोना ख़र्च करे तो भी उन के ख़र्च किये हुए एक मुद या निस्फ़ मुद के बराबर नहीं पहुंचेगा।

(بخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی،باب قول النبی"لو کنت متخذا خلیلا"، ۲/۵۲۲،حدیث:۳۶۷۳)

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुबारक नाम से पहले "ह़ज़रते सय्यिदुना" और अगर सह़ाबिय्या हों तो "ह़ज़रते सय्यिदतुना" जब कि

www.dawateislami.net

नाम के बा'द ता'दाद और जिन्स की मुनासबत से दुआ़इय्या कलिमात का इस्ति'माल करना चाहिए, चुनान्चे, मर्द सह़ाबी एक हों तो رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, दो हों तो رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब कि दो से ज़ियादा होने की सूरत में رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, ख़ातून सह़ाबिय्या एक हों तो رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दो हों तो رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब कि दो से ज़ियादा के लिये رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ कहना और लिखना चाहिए।

मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के नामों के साथ मख़्सूस अल्क़ाबात व ख़िता़बात का इस्ति'माल भी ऐन सआ़दत है मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ज़ुन्नूरैन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के लिये शेरे ख़ुदा, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये सैफ़ुल्लाह वग़ैरा।

अगर्चे हमारे मुआ़शरे में उ़मूमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्ति'माल सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये होता है जब कि अइम्मा व औलिया के लिये رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस्ति'माल किया जाता है लेकिन याद रखिये कि शरई ए'तिबार से رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्ति'माल सह़ाबी व ग़ैरे सह़ाबी दोनों के लिये जाइज़ है।

(मज़ीद तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा रज़विय्या, 23/390)

﴿4﴾ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی को पुकारना

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के ज़िक्र में भी अदबो एह़तिराम का लिह़ाज़ रखना ज़रूरी है चाहे वोह ह़याते ज़ाहिरी से मुत्तसिफ़ हों या दुन्या

www.dawateislami.net

से पर्दा कर चुके हों। नाम से पहले "हज़रते सय्यिदुना" जब कि नाम के बा'द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वग़ैरा दुआइय्या कलिमात का इस्ति'माल करना चाहिए नीज़ मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गाने दीन के लिये मख़्सूस अल्क़ाब का लिखना और बोलना भी ऐन सआ़दत है मसलन : हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, क़ुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वग़ैरा। जो बुज़ुर्गाने दीन हयात हों उन के लिये قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی वग़ैरा दुआइय्या कलिमात का इस्ति'माल करना चाहिए। जब एक बुज़ुर्ग का ज़िक्र हो तो رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, दो हों तो رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا जब कि दो से ज़ियादा होने की सूरत में رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم, ख़ातून बुज़ुर्ग एक हों तो رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا, दो हों तो رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا जब कि दो से ज़ियादा के लिये رحمةُ اللّٰه تعالٰی علیهن कहना और लिखना चाहिए। बुज़ुर्गों के नामों के साथ दुआइय्या कलिमात लिखने में याद आने पर हम क़ाफ़िया अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने से तह़रीर व तक़रीर में कशिश पैदा होती है मसलन हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शामी के साथ "قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامی" और सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी के साथ "عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْقَوِی"।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने इ़ज़ाम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को पुकारना

उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने इ़ज़ाम और क़ाबिले एह़तिराम दीनी शख़्सिय्यात से हम कलाम होने और उन का तज़किरा करने में भी

www.dawateislami.net

अदबो एह़तिराम को मल्हूज़ रखना अज़ ह़द ज़रूरी है मसलन यूं कह कर मुख़ातब कीजिये : ह़ज़रत ! हुज़ूर ! जनाब वग़ैरा, जिस शख़्सिय्यत का लक़ब मश्हूर हो उसे उस लक़ब से भी पुकारा और लिखा जा सकता है जैसे **मेरे आक़ा ह़ज़रत** मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن का मश्हूर लक़बे मुबारक **''आ'ला ह़ज़रत''** है, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान का लक़ब **''मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द''**, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान का लक़ब **''ह़कीमुल उम्मत''** इसी त़रह़ बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मश्हूर लक़ब **''अमीरे अह्ले सुन्नत''** है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿6﴾ दीनी असातिज़ा को पुकारना

दीनी उस्ताज़ रूह़ानी बाप होता है इस लिये उन को भी ता'ज़ीमी अन्दाज़ से उस्ताज़े मोह़तरम, उस्ताज़ साह़िब, या उस्ताज़ी कह कर पुकारना और लिखना चाहिए। **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इल्म ह़ासिल करो और इल्म के लिये बुर्दबारी व वक़ार सीखो, और जिस से इल्म ह़ासिल कर रहे हो उस के सामने आ़जिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार करो।

(المعجم الاوسط، ٤/ ٣٤٢، حديث: ٦١٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾7﴿ सादाते किराम को पुकारना

हज़रते मौलाना नूर मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد और हज़रते मौलाना सय्यिद क़नाअ़त अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی येह दोनों हज़रात, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जैसे सच्चे आ़शिक़े रसूल की सोह़बते बा बरकत में रह कर **इल्मे दीन** की दौलते बे बहा ह़ासिल कर रहे थे। एक मरतबा मौलाना नूर मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد ने सय्यिद साह़िब का नाम ले कर इस त़रह़ पुकारा : "क़नाअ़त अ़ली, क़नाअ़त अ़ली !" जब **सय्यिदुस्सादात** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आ़शिक़े सादिक़ के कानों में येह आवाज़ पड़ी तो गवारा न किया कि ख़ानदाने रसूल के **शहज़ादे** को इस त़रह़ नाम ले कर पुकारा जाए। फ़ौरन मौलाना नूर मुहम्मद साह़िब को बुलवाया और फ़रमाया : **"क्या सय्यिद ज़ादों को इस त़रह़ पुकारते हैं ! कभी मुझे भी इस त़रह़ पुकारते हुए सुना ?"** (या'नी मैं तो उस्ताज़ हूं फिर भी कभी ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार नहीं किया) येह सुन कर मौलाना नूर मुहम्मद साह़िब बहुत शर्मिन्दा हुए और नदामत से निगाहें झुका लीं। **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : **"जाइये ! आयिन्दा ख़याल रखियेगा।"** (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 1/183)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदीने वाले आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादों को अदब से पुकारना चाहिए, बा'ज़ अ़लाक़ों में सय्यिद ज़ादों को "शाह साह़िब, शाह जी" जब कि बाबुल मदीना कराची और दीगर बा'ज़ जगहों पर "बापू" कह कर बुलाया और लिखा जाता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾8﴿ बूढ़े इस्लामी भाइयों को पुकारना

इस्लाम एक कामिल व अक्मल दीन है जो हमें **बुज़ुर्गों का एह़तिराम** सिखाता है । सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो नौजवान किसी बुज़ुर्ग के सिन रसीदा (या'नी बूढ़े) होने की वज्ह से उस की इ़ज़्ज़त करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये किसी को मुक़र्रर कर देता है जो उस नौजवान के बुढ़ापे में उस की इ़ज़्ज़त करेगा । (ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی اجلال الکبیر،۳/۴۱۱،حدیث:۲۰۲۹)

बूढ़ों को ह़स्बे रवाज व उ़र्फ़ इ़ज़्ज़त से पुकारना चाहिए मसलन बा'ज़ अ़लाक़ों में "बाबा जी", "बड़े मियां" कह कर पुकारना मुरव्वज है । अगर दादा, दादी या नाना, नानी ह़यात हों तो उन को दादा हुज़ूर, दादा जान, दादा जी, नाना हुज़ूर, नाना जान, नाना जी वग़ैरा कह कर पुकारना चाहिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ मां-बाप को पुकारना

वालिदैन का एह़तिराम करना, उन्हें इ़ज़्ज़त से पुकारना दोनों जहानों में ढेरों भलाइयां पाने का सबब है । वालिद साह़िब को ह़स्बे मौक़अ़ और ह़स्बे रवाज अब्बू जी, अब्बा हुज़ूर, बाबा और वालिदा साह़िबा को अम्मी हुज़ूर, अम्मी जान, अम्मी जी वग़ैरा कह कर पुकारना चाहिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾10﴿ रिश्तेदारों को पुकारना

रिश्तेदार दो क़िस्म के होते हैं, एक वोह जो उ़म्र में हम से बड़े हैं और दूसरे वोह जिन की उ़म्र हम से कम होती है। बड़े रिश्तेदारों को पुकारने के लिये मुख़्तलिफ़ ज़बानों और अ़लाक़ों में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और अन्दाज़ राइज हैं, इन में से जो अदब के ज़ियादा क़रीब और शरीअ़त के मुताबिक़ हों अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उन्हें इख़्तियार करना चाहिए। बा'ज़ अ़लाक़ों में मामूं जान, चचा जान, भाई जान वग़ैरा बोला जाता है।

कम उ़म्र रिश्तेदारों मसलन छोटे भाई बहन, भान्जे, भतीजे नीज़ अपनी अवलाद से गुफ़्तगू और इन्हें पुकाराने में शफ़्क़त से भरपूर और मुहज़्ज़ब अन्दाज़ अपनाना और "आप जनाब" से बात करना न सिर्फ़ बात करने वाले की शख़्सिय्यत की अ़क्कासी करता है बल्कि येह अन्दाज़ बच्चों की तरबियत में भी मुआ़विन साबित होता है क्यूंकि बच्चे उ़मूमन बड़ों के अक़्वाल व अफ़्आ़ल से असर लेते और उन की नक़्क़ाली करते हैं। इस बारे में हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े अ़मल क्या था इस रिवायत से अन्दाज़ा लगाइये, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ बेटे !

(مسلم،کتاب الادب،باب جواز قوله لغیر ابنه یا بنی،ص۱۱۸۵، رقم:۲۱۵۱)

मियां बीवी का एक दूसरे को पुकारना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1195 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त (जिल्द 3) सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

657 पर है : औ़रत को येह मकरूह है कि शोहर को नाम ले कर पुकारे। (درمختار، ۹ /۶۹۰) बा'ज़ जाहिलों में येह मश्हूर है कि औ़रत अगर शोहर का नाम ले ले तो निकाह़ टूट जाता है। येह ग़लत़ है शायद इस लिये गढ़ा हो कि इस डर से कि त़लाक़ हो जाएगी शोहर का नाम न लेगी।

(बहारे शरीअ़त, 3/657)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पहले की औ़रतें इस क़दर ह़यादार होती थीं कि अपने शोहर का नाम लेते हुए **झिजकती** थीं और मुन्ने के अब्बू वग़ैरा कहती थीं। मगर अब तो बिला तकल्लुफ़ "मेरे मियां, मेरे शोहर, मेरे हज़्बन्ड (**Husband**)" कहती हैं। और मर्द भी मेरे बच्चों की अम्मी वग़ैरा कहने के बजाए "मेरी बीवी, मेरी वाइफ़, मेरी घरवाली" कहते हैं, अपने बच्चों के मामूं का तआ़रुफ़ करवाने का काफ़ी शौक़ देखा गया है। अगर्चे वोह कज़िन हो तब भी बिला ज़रूरत सिर्फ़ "साला" कह कर तआ़रुफ़ करवाएंगे। ग़ालिबन ह़ज़्ज़े नफ़्स के लिये ऐसा किया जाता होगा। कोशिश फ़रमाइये कि मुहज़्ज़ब अल्फ़ाज़ ज़बान पर आएं, हां, ज़रूरतन बीवी या शोहर वग़ैरा का रिश्ता बताने में ह़रज भी नहीं। (बा ह़या नौजवान, स. 39)

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में दीगर मुआ़शरती और अख़्लाक़ी पहलूओं के साथ साथ इस ह़वाले से भी तरबियत का एहतिमाम किया जाता है, अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के अ़त़ा कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े "**72 मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म इस बारे में भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**मदनी इन्आ़मात**" के

सफ़ह़ा 4 पर मदनी इन्आ़म नम्बर 7 है : आज आप ने (घर में और बाहर भी) हर छोटे बड़े ह़त्ता कि वालिदा (और अगर हैं तो अपने बच्चों और इन की अम्मी) को भी **तू** कह कर मुख़ात़ब किया या **आप** कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ़्तगू **हैं** कह कर बात की या **जी** कह कर ? (आप कहना, जी कहना दुरुस्त जवाब है) ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿11﴾ हम उ़म्म इस्लामी भाइयों को पुकारना

ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ (پ٢٦،الحجرات:١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मुसलमान भाई हैं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के किसी भी कोने में रहने वाला मुसलमान चाहे उस से हमारी कोई वाक़िफ़िय्यत या रिश्तेदारी न हो लेकिन मुसलमान होने के बाइ़स वोह हमारा इस्लामी भाई है लिहाज़ा उसे पुकारते और उस का तज़किरा करते हुए उस के नाम के साथ "भाई" कहना मुनासिब है जैसा कि अह़मद रज़ा भाई, ह़सन भाई वग़ैरा । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में येही त़रीक़ए कार राइज है । नावाक़िफ़ मुसलमान को भाई कहना सिर्फ़ नोके ज़बान तक ही मह़दूद नहीं होना चाहिए बल्कि कोशिश कर के अपने दिल में भी उस के लिये भाईचारे के जज़्बात उजागर करना और उस के ख़ुशी व ग़म को अपना ख़ुशी व ग़म समझना चाहिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बिला ज़रूरत दो तीन नाम मिला कर न रखें

पाक व हिन्द के बा'ज़ अ़लाक़ो में वालिद के नाम को बेटे का हिस्सा बनाया जाता है जैसे मुहम्मद आ़रिफ़ जुनैद, ऐसे उ़र्फ़ पर अ़मल करने में हरज नहीं लेकिन गै़र ज़रूरी तौ़र पर दो या तीन नामों पर मुश्तमिल एक नाम न रखा जाए, आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : दो दो तीन तीन नामों पर मुश्तमिल नाम रखना जैसे मुहम्मद अ़ली हुसैन इस का भी रवाजे सलफ़ (या'नी बुज़ुर्गों में रवाज) कभी न था सादे एक लफ़्ज़ के नाम होते थे। واللہ تعالیٰ اعلم

(फ़तावा रज़विय्या, 24/669)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाम रखने में मुज़क्कर और मुअन्नस का भी ख़याल रखें

बा'ज़ अवक़ात लड़के का नाम लड़कियों वाला और लड़की का नाम लड़कों वाला रख दिया जाता है, नाम ऐसा हो जिसे सुनते ही मा'लूम हो जाए कि येह लड़की का नाम है या लड़के का ! मसलन लड़की के लिये ख़दीजा और लड़के के लिये क़ासिम नाम रखा जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गै़र मुस्लिमों के लिये मख़्सूस नाम न रखिये

आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : मुसलमान को मुमानअ़त है कि काफ़िरों के नाम रखे كَمَا صَرَّحُوْا بِهٖ فِي التَّسَمِّي بِيُوْحَنَّا वगै़रा

(जैसा कि यूहन्ना नाम रखने के मुतअ़ल्लिक़ फ़ुक़हा ने तसरीह़ फ़रमाई है। ت) (फ़तावा रज़विय्या, 23/260)

एक और जगह नक़्ल करते हैं : नामों की एक क़िस्म कुफ़्फ़ार से मुख़्तस्स है जैसे जिर्जिस, पुत़रुस और यूहन्ना वग़ैरा लिहाज़ा इस नौअ़ (या'नी क़िस्म) के नाम मुसलमानों के लिये रखने जाइज़ नहीं क्यूंकि इस में कुफ़्फ़ार से मुशाबहत पाई जाती है। واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

(फ़तावा रज़विय्या, 24/663)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुरे नाम का असर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स से उस का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया तो कहने लगा : मेरा नाम जमरह (चिंगारी) है, फ़रमाया : किस का बेटा ? कहा : इब्ने शिहाब (आतश पारा) का, फ़रमाया : किन लोगों में से है ? कहा : हुरक़ह (सोज़िश) में से, फ़रमाया : तेरा वत़न कहां है ? कहा : ह़र्रतुन्नार (आग की तपिश) में, फ़रमाया : उस के किस मक़ाम पर ? कहा : ज़ातिलज़ा (शो'लावार) में। फ़रमाया : अपने घर वालों की ख़बर ले सब जल गए, तो वैसा ही हुवा जैसा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया था (या'नी उस ने सारा कुम्बा जला हुवा पाया)।

(مؤطا امام مالك، كتاب الاستئذان، باب مايكره من الاسماء، ٢/٤٥٤، حديث: ١٨٧١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छे नाम वाले से काम लिया

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन

www.dawateislami.net

एक ऊंटनी मंगवाई और फ़रमाया : इसे कौन दोहे (या'नी दूध निकालेगा) ? एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मैं । दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उस ने कहा : मुर्रतुन (या'नी कड़वा) । फ़रमाया : तुम बैठ जाओ । एक और शख़्स खड़ा हुवा । नाम पूछा तो उस ने अपना नाम जमरतुन (या'नी अंगारा) बताया । उसे भी बैठने का इरशाद फ़रमाया । अब ह़ज़रते सय्यिदुना यई़श ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए और दरयाफ़्त करने पर अपना नाम यई़श (या'नी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला) बताया तो इरशाद हुवा : तुम ऊंटनी को दोहो (या'नी इस का दूध निकालो) ।

(المعجم الکبیر، ۲۲/ ۲۷۷، حدیث: ۷۱۰)

क़ाज़ी सुलैमान बिन ख़लफ़ अलबाजी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : नबिये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो अफ़राद को ऊंटनी का दूध दोहने से रोक दिया और यई़श नाम के शख़्स को इस की इजाज़त अ़ता फ़रमाई तो येह बद शुगूनी के बाब से नहीं है येह तो सिर्फ़ नाम को अच्छा या बुरा जानने के मा'ना में है । अच्छा नाम पसन्द करना ऐसे ही है जैसे बद सूरत औ़रत पर ख़ूब सूरत को पसन्द करना, मैले कपड़ों के मुक़ाबले में साफ़ सुथरे कपड़ों को इख़्तियार करना और जुमुआ़ और ई़दों में अच्छी हैअत और उ़म्दा ख़ुश्बू पसन्द करना तो मा'लूम हुवा कि इस्लाम ख़ूब सूरती के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि येह तो ज़ीनत इख़्तियार करने को जाइज़ क़रार देता है और नामों वग़ैरा में उ़म्दगी को पसन्द करता है ।

(المنتقی شرح مؤطا امام مالك، ۹/ ۴۵۷، ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नाम तब्दील फ़रमा दिया करते

कसीर अहादीस से साबित है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बहुत से नाम तब्दील फ़रमा दिये, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना उतबा बिन अब्द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जब कोई ऐसा शख़्स आता जिस का नाम आप को नापसन्द होता, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस का नाम तब्दील फ़रमा देते थे। (جمع الجوامع،۵/۴۲۱،حدیث:۱۶۱۵۱)

अज़ीम मुहद्दिस हज़रते इमाम अबू दावूद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस (गुनहगार), अज़ीज़ (ग़ालिब, ताक़तवर), अतलह (शिद्दत और सख़्ती), शैतान (हलाक होने वाला, भलाई से दूर), हकम (दाइमी हुकूमत वाला), गुराब (कव्वा, दूर निकल जाने वाला) और हुबाब (शैतान का नाम, सांप की एक क़िस्म) के नाम तब्दील फ़रमा दिये, शिहाब (आग का शो'ला) का नाम हिशाम (सख़ावत), हर्ब (जंग) का नाम सल्म (सुल्ह) और मुज़तजिअ (लैटने वाला) का नाम मुम्बइस (उठने वाला) रखा।

(ابو داؤد ،کتاب الادب،باب فی تغییرالاسم القبیح،۴/۳۷۶،تحت الحدیث:۴۹۵۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : क्यूंकि आस मुख़फ़्फ़फ़ (short cut) है आसी का, जिस के मा'ना हैं गुनहगार, इताअते इलाही से अलाहदा, येह मोमिन की शान नहीं, मोमिन इताअत शिआर होता है। अतलह बना है अतलुन से ब मा'ना सख़्ती, शिद्दत, रब तआला عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता हैं :

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿۱۳﴾ (پ۲۹،القلم:۱۳)

www.dawateislami.net

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** दुरुश्त ख़ू इस सब पर तुर्रा येह कि इस की अस्ल में ख़ता), अब एक मज़बूत औज़ार को अ़तलह कहते हैं जिस से दीवार वग़ैरा खोदी जावे (या'नी कुदाल) मुसलमान सख़्त नहीं होता, नीज़ अ़ज़ीज़ अस्माए इलाहिय्या में से हैं, इ़ज़्ज़त से बना है, मुसलमान में फ़िरोतनी इ़ज्ज़ो नियाज़ चाहिए। शैत़ान लक़ब है इब्लीस का, बना है शैत़ुन से ब मा'ना जलना, हलाक होना या शत़नुन से ब मा'ना भलाई से दूरी। ह़कम सिफ़ते मुशब्बा हुकूमत या हुकुम का ब मा'ना दाइमी हुकूमत वाला, येह रब तआ़ला عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त है। ग़ुराब बना है ग़ुर्बुन से ब मा'ना दूरी, येह नाम है कव्वे का कि वोह बहुत दूर निकल जाता है। हुबाब शैत़ान का नाम भी है और एक क़िस्म के सांप को भी कहते हैं लिहाज़ा येह नाम भी मन्हूस है और शिहाब आग के शो'ले को भी कहते हैं और टूटे हुए तारे को भी जिस से शयात़ीन को भी मारा जाता है मगर यहां "मिरक़ात" ने फ़रमाया कि अगर शिहाब को दीन की त़रफ़ मुज़ाफ़ कर दिया जाए और नाम हो शिहाबुद्दीन तो कराहत क़त़अ़न नहीं बिला कराहत जाइज़ है। (मिरक़ात, 8/530), कि अब येह फ़ासिद मा'ना निकल गए (और मा'ना हो गए) चमकदार, लिहाज़ा कराहत न रही। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/421)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुरे नाम को बदल देते

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुरे नाम को बदल देते थे। (ترمذی،کتاب الادب،باب ماجاء في تغيير الاسماء،۴/۳۸۲،حدیث:۲۸۴۸)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्सानों के, जानवरों के बल्कि शहरों बस्तियों के बुरे नाम बदल कर अच्छे नाम रख देते थे, चुनान्चे, एक शख़्स का नाम था "अस्वद (या'नी काला)" हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम अब्यज़ (या'नी सफ़ेद) रखा, मदीनए मुनव्वरा का नाम यसरिब (वीराना, ख़ारज़ार) था हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम मदीना (जम्अ़ होने की जगह), त़य्यिबह (बेहतर मिट्टी वाला शहर, आफ़ात से मह़फ़ूज़ शहर), अब्त़ह़ (कुशादा जगह जहां से सैलाब का पानी गुज़रता हो), बत़ह़ा (कुशादा ज़मीन) वग़ैरा रखे। कुफ़्फ़ार के लिये बर अ़क्स अ़मल था चुनान्चे "अबुल ह़कम" (दानाई वाला) नाम था हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "अबू जह्ल" (जहालत वाला) रखा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/420)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वोह बा'ज़ नाम जो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा दिये

﴾1﴿ एक सह़ाबी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए जिन के चेहरे पर ज़ख़्म का निशान था, रसूले सक़लैन, सुल्त़ाने कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से नाम पूछा। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **मुन्ज़िर** (डराने वाला)। फ़रमाया : तुम **अशज** (ज़ख़्मी पेशानी वाला) हो। (اسد الغابة،۲/۸۹،رقم:۱۲۹۷)

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना बशीर बिन ख़सासिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "**ज़ह़म**"(रुकावट डालने वाला) था, **बशीर** (ख़ुश ख़बरी देने वाला) नाम रखा। (اسد الغابة،۱/۲۸۹،رقم:٤٥٥)

﴾3﴿ हज़रते सय्यिदुना सिराज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **फ़त्ह़** (कामयाबी) था, बदल कर **सिराज** (चराग़) रखा। (الاستیعاب،۲/۲٤۲،رقم:۱۱۳٦)

﴾4﴿ एक सह़ाबी का नाम पहले "**अस्वद** (काले रंग वाला)" था, बदल कर **अब्यज़** (गोरे रंग वाला रखा।)

(جمع الجوامع،مسند سهل بن سعد،۱٤/٤۳۹،حدیث:۱۱۳٤۳)

﴾5﴿ हज़रते सय्यिदुना अबुल यमान बिश्र या बशीर बिन अ़क़रबह जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद के साथ नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, नाम पूछा तो अ़र्ज़ की : **बह़ीर** (इल्म, माल में ज़ियादती वाला)। फ़रमाया : नहीं बल्कि तुम्हारा नाम **बशीर** (ख़ुश ख़बरी देने वाला) है। (الاصابة،۱/٤۳٤،رقم:٦۷۱)

﴾6﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू इ़साम बशीर ह़ारिसी का'बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **अक्बर** (सब से बड़ा) था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम **बशीर** (ख़ुश ख़बरी देने वाला) हो।

(اسد الغابة، ۱/۲۸۸،رقم:٤٥٤)

﴾7﴿ हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन जबलह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम पहले **अ़ब्दे अ़म्र** (अ़म्र का बन्दा) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **बक्र** रखा। (جمع الجوامع،مسندبکربن جبلة الکلبی،۱٤/۱٥٥)

﴾8﴿ हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन ह़बीब ह़नफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पहला नाम **बरबर** (फ़ुज़ूल बातें करने वाला) था, नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम बरबर से बदल कर **बक्र** रखा।

(الاصابة،۱/٤٥۳،رقم:۷۲٦)

www.dawateislami.net

﴾9﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन ह़बीब बिन मरवान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बत़ौरे वफ़्द नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया, उन्हों ने बताया : **बग़ीज़** (क़ाबिले नफ़रत) । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम **ह़बीब** (क़ाबिले मह़ब्बत, दोस्त) हो । इस के बा'द उन को ह़बीब कहा जाता था । (اسدالغابۃ،۱/۳۰۰،رقم:٤٨١)

﴾10﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना जुऐब बिन शा'सन/शा'सम तमीमी अम्बरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप ने उन का नाम पूछा : उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अलकुलाह़** (तुर्श रू) । नबिये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम "**ज़ुऐब**" (बालों वाला) है । उन के लम्बे लम्बे गैसू थे ।

(اسدالغابۃ،۲/۲۱۸،رقم:١٥٦٦)

﴾11﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू असीलह राशिद बिन ह़फ़्स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **ज़ालिम** (ज़ुल्म करने वाला) था, नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **राशिद** (हिदायत याफ़्ता) नाम रखा ।

(اسدالغابۃ،۲/۲۲۰،۲۲۱،رقم:١٥٦٩)

﴾12﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना राशिद बिन शिहाब बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **क़िरज़ाब** (खाने में ह़रीस) था, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **राशिद** (हिदायत याफ़्ता) रखा ।

(اسدالغابۃ،۲/۲۲۱،رقم:١٥٧٠)

www.dawateislami.net

﴾13﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू मुकनिफ़ ज़ैदुल ख़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "**ज़ैदुल ख़ील**"(बड़ाई, ख़ुद पसन्दी में बढ़ने वाला) से बदल कर "**ज़ैदुल ख़ैर**"(भलाई और नेकी में बढ़ने वाला) रखा।

(الاستیعاب،۲/۱۲۷،رقم:۸٦٦)

﴾14﴿ हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन क़ैस अनज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? अर्ज़ की : **सा'दुल ख़ील** (घोड़ों में बरकत वाला) फ़रमाया : बल्कि तुम **सा'दुल ख़ैर** (नेकी में बरकत वाला) हो।

(الاصابة، ۳/٦۰،رقم:۳۱۹۹)

﴾15﴿ अबू दावूद शरीफ़ में है एक साहिब का नाम **हर्ब** (जंग) था, **सरकारे** वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम **सल्म** (अम्न) रखा।

(ابو داوٗد،کتاب الادب،باب فی تغییرالاسم القبیح،٤/۳۷٦،حدیث:٤۹٥٦)

﴾16﴿ ग़ज़वए ख़न्दक़ के मौक़अ पर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़न्दक़ की खुदाई लोगों में बांट दी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन के साथ मसरूफ़े कार रहे, उन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में **जुऐल** (बद शक्ल और सियाह आदमी) नामी एक साहिब भी थे, जनाबे रहमते आलमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम "**अम्र**" रखा।

(اسدالغابة،۱/٤۲٥،رقم:۷٦٦)

www.dawateislami.net

﴾17﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना शरीद बिन सुवैद सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **मालिक** (मिल्किय्यत वाला) था, शाहे बनी आदम, **नबिये मोह़तशम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदल कर **शरीद** (दौड़ कर आने वाला) रखा, बैअ़ते रिज़वान के शुरका में से हैं। (اسد الغابۃ،۲/۵۹۹،رقم:۲۴۳۰)

﴾18﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह कसीर बिन सल्त बिन मा'दी करिब किन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में पैदा हुए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **क़लील** था, नबिये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **कसीर** रखा। (اسدالغابۃ،٤/٤٨٥،رقم:٤٤٢٤)

﴾19﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन उम्मे आ़सिम का नाम **आ़सिया** (नाफ़रमान औ़रत, गुन्जान दरख़्त) था, नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम **जमीला** (फ़ज़्ले ख़ुदा से नेकियां करने वाली, ख़ूब सूरत) रखा था। (اسدالغابۃ،٤/٤٨٥،رقم:٤٤٢٤)

﴾20﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **क़लील** (कोताह व दुबले जिस्म का आदमी) था, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम **कसीर** (वाफ़िर, ज़ियादा) रखा।

(اسدالغابۃ،٤/٤٨٣،رقم:٤٤١٩)

﴾21﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाम दरयाफ़्त फ़रमाया तो अ़र्ज़ की : **शिहाब** (आग का शो'ला) बिन ख़ुरुफ़ा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (उन का और उन के वालिद का नाम तब्दील कर दिया और) इरशाद फ़रमाया : तुम **मुस्लिम** (सलामती वाले) बिन अ़ब्दुल्लाह हो। (اسدالغابۃ،۲/۶۱۰،رقم:۲۴۵۳)

www.dawateislami.net

﴾22﴿ हज़रते सय्यिदुना **मुतीअ़** बिन असद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **आस** (नाफ़रमान) था, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **मुतीअ़** (फ़रमां बरदार) रखा।

(مسند امام احمد، حدیث مطیع بن اسود، ۵/۲۵۳، حدیث:۱۵۴۰۸)

﴾23﴿ हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक साहिब आए, आप ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? वोह बोले : **नकिरह** (अजनबी)। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि तुम **मा'रूफ़** (मश्हूर) हो।

(الاصابة، ۶/۱۴۲، رقم:۸۱۵۲)

﴾24﴿ हज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन अबू उमय्या बिन मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सहाबी हैं, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सगे भाई थे, आप का नाम **वलीद** (अभी अभी पैदा शुदा, नौकर) था। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह नाम नापसन्द फ़रमाया और उन का नाम **मुहाजिर** (हिजरत करने वाला) रखा। (اسد الغابة، ۵/۲۹۲، رقم:۵۱۲۷)

﴾25﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन बद्र बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सहाबी हैं, नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अपनी क़ौम के क़ासिद बन कर आए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? अ़र्ज़ की : अ़ब्दुल **उ़ज़्ज़ा** (उ़ज़्ज़ा "कुफ़्फ़ार के बुत का नाम" का बन्दा)। सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

आप का नाम बदल कर "**अ़ब्दुल अ़ज़ीज़**" (ग़ालिब व त़ाक़तवर का बन्दा) रख दिया। (الاستیعاب،۳/۱۲۷،رقم:۱۷۱۹)

﴿26﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल **मुत़र्रिफ़** सुलैमान बिन सरद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम क़ब्ल अज़् इस्लाम **यसार** (ख़ुशह़ाली, फ़राख़ी) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **सुलैमान** रखा। (الاستیعاب،۲/۲۱۰،رقم:۱۰۶۱)

﴿27﴾ ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़स्साना मुज़निय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम **जस्सामा** (सुस्त व काहिल) था, आप उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सहेली थीं, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ह़स्साना** (बहुत ह़सीनो जमील) नाम अ़त़ा फ़रमाया। (اسد الغابۃ، ۷/۷۳،رقم:۶۸۴۲)

﴿28﴾ ह़ज़रते सय्यिदतुना उ़नक़ूदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम **इनबा** (अंगूर) था, मालिके कौसरो जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम "**उ़नक़ूदा**" (ख़ोशए अंगूर) रखा।

(اسد الغابۃ،۷/۲۲۶،رقم:۷۱۴۷)

﴿29﴾ ह़ज़रते सय्यिदतुना मुत़ीआ़ बिन्ते नो'मान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम **आ़सिया** (नाफ़रमान) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "**मुत़ीआ़**" (फ़रमां बरदार) रखा। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد،۸/۲۶۴،رقم:۴۳۸۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अब तक सख़्ती पाई जाती है

नाम शख़्सिय्यत पर असर अन्दाज़ होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मेरे दादा **रसूले अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : तुम्हारा क्या नाम है? उन्हों ने कहा : **ह़ज़्न**। फ़रमाया : "तुम **सहल** हो।" उन्हों ने जवाब दिया : जो नाम मेरे बाप ने रखा है, इसे नहीं बदलूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कहते हैं : इस का नतीजा येह हुवा कि हम में अब तक सख़्ती पाई जाती है।

(بخاری،کتاب الادب،باب تحویل الاسم ـالخ،۴/۱۵۳،حدیث:۶۱۹۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ने इस ह़दीसे पाक के तह़्त जो वज़ाह़त फ़रमाई है, इस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : ❁ "ह़ज़्न" के "ح" के फ़त्ह़ा से सख़्त ज़मीन और सख़्त दिल इन्सान। ह़ुज़्न के "ح" के पेश से रन्जो ग़म। "सहल" के "س" के फ़त्ह़ा, "ہ" के सुकून से, नर्म ज़मीन और नर्म दिल इन्सान। आसानी व नर्मी को भी "सहल" कहते हैं, चूंकि ह़ज़्न के मा'ना अच्छे नहीं इस लिये आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने तब्दीलिये नाम का मश्वरा दिया। ❁ ख़याल रहे कि येह हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का मश्वरा था अम्र (या'नी ह़ुक्म) न था। इस लिये हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने कुछ इरशाद न फ़रमाया। हुज़ूर

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मश्वरा क़बूल करना मुस्तह़ब है वाजिब नहीं, लिहाज़ा इस अ़र्ज़ पर ए'तिराज़ नहीं । ❁ ह़ज़्न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के बेटे मुसय्यब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं और मुसय्यब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के बेटे सईद बिन मुसय्यब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं, सईद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) कहते हैं कि दादा का असर हम पोतों तक बाक़ी रहा । इस से मा'लूम हुवा कि बुरे नामों का बुरा असर होता है और कभी एक शख़्स की ग़लती से पूरे ख़ानदान पर बुरा असर होता है । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/424,425)

मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अम्जदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मुन्दरिजए बाला ह़दीस की शर्ह़ में लिखते हैं : "हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह नाम बदलना इस्तिह़बाबन (या'नी बत़ौरे मुस्तह़ब) था और तफ़ाउल (नेक फ़ाल) के त़ौर पर था । किसी का नाम रखने में लुग़वी मा'ना के साथ मुनासबत का लिह़ाज़ नहीं होता और इस वाक़िए़ में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बात न मानने का असर पड़ा ।"

(नुज़्हतुल क़ारी, 5/593)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन नामों से अपनी ता'रीफ़ निकलती हो वोह न रखे जाएं

ऐसे नाम जिन में तज़्कियए नफ़्स और ख़ुद सिताई (या'नी अपनी ता'रीफ़) निकलती है, उन को भी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदल डाला, बर्रा (नेक, सालेह़ा) का नाम ज़ैनब (एक ह़सीन ख़ुश्बूदार पौदा) रखा और फ़रमाया कि "अपने नफ़्स का तज़्कियया न करो ।"

(مسلم،کتاب الاداب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح، ص۱۱۸۲، حدیث:۲۱۴۲ ملخصًا)

www.dawateislami.net

शम्सुद्दीन (दीन का सूरज), ज़ैनुद्दीन (दीन की ज़ीनत), मुह्य्युद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाला) फ़ख़रुद्दीन (दीन का फ़ख़्र), नसीरुद्दीन (दीन का मददगार), सिराजुद्दीन (दीन का चराग़), निज़ामुद्दीन (दीन का निज़ाम), क़ुत्बुद्दीन (दीन का मह्वर व मर्कज़) वग़ैरहा अस्मा जिन के अन्दर ख़ुद सिताई और बड़ी ज़बरदस्त ता'रीफ़ पाई जाती है नहीं रखने चाहिए। रहा येह कि बुज़ुर्गाने दीन व अइम्मए साबिक़ीन को इन नामों से याद किया जाता है ! तो येह जानना चाहिए के उन ह़ज़रात के नाम येह न थे बल्कि येह उन के अल्क़ाब हैं कि जब वोह ह़ज़रात मरातिबे इ़ल्लिया (बुलन्द मर्तबे) और मनासिबे जलीला पर फ़ाइज़ हुए तो मुसलमानों ने उन को इस त़रह़ कहा और यहां एक जाहिल और अनपढ़ जो अभी पैदा हुवा और उस ने दीन की अभी कोई ख़िदमत नहीं की इतने बड़े बड़े अल्फ़ाज़े **फ़ख़ीमा** (वज़्नी अल्फ़ाज़) से याद किया जाने लगा ! इमाम मुह्य्युद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى बा वुजूद इस जलालते शान के इन को अगर मुह्य्युद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाला) कहा जाता तो इन्कार फ़रमाते और कहते कि जो मुझे मुह्य्युद्दीन नाम से बुलाए उस को मेरी त़रफ़ से इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअ़त, 3/604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अह्ले सुन्नत का ख़ुद को फ़क़ीरे अह्ले सुन्नत कहना

बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को लोग "**अमीरे अह्ले**

www.dawateislami.net

सुन्नत'' कहते हैं लेकिन आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बतौरे आ़जिज़ी ख़ुद को ''**फ़क़ीरे अह्ले सुन्नत**'' कहते हैं और इस की वज़ाह़त यूं फ़रमाते हैं कि ''**मैं अह्ले सुन्नत में नेकियों के मुआ़मले में सब से ज़ियादा मुफ़्लिस हूं।**'' ह़ालांकि ह़क़ीक़त येह है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़िक्मत व तरबियत ने लाखों बदकारों को नेकूकार बना दिया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुर्रा नाम तब्दील कर के जुवैरिया रखा

ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का नाम पहले बुर्रा (नेकी करने वाली) था **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का नाम बदल कर जुवैरिया रख दिया, आप नापसन्द करते थे कि यूं कहा जाए : خَرَجَ مِنْ عِنْدِ بُرَّة या'नी फुलां बुर्रा के पास से चला गया।

(مسلم،کتاب الآداب،باب استحباب تغییر الاسم القبیح الی حسن،ص۱۱۸۲،حدیث:۲۱۴۰)

क़ाज़ी सुलैमान बिन ख़लफ़ अल बाजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : किसी नाम के ममनूअ़ होने की दो वुजूहात होती हैं या तो उस में तज़किएए नफ़्स होगा या उस के लफ़्ज़ में कोई ख़राबी पाई जाती होगी जैसा कि خَرَجَ مِنْ عِنْدِ بُرَّة ''या'नी फुलां बुर्रा के पास से चला गया'' में है।

(المنتقی شرح مؤطا امام مالك،کتاب الجامع، باب مایکره من الاسماء،۹/۴۵۵،ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जिन नामों में कम तज़किया हो वोह रख सकते हैं

रूहुल मआ़नी में है : ज़ाहिर येह है कि जिन नामों में तज़किया होता है वोह मकरूह इस सूरत में होंगे जब कि इन में तज़किया बहुत ज़ियादा महसूस हो मसलन जब नाम की ह़दीस में मुमानअ़त आई इस से पहले भी तज़किया पर इस की दलालत वाज़ेह़ हो और वोह तज़किया के मा'ना में इस्ति'माल होता हो लिहाज़ा जिन नामों में ता'रीफ़ बहुत ज़ियादा महसूस न हो जैसा कि सईद (बरकत वाला, सआ़दत मन्द, येह एक सह़ाबी का नाम भी है) और ह़सन (अच्छा, जो नवासए रसूल का नाम है) तो ऐसे नाम रखना मकरूह नहीं।

(تفسیر روح المعانی، جزء۲۷، ص۹۱)

इस त़रह़ के कई नाम हैं जो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रखे ह़ालांकि इन में तज़किया का पहलू पाया जाता है, चुनान्चे,

﴿1﴾ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को घुट्टी दी, उन का नाम उन के नाना ह़ज़रते असअ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के नाम पर असअ़द रखा, उन की कुन्यत भी नाना की कुन्यत पर रखी और उन्हें बरकत की दुआ़ दी। ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه 100 हि. में 92 साल से ज़ियादा उ़म्र पा कर फ़ौत हुए।

(الاستیعاب، ۱/۱۷۶، رقم:۳۳، الاصابة، ۱/۳۲۶، رقم:۴۱۴)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार यमनी सह़ाबा में होता है आप फ़ारसी थे, आप का नाम **यज़ीद** (ज़ालिम, सख़्त दिल) था, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **ज़ाहिद** (इ़बादत गुज़ार, दुन्या से बे रग़बत और आख़िरत की त़रफ़ रग़बत करने वाला) रखा। (الاصابۃ،۶/۵۲۹،رقم:۹۳۳۶)

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हूद सईद बिन यर्बूअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "**सुर्म**" (बे बरकत) था, सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम "**सईद**" (बरकत वाला) रखा।

(اسدالغابۃ،۲/۴۷۰،رقم:۲۱۰۲)

﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़फ़ैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **आ़ज़िब** (ग़ैर शादी शुदा) था, नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम "**उ़फ़ैफ़**" (अ़फ़ीफ़ (पाक दामन) की तसग़ीर) रखा।

(الاصابۃ،۴/۴۲۷،رقم:۵۶۰۴)

﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना आ़क़िल बिन अल बुकैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़दीमुल इस्लाम मुहाजिर सह़ाबी हैं, दारे अरक़म में सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले और मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शरफ़े बैअ़त रखने वाले हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **ग़ाफ़िल** (ग़फ़्लत वाला) था, जब इस्लाम क़बूल किया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम "**आ़क़िल**" (अ़क़्लमन्द) रखा। (الاصابۃ،۳/۴۶۶،رقم:۴۳۷۹)

www.dawateislami.net

﴾6﴿ मुत़ीअ़ बिन अस्वद का नाम **आ़सी** (नाफ़रमान) था, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम **मुत़ीअ़** (फ़रमां बरदार) रखा।

(اسد الغابة،٤/٤٨٥،رقم:٤٤٢٤)

﴾7﴿ बनू गि़फ़ार के एक शख़्स नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **मुहान** (मा'मूली इन्सान)। रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि तुम **मुकर्रम** (इ़ज़्ज़त वाला) हो।

(اسد الغابة،٥/٢٧١،رقم:٥٠٧٥)

﴾8﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन आ़मिर बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का नाम दौरे जाहिलिय्यत में **शिहाब** (आग का शो'ला) था, नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदल कर "**हिशाम**" (सख़ावत) रख दिया।

(اسد الغابة،٥/٤١٩،رقم:٥٣٧٢)

﴾9﴿ ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम **बुर्रा** (नेकी) था, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम **मैमूना** (मुबारक, नेक बख़्त) रखा।

(الاستیعاب،٤/٤٦٨،رقم:٣٥٣٣)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तीन क़िस्म के नाम न रखें

शारेहे़ बुख़ारी अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़तहुल बारी में इमाम त़बरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से नक़्ल करते हैं :

ऐसा नाम नहीं रखना चाहिए (1) जिस के मा'ना बुरे हों या (2) उस में तज़्कियए नफ़्स हो या (3) उस में सब्ब (गाली, इहानत, ऐ़ब) का मा'ना हो (अ़ल्लामा इब्ने ह़जर फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं : तीसरी बात पहली से अख़स (या'नी ज़ियादा ख़ास) है) अगर्चे नाम लोगों के लिये अ़लामत (पहचान) होते हैं इन के ज़रीए़ सिफ़त की ह़क़ीक़त मक़्सूद नहीं होती लेकिन कराहत की वज्ह येह है कि कोई शख़्स उस का नाम सुनेगा तो गुमान करेगा कि उस शख़्स के अन्दर येह सिफ़त मौजूद है।

येही वज्ह है कि **सरकारे मदीनए मुनव्वरा,** सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी शख़्स के नाम को ऐसे नाम से तब्दील फ़रमा देते कि जब उसे उस नाम से बुलाया जाए तो वोह नाम उस पर सादिक़ आए, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुतअ़द्दिद नाम तब्दील फ़रमाए और जो भी तब्दील फ़रमाए वोह इस त़ौर पर तब्दील नहीं फ़रमाए कि इन नामों को रखना मन्अ़ है बल्कि इस त़ौर पर कि इन्हें बदल देना बेहतर है, नाम इस लिये नहीं रखा जाता कि मज़्कूरा शख़्स में येह वस्फ़ भी मौजूद है बल्कि इसे दूसरों से अलग पहचान देने के लिये नाम रखा जाता है इसी वज्ह से मुसलमान बुरे शख़्स का नाम "ह़सन (या'नी अच्छा)" और गुनहगार शख़्स का नाम "सालेह़

www.dawateislami.net

(या'नी नेक)'' रखने को जाइज़ क़रार देते हैं और इस पर येह बात भी दलालत करती है कि जब ह़ज़रते ह़ज़्न[1] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना नाम ''सहल'' से नहीं बदला तो नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन पर ''सहल'' नाम रखना लाज़िम नहीं किया, अगर येह नाम रखना उन पर लाज़िम होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की येह बात कि ''मैं अपने वालिद का रखा हुवा नाम नहीं बदलूंगा'' हरगिज़ क़बूल न फ़रमाते।

(فتح الباری لابن حجر،کتاب الادب ، باب تحویل الاسم الی اسم، ۱۱/۴۸۶،تحت الحدیث: ۶۱۹۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह नाम रखना बेहतर नहीं है

ह़ज़रते सय्यिदुना समुरा बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **सरकारे नामदार,** मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने ग़ुलाम का नाम न यसार रखो, न रबाह़, न नजीह़ और न अफ़्लह़, क्यूंकि तुम पूछोगे कि क्या वोह यहां है ? नहीं होगा तो जवाब आएगा : नहीं।

(مسلم،کتاب الآداب،باب کراھة التسمیة بالاسماء القبیحة،ص ۱۱۸۱،حدیث:۲۱۳۷)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : ग़ुलाम से मुराद मुत़्लक़न लड़का है, ख़्वाह बेटा हो या ग़ुलाम या कोई और वोह जिस का नाम रखना हमारे क़ब्ज़े में हो, नह्य तन्ज़ीहा की है या'नी येह नाम बेहतर

1....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ज़्न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल वाक़िआ़ इसी किताब के सफ़ह़ा 95 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

नहीं। **यसार** के मा'ना हैं : फ़राख़ी, उ़स्र (तंगदस्ती) का मुक़ाबिल। **रबाह़** के मा'ना हैं : नफ़्अ़, ख़सारा का मुक़ाबिल। **नजीह़** के मा'ना हैं : कामयाब, ज़फ़रयाब। **अफ़्लह़** के मा'ना हैं : नजात वाला। येह मुमानअ़त सिर्फ़ इन नामों में मह़दूद नहीं बल्कि इन जैसे और नाम जिन के मा'ना में ख़ूबी व उ़म्दगी हो, जैसे : **ज़फ़र, बरकत** वग़ैरा (अशिअ़्आ़) येह नाम न रखना बेहतर है इस की वज्ह ख़ुद बयान फ़रमा रहे हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/407)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मन्अ़ करने की ख़्वाहिश थी लेकिन मन्अ़ नहीं किया

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर मैं ज़िन्दा रहा तो अपनी उम्मत को इस बात से मन्अ़ कर दूंगा कि कोई अपना नाम बरकत, नाफ़ेअ़ (नफ़्अ़ देने वाला) या अफ़्लह़ (ज़ियादा फ़लाह़ व कामयाबी पाने वाला) रखे। (रावी का बयान है : मैं नहीं जानता कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन नामों के साथ राफ़ेअ़ नाम का ज़िक्र फ़रमाया या नहीं !) पूछा जाएगा कि बरकत यहां मौजूद है ? तो इस के जवाब में कहा जाएगा : नहीं। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पर्दए ज़ाहिरी फ़रमाने तक इन नामों की मुमानअ़त नहीं फ़रमाई। (الادب المفرد،باب افلح،ص٢١٦،حدیث:٨٣٣)

इमाम अबू जा'फ़र त़हावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "अगर मैं आयिन्दा साल तक ज़िन्दा रहा तो ज़रूर इन नामों (या'नी अफ़्लह़, नाफ़ेअ़, बरकत, यसार) को रखने से मन्अ़ कर दूंगा" के

www.dawateislami.net

तह़्त फ़रमाते हैं : इस में इस बात पर दलालत है कि इन नामों का रखना ह़राम नहीं है क्यूंकि अगर ह़राम होता तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर इन के रखने से मन्अ़ फ़रमा देते और मन्अ़ करने को दूसरे वक़्त तक मुअख़्ख़र न फ़रमाते और एक रिवायत में है कि "आप मन्अ़ करने से ख़ामोश रहे ह़त्ता कि आप का विसाल हो गया" इस में इस बात पर दलालत है कि नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब से मुमानअ़त इन नामों को शामिल नहीं है, जब मुआ़मला ऐसा है तो इन नामों का रखना मुबाह़ रहेगा। (مشکل الآثار، ج۱، جزء۲، ص۲۰۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बस्ती का नाम पसन्द आता तो ख़ुश होते

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी बस्ती में जाते तो उस का नाम पूछते, अगर उस का नाम पसन्द फ़रमाते तो ख़ुश होते और उस की ख़ुशी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर में देखी जाती, अगर उस का नाम नापसन्द फ़रमाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस में उस की नापसन्दीदगी महसूस होती।

(ابو داؤد، کتاب الطب، باب فی الطیرۃ، ۴/۲۵، حدیث: ۳۹۲۰)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : हमारे हां पंजाब में बा'ज़ दीहात के नाम हैं : नूरपुर, मदीना, जमालपुर ऐसे नाम बड़े मुबारक हैं बा'ज़ बस्तियों के नाम हैं : शैत़ानिया, ख़ूनी चक वग़ैरा येह नाम अच्छे नहीं। हुज़ूर

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बस्तियों के बुरे नाम भी नापसन्द फ़रमाते थे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/264)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बस्तियों और अ़लाक़ें के नाम भी तब्दील फ़रमा देते

जनाबे रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़मीनों, वादियों और क़बाइल के बुरे नाम भी तब्दील फ़रमा दिया करते थे, चुनान्चे, इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़फ़िरह ज़मीन (बन्जर ज़मीन) का नाम ख़ज़िरह (सर सब्ज़ ज़मीन) रखा, शा'बुज़्ज़लालह (गुमराही की वादी) नामी वादी का नाम शा'बुल हुदा (हिदायत की वादी) रखा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू ज़न्यह (ह़राम की अवलाद) का नाम तब्दील फ़रमा कर बनुर्रशदह (ह़लाल ज़ादे) रखा और बनू मुग़वियह (गुमराह कुन जगह) को बनू रिश्दह (हिदायत वाली जगह) का नाम अ़त़ा फ़रमाया।

(ابو داؤد،کتاب الادب،باب فی تغییر الاسم القبیح،۴/۳۷۶،حدیث:۴۹۵۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम के साथ अ़लाक़े का नाम भी बदल दिया

ह़ज़रते वह्ब बिन अ़म्र बिन सा'द बिन वह्ब अल जुहनी बयान करते हैं कि उन के वालिद ने अपने दादा से रिवायत की, कि दौरे जाहिलिय्यत में उन को ग़य्यान कहा जाता था, जब वोह नबिये अकरम

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? अ़र्ज़ की : **ग़य्यान** (नामुराद) । पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम ''**रश्दान**'' (कामयाब) रखा, और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया तुम्हारे अहलो इ़याल कहां रहते हैं ? अ़र्ज़ की : वादिये **ग़वा** (नामुराद वादी) में । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह ''**रशाद**'' (कामयाब वादी) में रहते हैं । (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के बुरे नाम के साथ उन की वादी का बुरा नाम भी बदल दिया) वोह शहर आज तक ''**रशाद**'' के नाम से पहचाना जाता है ।[1]

(الاصابۃ،۲/۴۰۳،رقم:۲۶۶۰،ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1 .....सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक अदा को अदा करते हुए शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने भी बा'ज़ शहरों के नाम (तन्ज़ीमी त़ौर पर) तब्दील किये हैं मसलन सियालकोट का नाम अपने पीरो मुर्शिद सय्यिदी क़ुत्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की निस्बत से ''ज़ियाकोट'', फ़ैसलाबाद का नाम मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد की निस्बत से ''सरदाराबाद'', लाड़काना का नाम मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की निस्बत से ''फ़ारूक़ नगर'' और ह़ैदराबाद का नाम महबूबे अ़त्तार मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की निस्बत से ''ज़म ज़म नगर'' रखा ।

www.dawateislami.net

चश्मे का नाम तब्दील फ़रमा दिया

एक ग़ज़वे में रसूले सक़लैन, सुल्ताने कौनैन, रहमते दारैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "बैसान" नामी खारी पानी के चश्मे से गुज़रे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह नो'मान मीठे पानी का चश्मा है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का नाम बदल दिया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने वोह चश्मा ख़रीद कर सदक़ा कर दिया, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : त़लह़ा ! तुम तो फ़य्याज़ हो, इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को "त़लह़तुल फ़य्याज़" कहा जाता था। (الاصابة،۳/۴۳۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुंवें का नाम तब्दील फ़रमा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमय्या मख़ज़ूमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में एक कुंवां था जिस का नाम "**अ़सीर** (मुश्किल)" था, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का नाम "यसीरह (आसान)" रखा।

(النهاية فی غريب الحديث والأثر للجزری،باب العين مع السين ۳/۲۱۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात के पेशे नज़र हमें चाहिए कि हम न सिर्फ़ अपने बच्चों का नाम शरीअ़त के मुत़ाबिक़ रखें बल्कि ख़ुद अपने नाम पर भी ग़ौर कर लें, अगर मा'नवी त़ौर पर नाम ग़लत़ और ख़िलाफ़े शरीअ़त हो तो उ़लमाए अहले सुन्नत से मश्वरे के

www.dawateislami.net

बा'द शरअ़न जाइज़ और अच्छा नाम रख लें, इस के साथ साथ अपनी दुकान, घर, मह़ल्ले, गाऊं, कारख़ाने, कारख़ाने में बनने वाली चीज़ों (Products) का नाम भी शरीअ़त के मुत़ाबिक़ कर लेना चाहिए।

"क़ादिरी अगरबत्ती" से "क़ौमी अगरबत्ती"

दा'वते इस्लामी के बनने से बहुत पहले की बात है कि शैख़े त़रीक़त अमीरे अह़ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रिज़्क़े ह़लाल के हुसूल के लिये अगरबत्ती तय्यार कर के फ़रोख़्त करने का काम शुरूअ़ किया और उस का नाम "क़ादिरी अगरबत्ती" रखा। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कुछ इस त़रह़ फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ने क़ादिरी अगरबत्ती के पेकेट को ज़मीन पर पड़ा पाया जो बुरी त़रह़ कुचला हुवा था, मैं डर गया कि कहीं ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से पूछ लिया कि कारोबार चमकाने के लिये तुम्हें मेरा ही नाम मिला था ! मेरा नाम चन्द सिक्कों की ख़ात़िर ज़मीन पर रौंदने के लिये छोड़ दिया ! उसी वक़्त मैं ने दिल में ठान ली कि मैं अपनी अगरबत्ती का नाम "क़ौमी अगरबत्ती" रखूंगा, यूं "क़ादिरी अगरबत्ती" क़ौमी अगरबत्ती हो गई।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (ALPHABETS) का अदब करना चाहिए क्यूं कि साह़िबे तफ़्सीरे सावी शरीफ़ के क़ौल के मुत़ाबिक़ दुन्या में बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं। (تفسیر صاوی، ۱/۳۰) अगरबत्ती का पेकेट ज़मीन पर फेंकने में अगर्चे अमीरे अहले सुन्नत का अ़मल दख़्ल नहीं था लेकिन

www.dawateislami.net

आप की अ़क़ीदत ने गवारा न किया कि मेरे ग़ौसे पाक की प्यारी प्यारी निस्बत "क़ादिरी" यूं क़दमों तले रौंदी जाए, चुनान्चे आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अगरबत्ती का नाम ही तब्दील कर लिया। अमीरे अहले सुनत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस अन्दाज़ में ऐसे इस्लामी भाइयों के सीखने के लिये बहुत कुछ है जो मदीना स्टोर, क़ादिरी होटल, ग़ौसिय्या जनरल स्टोर, अ़त्तारी सुपर स्टोर वग़ैरा के नाम से दुकानें खोलते हैं इसी नाम के लिफ़ाफ़े छपवाते हैं फिर येह लिफ़ाफ़े ज़मीन पर गिरे पड़े दिखाई देते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लिबास का भी नाम रखते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नया कपड़ा चाहे इमामा हो या क़मीस पहनते तो उस का नाम रखते।[1] हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक इमामा शरीफ़ का नाम "सह़ाब (बादल)" था। (شرح الزرقانی علی المواهب، فی تکمیل، ٥/٩٧)

चश्मे का नाम रखा

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर के मक़ाम पर वाक़ेअ़ एक चश्मे का नाम قِسْمَةُ الْمَلَائِكَة (फ़िरिश्तों का हिस्सा /फ़िरिश्तों की तक़्सीम)" रखा। (خلاصة الوفا بأخبار دار المصطفى، الفصل الثامن، ٢/١١٧٩)

مدینہ

[1] ابو داوٗد، كتاب اللباس، باب ما يقول إذا لبس ثوبا جديدا، ٤/ ٥٩، حديث: ٤٠٢٠

www.dawateislami.net

रह्मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सुवारियों के नाम

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी के घोड़ों के नाम "**लह़ीफ़** (लम्बी दुम वाला)"(1) "**ज़रिब** (मज़्बूत़ व त़ाक़तवर)", "**लिज़ाज़** (तेज़ रफ़्तार)"(2) और सियाह घोड़ा था जिसे "**सक्ब** (तेज़ रफ़्तार)" कहा जाता था और ज़ीन का नाम "**दाज** (कुशादा)" था, एक सियाही माइल सफ़ेद ख़च्चर था जिसे "**दुलदुल**" कहा जाता था, एक ऊंटनी जिसे "**क़स्वा** (तेज़ चलने वाली)" के नाम से मौसूम किया जाता था जब कि दराज़ गोश का नाम "**या'फ़ूर** (तेज़ रफ़्तार)" था।

(المعجم الکبیر للطبرانی، باب العین ، ۱۱/ ۹۲، حدیث: ۱۱۲۰۸)

मुबारक बकरियों के नाम

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दस दूध देने वाली बकरियां थीं : (1) अ़ज्वह (2) ज़म ज़म (3) सुक़्या (4) बरकत (5) वर्सत (6) इत़लाल (7) इत़राफ़ (8) कुमरह (9) ग़ौसह या ग़ौसिय्यह (10) और एक बकरी का नाम युम्न था।

(سبل الهدی والرشاد، الباب السادس فی شیاهه ، ومنائحه صلی اللہ علیہ وسلم، ۷/ ۴۱۲)

हुज़ूरे अनवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़्तलिफ़ अश्या के नाम

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तल्वार जिस का दस्ता और दस्ते का किनारा दोनों चांदी के थे उस का

مدینہ

1: الجامع الصغیر، جزء: ۲، ص ۴۲۵، حدیث: ۶۸۵۵

2: فیض القدیر ، حرف الکاف، باب کان وهی شمائل شریفه ، ۵/ ۲۲۵، حدیث : ۶۸۵۶

नाम "**ज़ुलफ़िक़ार**" था, कमान का नाम "**सदाद**", तरकश (तीर रखने के खोल) का नाम "**जुमअ़**" ज़िरह जो तांबे से मुज़य्यन थी उस का नाम "**ज़ातुल फुज़ूल**","**नब्अ़ा**" नामी नेज़ा, एक ढाल का नाम "**ज़क़न**" और एक सफ़ेद रंग की ढाल जिस का नाम "**मूजिज़**" था, चटाई का नाम "**कज़**" छड़ी का नाम "**नमिर**" मश्कीज़े का नाम "**सादिर**" और आईने को "**मुदिल्ला**" कहा जाता था, क़ैंची का नाम "**जामेअ़**" और तल्वार का नाम "**मश्शूक़**" था।

(معجم کبیر، ۱۱/ ۹۲،حدیث: ۱۱۲۰۸ و مجمع الزوائد ۵/ ۴۹۵،حدیث: ۹۴۰۸)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक बरतनों के नाम

एक बड़ा सा पियाला जिस का नाम "**सअ़ह** (कुशादा)" था, दूसरा पियाला जो बहुत बड़ा था जिसे चार आदमी उठाते थे उस का नाम "**ग़र्रा** (चमकदार)" था। (الجامع الصغیر، جزء ۲، ص ۴۲۵، حدیث: ۶۸۵۹)

तीसरे पियाले का नाम "**रय्यान** (भरा हुवा)", चौथे का नाम "**मुग़ीस** (मददगार)" और पांचवें का नाम "**मुज़ब्बब** (चांदी चढ़ा हुवा)" था जिस पर चांदी के तार लगे हुए थे।

(فیض القدیر، حرف الکاف، باب کان وھی شمائل شریفة ۵۰/ ۲۲۶، حدیث: ۶۸۵۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद शुगूनी की वजह से नाम न बदलें

अगर कोई शख़्स ज़ियादा बीमार रहता हो, तंग दस्त हो, मुसलसल नाकामियों ने उसे घेर रखा हो तो शैतान उसे वस्वसा दिलाता है कि येह

www.dawateislami.net

सारी मुसीबतें तुम्हारे नाम की वज्ह से हैं लिहाज़ा तुम अपना नाम तब्दील कर लो ह़ालांकि उस का नाम बड़ी अच्छी निस्बत वाला होता है, बा'ज़ अवक़ात येह बात अ़मलिय्यात करने वाले भी कह देते हैं चुनान्चे, वोह शख़्स अपना शरअ़न जाइज़ और अच्छे मा'ना वाला बल्कि अच्छी निस्बत वाला नाम भी तब्दील कर देता है। ऐसा करना नाम से **बद शुगूनी** लेने के मुतरादिफ़ है और बद शुगूनी लेना शैत़ानी काम है जैसा कि **रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعِيَافَةُ وَالطِّيَرَةُ وَالطَّرْقُ مِنَ الْجِبْتِ या'नी अच्छा या बुरा शुगून लेने के लिये परिन्दा उड़ाना, बद शुगूनी लेना और त़र्क़ (या'नी कंकर फेंक कर या रैत में लकीर खींच कर फ़ाल निकालना) शैत़ानी कामों में से है।

(ابو داؤد، ٤/ ٢٢، حديث: ٣٩٠٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तारीख़ी नाम रखना

कई लोग तारीख़ के ह़िसाब से नाम रखने पर बहुत ज़ोर देते हैं या'नी बच्चा जिस तारीख़ व सिन में पैदा हुवा उस का ह़िसाब लगा कर नाम रखा जाता है। अगर्चे इल्मुल आ'दाद के लिह़ाज़ से नाम रखना बुज़ुर्गों से साबित है लेकिन बुज़ुर्गाने दीन अपना तारीख़ी नाम अस्ल नाम से अलग रखते थे। बहर ह़ाल अगर कोई तारीख़ के ह़िसाब से नाम रखना चाहे ताकि सिने विलादत भी मह़फ़ूज़ हो जाए तो रख सकता है लेकिन इस की कोई फ़ज़ीलत नहीं है, बेहतर येही है कि किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام, किसी सह़ाबी या किसी वली के बा बरकत नाम पर नाम रखें।

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से किसी ने **अ़र्ज़** की : हुज़ूर ! मेरे भतीजा पैदा हुवा है, इस का कोई तारीख़ी नाम तजवीज़ फ़रमा दें । **इरशाद** फ़रमाया : तारीख़ी नाम से क्या फ़ाएदा ? नाम वोह हों जिन के अह़ादीस में फ़ज़ाइल आए हैं । मेरे और भाइयों के जितने लड़के पैदा हुए मैं ने सब का नाम "**मुह़म्मद**" रखा, येह और बात है कि येही नाम **तारीख़ी** भी हो जाए । ह़ामिद रज़ा ख़ां का नाम मुह़म्मद है और इन की विलादत सि. 1292 हि. में हुई और इस नाम मुबारक के अ़दद भी बानवे हैं । एक दिक़्क़त (या'नी दुश्वारी) तारीख़ी नाम में येह है कि अस्माए हुस्ना से एक या दो जिन के आ'दाद मुवाफ़िक़े अ़ददे नामे क़ारी (या'नी पढ़ने वाले के नाम के आ'दाद के मुत़ाबिक़) हों । अ़ददे नाम दो चन्द (या'नी दुगने) कर के पढ़े जाते हैं । वोह क़ारी को इस्मे आ'ज़म का फ़ाएदा देते हैं, तारीख़ी नाम से मिक़्दार बहुत ज़ियादा हो जाएगी मसलन अगर किसी की विलादत इस सि. 1329 हि. में हुई तो इस के मुत़ाबिक़ अ़दद के अस्माए हुस्ना 2658 बार पढ़े जाएंगे और मुह़म्मद नाम होता तो एक सौ चौरासी (184) बार, दोनों में किस क़दर फ़र्क़ हुवा !

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 73)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआन से नाम निकालना

बा'ज़ लोग क़ुरआने मजीद से बच्चों का नाम निकालते हैं, अगर वोह नाम क़ुरआने पाक में किसी नबी या नेक व सालेह़ आदमी का है तब तो कोई ह़रज नहीं लेकिन बा'ज़ अवक़ात वोह क़ुरआने पाक से कोई ऐसा लफ़्ज़ नाम के लिये मुन्तख़ब कर लेते हैं जिसे मा'नवी ख़राबी

www.dawateislami.net

की वज्ह से नाम के तौ़र पर इस्ति'माल नहीं किया जा सकता। मसलन मुल्के मुर्शिद के एक देहात में एक औ़रत जो ज़रा कुरआने करीम पढ़ना जानती थी उस के यहां यके बा'द दीगरे तीन बेटियां पैदा हुईं उस ने खुद को पढ़ा लिखा समझते हुए बच्चों के नाम तजवीज़ करने के लिये कुरआने करीम से **सूरए कौसर** का इन्तिख़ाब किया चुनान्चे, बड़ी बच्ची का नाम **कौसर** रखा, दूसरी का नाम **वनहर** तजवीज़ किया और तीसरी का नाम **अब्तर** मुक़र्रर किया। कौसर के मा'ना तो ब हैसिय्यते नाम किसी ह़द तक दुरुस्त भी हैं लेकिन वनहर का मा'ना है "और तुम कुरबानी करो" जब कि आख़िरी लफ़्ज़ अब्तर के मा'ना हैं : "ख़ैर से महरूम रहने वाला" जो किसी भी त़रह़ नाम रखने के लिये मुनासिब नहीं मगर जहालत का क्या इलाज ? इसी त़रह़ एक बच्ची का नाम रखा गया मुज़बज़बीन। पूछा गया : येह क्या नाम है ? जवाब मिला : कुरआन शरीफ़ में है, ह़ालांकि मुज़बज़बीन का लफ़्ज़ उन लोगों के लिये इस्ति'माल हुवा जो कुफ़्रो ईमान के बीच में डगमगा रहे हैं, न ख़ालिस मोमिन और न खुले काफ़िर हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 196)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मुझे किसी ने फ़ोन पर बताया कि उस ने अपनी बेटी का नाम कुरआन से निकाल कर रखा है। जब नाम पूछा तो कहा : "**ज़ानिया**" (نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِك) इसी त़रह़ एक शख़्स ने अपने बेटे का नाम "**ख़न्नास**" रखा। (وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى)

बहर ह़ाल ऐसे लोगों को बत़ौरे इस्लाह़ कुछ कहा जाए तो समझते हैं कि कुरआने करीम से रखे हुए नामों पर ए'तिराज़ किया जा रहा है ! ह़ालांकि कुरआने करीम से नाम तजवीज़ करने के भी कुछ उसूल

www.dawateislami.net

हैं वरना तो कुरआन में हिमार (गधा), कल्ब (कुत्ता), ख़िन्ज़ीर (सुवर), बक़रह (गाए), फ़िरऔन (ख़ुदाई का दा'वा करने वाला मश्हूर बादशाह), हामान (मश्हूर काफ़िर) वग़ैरा के अल्फ़ाज़ भी आए हैं तो क्या इन के मा'ना और निस्बत जानने के बा'द भी कोई इन अल्फ़ाज़ को अपने बच्चे या बच्ची का नाम रखने के लिये इस्ति'माल करने पर तय्यार होगा ? यक़ीनन नहीं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक शख़्स के नाम पर नाम रखने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है :

مَا مِنْ قَوْمٍ يَكُوْنُ فِيْهِمْ رَجُلٌ صَالِحٌ فَيَمُوْتُ فَيَخْلُفُ فِيْهِمْ بِمَوْلُوْدٍ فَيُسَمُّوْنَهُ بِاسْمِهٖ اِلَّا خَلَفَهُمُ اللّٰهُ بِالْحُسْنٰى

या'नी : जिस क़ौम में कोई नेक शख़्स इन्तिक़ाल कर जाए, उस के इन्तिक़ाल के बा'द उस क़ौम में कोई बच्चा पैदा हो, और वोह उसी बुज़ुर्ग शख़्सिय्यत के नाम पर उस बच्चे का नाम रखें, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस अच्छा नाम रखने के सबब उन लोगों के लिये उस बच्चे में भी वोही नेक सिफ़ात पैदा फ़रमा देगा। (ابن عساكر، ٤٣/ ٤٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक लोगों के नाम पर नाम रखो

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नेक लोगों के नाम पर नाम रखो और अपनी हाजतें अच्छे चेहरे वालों (या'नी नेक लोगों) से तलब करो। (المسند الفردوس، ٢/ ٥٨، حديث: ٢٣٢٩)

www.dawateislami.net

नबियों के नाम पर नाम रखो

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबारका और सह़ाबए किराम व ताबेईने इज़्ज़ाम और औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नाम पर नाम रखने चाहिएं, जिस का एक फ़ाएदा तो येह होगा कि बच्चे का अपने अस्लाफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम होने की बरकत से बच्चे की ज़िन्दगी पर मदनी असरात मुरत्तब होंगे। तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के नाम पर नाम रखो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक नामों में ज़ियादा प्यारे नाम **अ़ब्दुल्लाह** व **अ़ब्दुर्रह़मान** हैं और सच्चे नाम ह़ारिस और हमाम हैं और "**ह़र्ब**" व "**मुर्रा**" बुरे नाम हैं।"

(ابو داؤد،کتاب الادب،باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴،حدیث:۴۹۵۰)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामों पर नाम रखने की तरग़ीब इस लिये दिलाई गई क्यूंकि येह ह़ज़रात इन्सानों के सरदार हैं, इन के अख़्लाक़ सब से बेहतर, इन के आ'माल तमाम आ'माल से अच्छे और इन के नाम तमाम नामों से अफ़्ज़ल हैं लिहाज़ा इन के नाम पर नाम रखना शरफ़ व सआ़दत का बाइ़स है। (فیض القدیر، ۳/۳۲۴)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : **ह़ारिस** के मा'ना हैं कमाऊ। **ह़र्स** कहते हैं कमाई को। "**हमाम**" के मा'ना हैं क़स्द व इरादा

www.dawateislami.net

करने वाला और **हम्म** कहते हैं इरादे को। कोई शख़्स कमाई या इरादे से ख़ाली नहीं होता लिहाज़ा येह नाम बहुत सच्चे हैं, नाम मुत़ाबिक़ काम के हैं। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) **ह़र्ब** के मा'ना हैं जंग व ख़ूं रैज़ी, **मुर्रा** के मा'ना हैं झगड़ालू या कड़वी त़बीअ़त का आदमी। **मुर्रा** शैत़ान का नाम भी है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/425)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

महबूबाने ख़ुदा के नामों पर नाम रखना मुस्तह़ब है

फ़ी ज़माना येह रवाज भी ज़ोर पकड़ चुका है कि अपने बच्चों का नाम रखने के लिये नाविलों, टीवी डिरामों और फ़िल्मों के अदाकारों के नाम भी चुन लिये जाते हैं, ह़ालांकि मुस्तह़ब येह है कि **अल्लाह** वालों के नाम पर नाम रखा जाए, चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : ह़दीस से साबित कि महबूबाने ख़ुदा अम्बिया व औलिया علیهم الصلاة والثنا के अस्माए त़य्यिबा पर नाम रखना मुस्तह़ब है जब कि इन के मख़्सूसात से न हो।[1] (फ़तावा रज़विय्या, 24/685) बहारे शरीअ़त में है : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्माए त़य्यिबा और सह़ाबा व ताबेईन व बुज़ुर्गाने दीन के नाम पर नाम रखना बेहतर है। उम्मीद है कि इन की बरकत बच्चे के शामिले ह़ाल हो। (बहारे शरीअ़त, 3/356)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 ....मसलन **मुह़र्रिम** : ह़राम करने वाला

www.dawateislami.net

नवासों का नाम ह़सन और हुसैन रखा

ह़दीस में है सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और इरशाद फ़रमाया : मुझे मेरा बेटा दिखाओ ! तुम ने उस का क्या नाम रखा ? मौला अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ की : ह़र्ब । फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह ह़सन है। फिर सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : मुझे मेरा बेटा दिखाओ ! तुम ने उस का क्या नाम रखा ? मौला अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ की : ह़र्ब । फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह हुसैन है, फिर इमामे मोह़सिन की विलादत पर वोही फ़रमाया तो मौला अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने वोही अ़र्ज़ की । फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह मोह़सिन है फिर फ़रमाया : मैं ने अपने बेटों के नाम दावूद (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के बेटों पर रखे ।

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند علی ابن ابی طالب، ۱/۲۱۱، ۲۱۲، حدیث: ۲۷۶۹ واسد الغابۃ، ۵/۷۷، رقم: ۴۶۸۸)

शबर, शुबैर, मुशबिर, ह़सन, हुसैन, मोह़सिन इन से हम वज़्न व हम मा'ना हैं, इस से मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को तम्बीह हुई कि अवलाद के नाम अख़्यार के नामों पर रखने चाहिएं लिहाज़ा इन के बा'द अपने साह़िबज़ादों के नाम अबू बक्र, उ़मर, उ़समान, अ़ब्बास वैग़रहा रखे । (फ़तावा रज़विय्या, 29/80)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अपने शहज़ादे का नाम हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के नाम पर रखा

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रात मेरे हां बेटा हुवा है, मैं ने अपने बाप (या'नी ख़लीलुल्लाह हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام) के नाम पर उस का नाम **इब्राहीम** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) रखा है।

(مسلم،کتاب الفضائل،باب رحمته صلی اللہ علیہ وسلم الصبیان ۔۔الخ ص١٢٦٦،حدیث:٢٣١٥)

जब कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मेरे हां बच्चे की विलादत हुई, मैं उसे नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लाया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम **इब्राहीम** रखा, उसे खजूर चबा कर घुट्टी दी, उस के लिये बरकत की दुआ़ की और मेरे ह़वाले कर दिया। ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सब से बड़े बेटे थे।

(بخاری،کتاب العقیقة،باب تسمیة المولود غداة یولد لمن لم یعق وتحنیکه ، ٣/٥٤٦ حدیث:٥٤٦٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुलासए किताब

۞ बच्चे का अच्छा नाम रखना चाहिए ۞ मैदाने महशर में दुन्या में रखे गए नाम से पुकारा जाएगा ۞ सातवें दिन नाम रखना बेहतर है पहले भी रखा जा सकता है ۞ नाम रखना वालिद की ज़िम्मेदारी है ۞ बच्चे का नाम मुन्तख़ब करते वक़्त शरई अहकाम को पेशे नज़र रखना चाहिए

www.dawateislami.net

❁ नाम रखने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं ❁ कुछ नाम ऐसे हैं जिन का रखना अफ़्ज़ल, कुछ का रखना जाइज़, कुछ नाम ना मुनासिब और कुछ नाजाइज़ हैं ❁ अगर किसी मदनी मुन्ने का नाम "अ़ब्द" से शुरूअ़ करना हो तो सब से अफ़्ज़ल नाम अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान हैं ❁ मुह़म्मद नाम बड़ा प्यारा है येह नाम रखने के बड़े फ़वाइद व समरात हैं ❁ मुह़म्मद बख़्श, अह़मद बख़्श, गुलामे नबी वग़ैरा नाम रखना जाइज़ है ❁ मुह़म्मद नबी, अह़मद नबी, नबिय्युज़मान, मुह़म्मद रसूल, अह़मद रसूल, नाम रखना जाइज़ नहीं ❁ मुईज़ुद्दीन के मा'ना हैं "दीन को पनाह देने वाला" और अपना नाम ऐसा रखना सख़्त अ़ज़ीम तज़्कियए नफ़्स व खुद सिताई है और वोह ह़राम है (फ़तावा रज़विय्या, 24/671) ❁ त़ाहा, यासीन नाम भी न रखे जाएं ❁ ग़फ़ूरुद्दीन (नाम) भी सख़्त क़बीह़ व शनीअ़ है ❁ नामों की एक क़िस्म कुफ़्फ़ार से मुख़तस्स है जैसे जिर्जिस, पुत़रुस और यूह़न्ना वग़ैरा इस नौअ़ (या'नी क़िस्म) के नाम मुसलमानों के लिये रखने जाइज़ नहीं ❁ बुरे नाम को बदल देना चाहिए ❁ अपने घर, मह़ल्ले, दुकान और फ़ेकटरी वग़ैरा का नाम भी अच्छा रखना चाहिए ❁ ऐसे नाम नहीं रखने चाहिएं जिन में खुद सिताई बहुत नुमायां होती हो ❁ नेकों के नाम पर नाम रखना बाइ़से बरकत है ❁ ह़त्तल मक़्दूर बुज़ुर्गाने दीन से नाम रखवाना चाहिए ❁ लोगों के बुरे नाम रखना जाइज़ नहीं है ❁ कुन्यत रखना सुन्नत है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बच्चों और बच्चियों के लिये 538 प्यारे प्यारे नाम

बच्चों के लिये 391 प्यारे प्यारे नाम

''अ़ब्द'' की इज़ाफ़त के साथ 59 रह़मत भरे नाम

عَبْدُ اللّٰه	(अ़ब्दुल्लाह = अल्लाह का बन्दा)
عَبْدُ الرَّحْمٰن	(अ़ब्दुर्रह़मान = ''बहुत मेहरबान'' का बन्दा)
عَبْدُ الْاَحَد	(अ़ब्दुल अह़द = वाह़िद व यक्ता का बन्दा)
عَبْدُ الْبَارِی	(अ़ब्दुल बारी = बनाने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَاسِط	(अ़ब्दुल बासित़ = कुशादगी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَاقِی	(अ़ब्दुल बाक़ी = हमेशा रहने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَصِیْر	(अ़ब्दुल बसीर = देखने वाले का बन्दा)
عَبْدُ التَّوَّاب	(अ़ब्दुत्तव्वाब = तौबा क़बूल करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْجَبَّار	(अ़ब्दुल जब्बार = अ़ज़मत वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْجَلِیْل	(अ़ब्दुल जलील = बुज़ुर्गी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَسِیْب	(अ़ब्दुल ह़सीब = काफ़ी होने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَفِیْظ	(अ़ब्दुल ह़फ़ीज़ = ह़िफ़ाज़त करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَق	(अ़ब्दुल ह़क़ = ख़ुदाई के लाइक़ का बन्दा)
عَبْدُ الْحَكَم	(अ़ब्दुल ह़कम = फ़ैसला करने वाले का बन्दा)

www.dawateislami.net

عَبْدُالْحَكِيْم	(अ़ब्दुल ह़कीम = ह़िक्मत वाले का बन्दा)
عَبْدُالْحَلِيْم	(अ़ब्दुल ह़लीम = ह़िल्म (या'नी ज़ब्त़ व तह़म्मुल) वाले का बन्दा)
عَبْدُالْحَمِيْد	(अ़ब्दुल ह़मीद = ख़ूबियों वाले का बन्दा)
عَبْدُالْحَيّ	(अ़ब्दुल ह़य्य = हमेशा ज़िन्दा रहने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْخَالِق	(अ़ब्दुल ख़ालिक़ = पैदा करने वाले का बन्दा)
عَبْدُالرَّافِع	(अ़ब्दुर्राफ़िअ़ = बुलन्द करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الرَّحِيْم	(अ़ब्दुर्रह़ीम = "रह़मत वाले" का बन्दा)
عَبْدُالرَّزَّاق	(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ = रिज़्क़ देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالرَّشِيْد	(अ़ब्दुर्रशीद = सीधी तदबीर वाले का बन्दा)
عَبْدُالرَّءُوْف	(अ़ब्दुर्रऊफ़ = निहायत मेहरबान का बन्दा)
عَبْدُالسَّلَام	(अ़ब्दुस्सलाम = सलामती देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالسَّمِيْع	(अ़ब्दुस्समीअ़ = सुनने वाले का बन्दा)
عَبْدُالشَّكُوْر	(अ़ब्दुश्शकूर = क़द्र फ़रमाने वाले का बन्दा)
عَبْدُالصَّبُوْر	(अ़ब्दुस्सबूर = बुर्दबार (या'नी बा वुजूद कुदरते कामिला के गुनाहों पर जल्दी सज़ा न देने वाले) का बन्दा)
عَبْدُالصَّمَد	(अ़ब्दुस्समद = बे नियाज़ का बन्दा)
عَبْدُالْعَزِيْز	(अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ = इ़ज़्ज़त वाले का बन्दा)
عَبْدُالْعَظِيْم	(अ़ब्दुल अ़ज़ीम = अ़ज़मत वाले का बन्दा)
عَبْدُالْعَلِيْم	(अ़ब्दुल अ़लीम = इ़ल्म वाले का बन्दा)
عَبْدُالْغَفَّار	(अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार = बहुत बख़्शने वाले का बन्दा)

www.dawateislami.net

عَبْدُالْغَفُوْر	(अ़ब्दुल ग़फ़ूर = बख़्शने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْغَنِی	(अ़ब्दुल ग़नी = हर चीज़ से बे परवा का बन्दा)
عَبْدُالْفَتَّاح	(अ़ब्दुल फ़त्ताह = बेहतरीन फ़ैसला करने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْقَادِر	(अ़ब्दुल क़ादिर = कुदरत वाले का बन्दा)
عَبْدُالْقُدُّوس	(अ़ब्दुल कुद्दूस = हर ऐब से पाक का बन्दा)
عَبْدُالْقَوِی	(अ़ब्दुल क़वी = कुव्वत देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْكَبِيْر	(अ़ब्दुल कबीर = सब से बड़े का बन्दा)
عَبْدُالْكَرِيْم	(अ़ब्दुल करीम = बहुत करम फ़रमाने वाले का बन्दा)
عَبْدُاللَّطِيْف	(अ़ब्दुल लतीफ़ = लुत्फ़ो करम करने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْمَاجِد	(अ़ब्दुल माजिद = बुज़ुर्गी वाले का बन्दा)
عَبْدُالْمَتِيْن	(अ़ब्दुल मतीन = कुव्वत वाले का बन्दा)
عَبْدُالْمُجِيْب	(अ़ब्दुल मुजीब = दुआएं क़बूल करने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْمَجِيْد	(अ़ब्दुल मजीद = इ़ज़्ज़त वाले का बन्दा)
عَبْدُالْمَلِک	(अ़ब्दुल मलिक = बादशाह का बन्दा)
عَبْدُالْمُؤْمِن	(अ़ब्दुल मोमिन = अम्न देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالنَّافِع	(अ़ब्दुन्नाफ़ेअ़ = नफ़्अ़ देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالنُّوْر	(अ़ब्दुन्नूर = नूर वाले का बन्दा)
عَبْدُالْوَاجِد	(अ़ब्दुल वाजिद = कुदरत वाले का बन्दा)
عَبْدُالْوَاحِد	(अ़ब्दुल वाहिद = ज़ात व सिफ़ात में यक्ता का बन्दा)

www.dawateislami.net

عَبْدُالْوَارِث	(अ़ब्दुल **वारिस** = वारिस (या'नी हमेशा बाक़ी रहने वाले) का बन्दा)
عَبْدُالْوَاسِع	(अ़ब्दुल **वासिअ़** = वुस्अ़त देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْوَدُوْد	(अ़ब्दुल **वदूद** = बहुत दोस्त रखने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْوَكِيْل	(अ़ब्दुल **वकील** = कारसाज़ (या'नी काम बनाने वाले) का बन्दा)
عَبْدُالْوَلِى	(अ़ब्दुल **वली** = हिमायती का बन्दा)
عَبْدُالْوَهَّاب	(अ़ब्दुल **वह्हाब** = बहुत देने वाले का बन्दा)
عَبْدُالْهَادِى	(अ़ब्दुल **हादी** = हिदायत देने वाले का बन्दा)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे अक़्दस

अ़र्ज़ : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे अक़्दस क्या है ?

इरशाद : हुज़ूर के अ़लमे ज़ात (ज़ाती नाम) दो हैं : कुतुबे साबिक़ा में **अह़मद** है और क़ुरआने करीम में **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्माए सिफ़ात (या'नी सिफ़ाती नाम) बे गिनती हैं। अ़ल्लामा अह़मद ख़त़ीब क़स्त़लानी (عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى) ने **पांच सौ** जम्अ़ फ़रमाए। (المواهب اللدنيه، الفصل الاول فى ذكر اسمائه الشريفة .....الخ، ۱/۳۶۶ملخصًا)

सीरते शामी में **तीन सौ** और इज़ाफ़ा किये और मैं ने **छे सौ** और मिलाए। कुल **चौदह सौ** हुए और हुज़ूर के अस्मा हर त़बक़े में मुख़्तलिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना हैं, दरिया में और नाम हैं पहाड़ों में और।

अ़र्ज़ : येह कसरते अस्मा कसरते सिफ़ात पर दलालत करती है ?

इरशाद : हां : (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 92)

www.dawateislami.net

शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 119 बरकत वाले नाम

اَحْسَن	(**अह़सन** = वोह ज़ात जिस में अच्छी सिफ़ात जम्अ़ हों)
اَحْشَم	(**अह़शम** = ज़ियादा वक़ार व इत़मीनान वाला)
اَزْهَر	(**अज़हर** = सफ़ेद रंगत वाला)
اَعْظَم	(**आ'ज़म** = बरतर)
اَكْرَم	(**अकरम** = बहुत मेहरबान, बहुत सख़ी)
اَمَان	(**अमान** = पनाह, ह़िफ़ाज़त)
اَمْجَد	(**अमजद** = बुज़ुर्गी और शरफ़ वाला)
اَمِين	(**अमीन** = अमानतदार)
بَدْر	(**बद्र** = मुकम्मल चांद)
بُرْهَان	(**बुरहान** = हुज्जत, दलील जिस में शक शुबा न हो)
بَشِير	(**बशीर** = ख़ुश ख़बरी देने वाला)
جَوَّاد	(**जव्वाद** = सख़ी)[1]
حَاتِم	(**ह़ातिम** = फ़ैसला करने वाला)
حَامِد	(**ह़ामिद** = ह़म्द करने वाला)
حَبِيب	(**ह़बीब** = प्यारा)
حَسِيب	(**ह़सीब** = काफ़ी, इ़ज़्ज़त व शरफ़ वाली हस्ती)
حَكِيم	(**ह़कीम** = साह़िबे ह़िक्मत)
حَلِيم	(**ह़लीम** = बुर्दबार, बरदाश्त वाला)

1 ....**सख़ी** वोह जो ख़ुद खाए औरों को भी खिलाए, **जव्वाद** वोह जो ख़ुद न खाए औरों को खिलाए इसी लिये रब عَزَّوَجَلَّ को **सख़ी** नहीं कहते **जव्वाद** कहते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/199)

www.dawateislami.net

حَمَّاد	(**ह़म्माद** = कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करने वाला)
حَنِيْف	(**ह़नीफ़** = इस्लाम पर साबित क़दम)
دَامِغ	(**दामिग़** = बात़िल की सरकोबी करने वाला)
رَاغِب	(**राग़िब** = माइल, ख़्वाहिश मन्द)
رَحِيم	(**रह़ीम** = रह़्म वाला)
رَشِيد	(**रशीद** = सीधा, इस्तिक़ामत वाला)
رَفِيق	(**रफ़ीक़** = बहुत ज़ियादा मेहरबानी फ़रमाने वाला)
رَءُوف	(**रऊफ़** = नर्म दिल)
زَاهِد	(**ज़ाहिद** = दुन्या से बे रग़बत)
زَاهِر	(**ज़ाहिर** = चमकदार रंगत वाला, रोशन चेहरे वाला)
زَيْن	(**ज़ैन** = सूरतो सीरत दोनों ए'तिबार से कामिल व ख़ूब सूरत)
سَاجِد	(**साजिद** = सजदा करने वाला)
سَخِي	(**सख़ी** = सख़ावत करने वाला)
سَدِيْد	(**सदीद** = दुरुस्त करने वाला)
سِرَاج	(**सिराज** = सूरज)
سَعِيد	(**सईद** = सआ़दत मन्द, ख़ुश नसीब)
سُلْطان	(**सुल्त़ान** = बादशाह, हुज्जत, क़वी दलील)
سَيْف	(**सैफ़** = तल्वार)
شَاكِر	(**शाकिर** = शुक्र अदा करने वाला)

www.dawateislami.net

شَاهِد	(**शाहिद** = गवाही देने वाला)
شَرِيف	(**शरीफ़** = बुलन्द मर्तबा)
شَفِيع	(**शफ़ीअ़** = शफ़ाअ़त करने वाला)
شَفِيق	(**शफ़ीक़** = मेहरबान, हमदर्द)
شَهِير	(**शहीर** = शोहरत वाला)
صَابِر	(**साबिर** = सब्र करने वाला)
صَادِق	(**सादिक़** = सच्चा)
ضِيَاء	(**ज़िया** = रोशनी, चमक)
طَاهِر	(**त़ाहिर** = पाक)
طَبِيب	(**त़बीब** = बीमारों का इलाज करने वाला)
طَيِّب	(**त़य्यिब** = पाक)
ظَاهِر	(**ज़ाहिर** = वाज़ेह़ और रोशन)
عَابِد	(**आ़बिद** = इबादत गुज़ार)
عَادِل	(**आ़दिल** = अ़द्ल करने वाला)
عَارِف	(**आ़रिफ़** = पहचानने वाला)
عَاقِب	(**आ़क़िब** = सब से आख़िर में आने वाला, जानशीन)
عَزِيز	(**अ़ज़ीज़** = ग़ालिब)
عَظِيم	(**अ़ज़ीम** = बुज़ुर्गी और अ़ज़मत वाला)
عِمَاد	(**इमाद** = सुतून, क़ाबिले ए'तिमाद सरदार, सख़्तियों में लोग जिस की त़रफ़ भाग कर आएं)

www.dawateislami.net

غِيَاث	(**ग़ियास** = कसीर बारिश)
فَاتِح	(**फ़ातेह़** = खोलने वाला, शुरूअ़ करने वाला)
فَاضِل	(**फ़ाज़िल** = कामिल इ़ल्म वाला, कसीर फ़ज़ीलत वाला)
قَاسِم	(**क़ासिम** = तक़्सीम करने वाला)
قَمَر	(**क़मर** = चांद)
قَوِی	(**क़वी** = कुव्वत वाला)
كَامِل	(**कामिल** = मुकम्मल)
كَرِيم	(**करीम** = सख़ी)
كَفِيْل	(**कफ़ील** = कफ़ालत करने वाला)
كَوْكَب	(**कौकब** = रोशन तारा)
لَبِيْب	(**लबीब** = अ़क़्लमन्द, दाना)
مَاجِد	(**माजिद** = क़ाबिले एह़तिराम, मुअ़ज़्ज़ज़ आदमी)
مَامُوْن	(**मामून** = जिस के पास अमानत रखने पर ए'तिमाद हो)
مُبَارَک	(**मुबारक** = बाइ़से बरकत, नेक, सईद)
مُبَشِّر	(**मुबश्शिर** = ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला)
مُبِيْن	(**मुबीन** = रोशन, ज़ाहिर)
مَتِيْن	(**मतीन** = मज़बूत़)
مُجَاهِد	(**मुजाहिद** = जिहाद करने वाला)
مُجْتَبٰی	(**मुजतबा** = मुन्तख़ब शुदा)

www.dawateislami.net

مُجِیْب	(**मुजीब** = जवाब देने वाला, ह़ाजत रवाई करने वाला)
مَحْفُوْظ	(**महफ़ूज़** = वोह शख़्सिय्यत जिस की हिफ़्ज़त की गई)
مُحَمَّد	(**मुह़म्मद** = जिस की ता'रीफ़ की जाए)
مَحْمُوْد	(**महमूद** = ता'रीफ़ के क़ाबिल)
مُخْتَار	(**मुख़्तार** = चुना हुवा, मुन्तख़ब)
مُدَّثِّر	(**मुद्दस्सिर** = चादर ओढ़ने वाला)
مُرْتَضٰی	(**मुर्तज़ा** = बरगुज़ीदा, बुज़ुर्गी वाला)
مُزَّمِّل	(**मुज़्ज़म्मिल** = कम्बल पोश)
مُسْتَجِیْب	(**मुस्तजीब** = इत़ाअ़त करने वाला)
مُسْتَقِیْم	(**मुस्तक़ीम** = सीधे रास्ते पर चलने वाला)
مَسْعُوْد	(**मसऊ़द** = सआ़दत मन्द)
مَشْهُود	(**मश्हूद** = गवाही दिया गया)
مِصْبَاح	(**मिस्बाह़** = चराग़)
مُصَدِّق	(**मुसद्दिक़** = तस्दीक़ करने वाला)
مُصْطَفٰی	(**मुस्त़फ़ा** = चुना हुवा)
مُطِیْع	(**मुत़ीअ़** = इत़ाअ़त गुज़ार)
مُظَفَّر	(**मुज़फ़्फ़र** = वोह हस्ती जिसे दुश्मनों पर फ़त्ह़ अ़त़ा की गई हो)
مُعَظَّم	(**मुअ़ज़्ज़म** = बुज़ुर्ग, वाजिबुत्ता'ज़ीम)
مُعَلِّم	(**मुअ़ल्लिम** = सिखाने वाला)

www.dawateislami.net

مُعِین	(**मुईन** = मददगार)
مُقْتَصِد	(**मुक़्तसिद** = दरमियानी चाल चलने वाला)
مُکَرَّم	(**मुकर्रम** = इ़ज़्ज़त वाला)
مُنْصِف	(**मुन्सिफ़** = इन्साफ़ करने वाला)
مَنْصُور	(**मन्सूर** = मदद याफ़्ता, नुस्रत याफ़्ता)
مُنِیْب	(**मुनीब** = हुक्म मानने वाला)
مُنِیر	(**मुनीर** = रोशन करने वाला)
نَاسِک	(**नासिक** = इबादत करने वाला)
نَاشِر	(**नाशिर** = किसी चीज़ के लपेट लेने के बा'द उसे ज़ाहिर करने वाला)
نَاصِب	(**नासिब** = दीन के अह्काम को बयान करने वाला)
ناصِح	(**नासेह़** = नसीह़त करने वाला)
ناصِر	(**नासिर** = मदद करने वाला)
نَجْم	(**नज्म** = सितारा)
نَجِیْب	(**नजीब** = अच्छे नसब वाला, पसन्दीदा)
نَجِیْد	(**नजीद** = राहनुमा, माहिर)
نَذِیر	(**नज़ीर** = डराने वाला)
نَقِیْب	(**नक़ीब** = सरदार, कफ़ालत करने वाला)
نُوْر	(**नूर** = रोशनी)
هُمَام	(**हुमाम** = बा अ़ज़मत बादशाह)

www.dawateislami.net

وَاجِد	(**वाजिद** = आ़लिम, ग़नी)
وَاسِط	(**वासित़** = दरमियाना)
وَاسِع	(**वासेअ़** = कसरत से देने वाला)
وَاعِد	(**वाइद** = वा'दा करने वाला)
وَسِيم	(**वसीम** = ह़सीन चेहरे वाला, ख़ूब सूरत)
وَلِی	(**वली** = **अल्लाह** का दोस्त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

26 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अ़ज़मत वाले नाम

सदरुश्शरीआ़, बदरुत़्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से हमारे हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक **अल्लाह** तआ़ला ने बहुत से नबी भेजे, बा'ज़ का सरीह़ ज़िक्र क़ुरआने मजीद में है और बा'ज़ का नहीं। (बहारे शरीअ़त, **1/48**)

مُحَمَّد	(**मुह़म्मद** = जिस की बहुत ता'रीफ़ की जाए)
آدَم	(**आदम** = मिट्टी से पैदा होने वाले)
اِبراهيم	(**इब्राहीम** = मेहरबान बाप)
اِدرِيس	(**इदरीस** = दर्स देने वाला)
اِسحاق	(**इस्ह़ाक़** = बहुत मुस्कुराने वाला)
اِسماعيل	(**इस्माईल** = **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त करने वाला)
اِلياس	(**इल्यास** = न भागने वाला बहादुर शख़्स)

www.dawateislami.net

اَیُّوب	(**अय्यूब** = फ़रमां बरदार)
دَانِیال	(**दानियाल** = फ़ैसलए इलाही)
داوٗد	(**दावूद** = महबूबे इलाही)
ذُوالْکِفْل	(**ज़ुलकिफ़्ल** = ज़िम्मा लेने वाला)
زَکَرِیَّا	(**ज़करिय्या** = **अल्लाह** का ज़िक्र करने वाला)
سُلَیمان	(**सुलैमान** = बे ऐब शख़्स)
شُعَیب	(**शुऐब** = छोटी जमाअ़त)
صالِح	(**सालेह़** = नेक, बा अ़मल)
عُزَیْر	(**उ़ज़ैर** = मददगार)
عیسٰی	(**ईसा** = शरीफ़ुन्नफ़्स)
لُوط	(**लूत़** = दिली महब्बत, छुपा हुवा)
مُوسٰی	(**मूसा** = वोह बच्चा जिसे दरख़्त और पानी के दरमियान डाला गया हो क्यूंकि क़िबती ज़बान में पानी को "मू" और दरख़्त को "सा" कहते हैं)
نُوح	(**नूह़** = ख़ौफ़े ख़ुदा से बकसरत रोने वाला)
هارُون	(**हारून** = हर दिल अ़ज़ीज़ और महबूब)
هُود	(**हूद** = तौबा कर के ह़क़ की त़रफ़ रुजूअ़ करने वाला)
یَحیٰی	(**यह़्या** = ज़िन्दगी वाला)
یَعقُوب	(**या'क़ूब** = तआ़कुब करने वाला)
یُوسُف	(**यूसुफ़** = निहायत ख़ूब सूरत)
یُونُس	(**यूनुस** = उन्स वाले, मछली वाले)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

शाहे अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 3 शहज़ादों के मुबारक नाम

قاسِم	(क़ासिम = तक़्सीम करने वाला)
عبداللّٰه	(अ़ब्दुल्लाह = अल्लाह का बन्दा)
اِبراهيم	(इब्राहीम = मेहरबान बाप)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 5 नवासों के मुक़द्दस नाम

عبداللّٰه	(अ़ब्दुल्लाह = अल्लाह का बन्दा)
حَسَن	(ह़सन = अच्छा)
حُسَين	(हुसैन = ख़ूब सूरत)
مُحْسِن	(मोह़सिन = भलाई करने वाला)
علی	(अ़ली = बुलन्द)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़शरए मुबश्शरा
(या 'नी जन्नत की ख़ुसूसी बिशारत पाने वाले दस सह़ाबए किराम) के प्यारे प्यारे नाम

ابوبَكْر	(अबू बक्र = अव लविय्यत वाले या 'नी अफ़्ज़लिय्यत वाले)

www.dawateislami.net

عُمَر	(उ़मर = ज़िन्दगी)
عثمان	(उ़समान = कोशिश करने वाला)
علی	(अ़ली = बुलन्द)
طَلْحَه	(त़लह़ा = ख़ाली पेट)
زُبَیر	(ज़ुबैर = त़ाक़तवर)
عبدالرحمٰن	(अ़ब्दुर्रह़मान = बहुत मेहरबानी करने वाले का बन्दा)
سَعْد	(सा'द = ख़ुश नसीब)
سَعِیْد	(सईद = मुबारक)
ابوعُبَیده	(अबू उ़बैदा = छोटी कनीज़ वाला)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के 135 पाकीज़ा नाम

اَخْرَم	(अख़रम = वोह टीला जो किसी नशेब में उतरता हो)
اَزْهَر	(अज़हर = चमकदार व साफ़ रंग वाला)
اَسَد	(असद = शेर)
اَسْعَد	(असअ़द = बहुत कामयाब)
اَسْلَم	(असलम = ज़ियादा सलामती वाला)
اُسَیْد	(उसैद = छोटा शेर)
اَشْرَف	(अशरफ़ = ज़ियादा शराफ़त वाला)

www.dawateislami.net

اَنَس	(**अनस** = जिस से उन्स हासिल किया जाता हो, उल्फ़त, सुकूने क़ल्ब)
اَنِیس	(**अनीस** = मानूस, उन्सिय्यत (या'नी महब्बत) देने वाला)
بَدْر	(**बद्र** = चौदहवीं रात का मुकम्मल चांद)
بِلال	(**बिलाल** = पानी, हर वोह चीज़ जिस से हल्क़ को तर किया जाए)
ثابِت	(**साबित** = मुस्तक़िल मिज़ाज)
ثُمَامَه	(**सुमामा** = भरी शाख़ों वाला एक पौदा)
ثَوْبَان	(**सौबान** = तौबा करने वाला)
جابِر	(**जाबिर** = ज़ोर वाला)
جُبَیْر	(**जुबैर** = ज़बरदस्त)
جَعْفَر	(**जा'फ़र** = बहुत वसीअ़ नहर)
حابِس	(**हाबिस** = रोकने वाला)
حاتِم	(**हातिम** = बुलन्द हौसला, सख़ी, फ़ैसला करने वाला)
حاجِب	(**हाजिब** = हिफ़ाज़त करने वाला)
حارِث	(**हारिस** = कमाने वाला)
حازِم	(**हाज़िम** = दूरअन्देश, तेज़ नज़र वाला)
حاطِب	(**हातिब** = दरख़्त काट कर लकड़ियां जम्अ़ करने वाला)
حُبَاب	(**हुबाब** = महबूब, दोस्त)
حِبَّان	(**हिब्बान** = नूरानी चेहरे वाला)
حُذَیْفَه	(**हुज़ैफ़ा** = बे ऐब)

www.dawateislami.net

حُر	(**हुर** = ख़ालिस, हर क़िस्म की आमेज़िश से पाक, आज़ाद, शरीफ़)
حَسَّان	(**हस्सान** = बहुत ह़सीनो जमील)
حَكِيم	(**ह़कीम** = दाना, त़बीब, होशियार)
حَمَّاد	(**ह़म्माद** = बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ करने वाला)
حُمْرَان	(**हुमरान** = सुर्ख़ रंग वाला)
حَمزَه	(**ह़म्ज़ा** = शेर)
حُمَيْد	(**हुमैद** = बुज़ुर्ग)
حَنْظَلَه	(**ह़न्ज़ला** = एक दरख़्त का नाम)
حُنَيْف	(**हुनैफ़** = शर से ख़ैर की त़रफ़ माइल होने वाला, सीधा जिस में कोई टेढ़ापन न हो)
خالِد	(**ख़ालिद** = देरपा)
خَبَّاب	(**ख़ब्बाब** = तेज़ तेज़ चलने वाला)
خُبَيْب	(**ख़ुबैब** = गहरा गढ़ा)
خُفَاف	(**ख़ुफ़ाफ़** = होशियार व ज़हीन)
خَلَّاد	(**ख़ल्लाद** = मकान में त़वील अ़र्सा इक़ामत इख़्तियार करने वाला)
دَارِم	(**दारिम** = जिस की हड्डी को गोश्त ने ढक दिया हो)
دَيْلَم	(**दैलम** = मुआ़मला फ़हम और बसीरत रखने वाला शख़्स)
ذَابِل	(**ज़ाबिल** = दुब्ला पतला)
ذَكْوَان	(**ज़क्वान** = होशियार और ज़हीन)
راشِد	(**राशिद** = हिदायत याफ़्ता)

www.dawateislami.net

زَارِع	(**ज़ारेअ़** = काश्तकार)
زَاهِر	(**ज़ाहिर** = रोशन)
زُبَيْر	(**ज़ुबैर** = जानदार, ताक़तवर आदमी)
زِيَاد	(**ज़ियाद** = इज़ाफ़ा, बढ़ोतरी, कसरत)
زَيد	(**ज़ैद** = इज़ाफ़ा, बढ़ोतरी, कसरत)
سَارِيَه	(**सारिया** = रात में चलने वाला)
سَالِف	(**सालिफ़** = फ़ज़्लो कमाल या उ़म्र में बढ़ा हुवा)
سالِم	(**सालिम** = आफ़त व अमराज़ से छुटकारा पाने वाला)
سائِب	(**साइब** = खुले दिल से सख़ावत करने वाला)
سُفيان	(**सुफ़्यान** = जल्दी परवाज़ करने वाला)
سَلْمان	(**सलमान** = फ़रमां बरदार, हर ऐ़ब से पाक)
سُلَيْم	(**सुलैम** = बेऐ़ब, सहीह़ व सालिम, साफ़ सुथरा, आफ़त से बचा हुवा)
سِمَاک	(**सिमाक** = बुलन्द चीज़)
سَمْعَان	(**समआ़न** = मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार)
سُمَيْر	(**सुमैर** = रात को साथी से बातें करने वाला, क़िस्सा कहानी कहना)
سِنَان	(**सिनान** = नेज़ा)
سَهْل	(**सह्ल** = नर्म मिज़ाज, आसान)
سُهَيْل	(**सुहैल** = नर्म बरताव करने वाला)
سَيف	(**सैफ़** = तल्वार)

www.dawateislami.net

شُجَاع	(**शुजाअ़** = बहादुर)
شَدَّاد	(**शद्दाद** = बहुत कुव्वत रखने वाला बहादुर शख़्स)
شُرَيح	(**शुरैह़** = गोश्त के पतले टुकड़े करने वाला, मह़फ़ूज़, जिस का सीना खोल दिया गया हो, वाज़ेह़)
شَرِيک	(**शरीक** = हिस्सेदार)
شَمْعُون	(**शमऊन** = मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार)
شَيْبَان	(**शैबान** = सफ़ेद, ठन्डा, बर्फ़)
صُبَيح	(**सुबैह़** = रोशन चेहरे वाला)
صَفْوَان	(**सफ़्वान** = चिकना पथ्थर, चिकनी चट्टान)
ضَمْضَم	(**ज़म ज़म** = दिलैर)
طارِق	(**त़ारिक़** = रोशन सितारा)
طُفَيْل	(**तुफ़ैल** = वसीला)
ظُهَيْر	(**ज़ुहैर** = मददगार)
عاصِم	(**आ़सिम** = मुह़ाफ़िज़, बचाने वाला)
عاقِل	(**आ़क़िल** = अ़क़्ल वाला, होशियार)
عَبَّاد	(**अ़ब्बाद** = बन्दा, इबादत गुज़ार)
عَبَّاس	(**अ़ब्बास** = वोह शेर जिसे देख कर दूसरे शेर भाग जाते हों)
عَتِيْق	(**अ़तीक़** = शरीफ़, आज़ाद)
عُرْوَه	(**उ़र्वा** = शेर, क़ाबिले ए'तिमाद)
عَفَّان	(**अ़फ़्फ़ान** = बहुत ज़ियादा पाक दामन)

www.dawateislami.net

عُقَيْل	(**उ़क़ैल** = दाना, ज़हीन आदमी)
عَمَّار	(**अ़म्मार** = तह़म्मुल मिज़ाज, बा वक़ार)
عُمَيْر	(**उ़मैर** = लबरैज़)
غَسَّان	(**ग़स्सान** = दिल की गहराई)
فُضَيْل	(**फ़ुज़ैल** = फ़ज़ीलत वाला)
قارِب	(**क़ारिब** = छोटी कश्ती)
قَتَادَه	(**क़तादा** = एक दरख़्त)
قُطْبَه	(**क़ुत़्बा** = सरदार)
كَثِير	(**कसीर** = बहुत, वाफ़िर, ज़ियादा)
كَوْكَب	(**कौकब** = रोशन सितारा, क़ौम का सरदार)
كَهْمَس	(**कहमस** = शेर)
لاحِب	(**लाह़िब** = खुला और वाज़ेह़ रास्ता)
لاحِق	(**लाह़िक़** = मिलने वाला)
لَبِيْد	(**लबीद** = मकान में क़ियाम करने वाला)
لُقمَان	(**लुक़मान** = बड़ा दाना आदमी, निहायत तजरिबा कार आदमी)
ماتِع	(**मातेअ़** = बहुत उ़म्दा चीज़)
مَازِن	(**माज़िन** = बारिश बरसाने वाला बादल)
مالِک	(**मालिक** = मिल्कियत रखने वाला)
مِدْلَاج	(**मिदलाज** = जो रात में चलने या सफ़र करने का आ़दी हो)

www.dawateislami.net

مَرْزُوْق	(**मरज़ूक़** = ख़ुशहाल)
مَسعُود	(**मसऊ़द** = ख़ुश नसीब, कामयाब)
مُصعب	(**मुसअ़ब** = बरदाश्त करने वाला)
مُطَرِّف	(**मुत़र्रिफ़** = किनारे वाला)
مَظْهَر	(**मज़हर** = मन्ज़र, शक्ल, ज़ाहिर होने का मक़ाम)
مُعَاذ	(**मुआ़ज़** = पनाह की जगह)
مُعَاوِيه	(**मुआ़विया** = आवाज़ खींचने वाला)
مَعقِل	(**मा'क़िल** = पनाहगाह)
مُعَوِّذ	(**मुअ़व्विज़** = पनाह की दुआ़ देने वाला)
مُغِيث	(**मुग़ीस** = फ़रियाद सुनने वाला)
مِقْدَاد	(**मिक़्दाद** = एक चीज़ को दो हिस्सों में तक़्सीम करने वाला)
مِقْدَام	(**मिक़्दाम** = बहादुर, लड़ाई में सब से आगे रहने वाला)
مَكْحُول	(**मक्हूल** = जिस की आंखों में सुर्मा लगा हो)
مُنِيْب	(**मुनीब** = ख़ुदा की त़रफ़ रुजूअ़ करने वाला)
مُنذِر	(**मुनज़िर** = डराने वाला)
مُنكَدِر	(**मुन्कदिर** = झपटने वाला)
مِنهَال	(**मिन्हाल** = इन्तिहाई सख़ी)
مُونِس	(**मूनिस** = दोस्त, ग़मख़्वार)
مَيْمُون	(**मैमून** = बाबरकत, ख़ुश बख़्त)

www.dawateislami.net

نَاعِم	(**नाइम** = ख़ुशहाल ज़िन्दगी बसर करने वाला)
نَافِع	(**नाफ़ेअ़** = नफ़्अ़ देने वाला)
نَصِيب	(**नसीब** = हिस्सा)
نُعْمَان	(**नो'मान** = ने'मतें पाने वाला)
نُعَيم	(**नुऐम** = साहिबे ने'मत)
نَوْفَل	(**नौफ़ल** = फ़य्याज़, सख़ी, दरिया दिल)
وَاسِع	(**वासेअ़** = वुस्अ़त देने वाला)
وَاقِد	(**वाक़िद** = आग रोशन करने वाला)
وَائِل	(**वाइल** = पनाह में आने वाला)
هِلَال	(**हिलाल** = पहली तारीख़ का चांद)
يَاسِر	(**यासिर** = आसानी व नर्मी)
يَامِين	(**यामीन** = बा बरकत)
يَسَار	(**यसार** = दौलत मन्द, अमीर कबीर)
يَمَان	(**यमान** = बरकत वाला)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के 27 मुबारक नाम

اَرْسَلان (अर्सलान)	(शेर । ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अर्सलान मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي के वालिद जो ख़ुद भी बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे, मज़ारे मुबारक मिस्र में है)

www.dawateislami.net

تَقِیّ (तक़ी)	(परहेज़गार। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दादा के सगे भाई इमामुल उ़लमा मौलाना तक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)
جَمَال (जमाल)	(हुस्न। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़लीफ़ा शैख़ मुह़म्मद जमाल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जो अ़रब के बाशिन्दे थे)
جُنَید (जुनैद)	(छोटा लश्कर। मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْهَادِی)
جِیُوَن (जीवन)	(ज़िन्दगी, ह़यात, वुजूद। नूरुल अन्वार और तफ़्सीराते अह़मदिय्या के मुसन्निफ़ जो मुल्ला जीवन के नाम से मश्हूर हैं, अस्ल नाम शैख़ अह़मद बिन अबी सई़द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه है)
حاکِم (ह़ाकिम)	(सरदार। ह़दीस की मश्हूर किताब अल मुस्तदरक अ़लस्सह़ीह़ैन के मुअल्लिफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जो इमाम ह़ाकिम के नाम से मश्हूर हैं)
حَشْمَت (ह़शमत)	(बुज़ुर्गी, शानो शौकत। शेर बेशए अह्ले सुन्नत मौलाना ह़शमत अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)
خلیل (ख़लील)	(सच्चा दोस्त। मश्हूर सुन्नी आ़लिम ख़लीले मिल्लत मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान बरकाती عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی)
دِیْدَار (दीदार)	(जल्वा, नज़ारा। ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद दीदार अ़ली शाह अल्वरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی)
رَزِین (रज़ीन)	(बा वक़ार, बुर्दबार, सन्जीदा। जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस ह़ाफ़िज़ **रज़ीन** अ़ब्दरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی)
رَیحَان (रैह़ान)	(गुलाब के इ़लावा तमाम फूलों को रैह़ान कहते हैं। रैह़ाने मिल्लत मौलाना मुह़म्मद रैह़ान रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان)

www.dawateislami.net

زَمِيل ज़मील	(रदीफ़, पिछला सुवार। ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना ज़मील बिन अब्बास رَحۡمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ)
سَرفَرَاز सरफ़राज़	(मुअज़्ज़ज़। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना सरफ़राज़ अह्मद رَحۡمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ)
شريف शरीफ़	(बुज़ुर्ग, आ़ली ख़ानदान। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना मुह़म्मद शरीफ़ कोटलवी عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡقَوِی)
شَهبَاز शहबाज़	(शाहीन। मश्हूर सूफ़ी बुज़ुर्ग शहबाज़ क़लन्दर رَحۡمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ)
عَدْنَان अ़दनान	(हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیۡہِ السَّلَام की अवलाद में से हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जद्दे आ'ला का नाम)
عِرفَان इरफ़ान	शनाख़्त, पहचान। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना इरफ़ान अह्मद बैसलपुरी عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡقَوِی)
عطاء अ़ता	(बख़्शिश, इन्आ़म। मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन यसार عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡغَفَّار)
عَقِيل अ़क़ील	(दाना, ज़की। शाम के एक बा करामत वलिय्युल्लाह हज़रते सय्यिदुना अ़क़ील رَحۡمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ)
عِمرَان इमरान	(हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام के नाना का नाम)
ظَفر ज़फ़र	(कामयाबी। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मलिकुल उ़लमा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन क़ादिरी रज़वी عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡقَوِی)
مُجَاهِد मुजाहिद	(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में लड़ने वाला। मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡوَاحِد)
مَعرُوف मा'रूफ़	(मश्हूर वलिय्युल्लाह हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡقَوِی)

نَقِی **नक़ी**	(पाक, साफ़, ख़ालिस। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिद मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)
هاشِم **हाशिम**	(रोटियों के छोटे छोटे टुकड़े करने वाला। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के परदादा हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ जिन का अस्ली नाम अ़म्र था)
وارِث **वारिस**	(मददगार, ह़िमायती। मश्हूर सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वारिस शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)
وَهب **वह्ब**	अ़त़ा व बख़्शिश। हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाना का नाम)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निस्बतों वाले 8 मुतफ़र्रिक़ नाम

آصف	(**आसफ़** = ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के वज़ीर का नाम, मजाज़न हर लाइक़ वज़ीर)
اُحُد	(**उ़ह़ुद** = एक आ़शिक़े रसूल पहाड़ का नाम)
اَیَّاز	(**अय्याज़** = मह़मूद बादशाह के एक ज़हीन और नेक ग़ुलाम का नाम)
حُنَین	(**ह़ुनैन** = सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक ग़ुलाम का नाम, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा और त़ाइफ़ के दरमियान एक वादी का नाम जहां ग़ज़्वए ह़ुनैन वाक़ेअ़ हुवा)
ذُوالفِقَار	(**ज़ुल फ़िक़ार** = मोहरों वाली तल्वार। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की तल्वार का नाम)
رَمَضَان	(**रमज़ान** = हिजरी साल का नवां महीना, नुज़ूले क़ुरआन का महीना)
رَیَّان	(**रय्यान** = जन्नत के एक दरवाज़े का नाम जिस में से रोज़ादार दाख़िल होंगे)
عَرَفَات	(**अ़रफ़ात** = मक्कए पाक में वाक़ेअ़ एक मैदान जहां ह़ाजी 9 ज़ुल ह़िज्जा को वुक़ूफ़ करते हैं)

www.dawateislami.net

बच्चियों के लिये 150 प्यारे प्यारे नाम

सरकारे मदीना ﷺ की अम्मी जान का मुबारक नाम

آمِنَہ	(**आमिना** = मुत़मइन और बे ख़ौफ़)

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल ﷺ की रज़ाई माओं (या'नी जिन्हों ने सरकार ﷺ को दूध पिलाया था) के मुबारक नाम[1]

اُمِّ اَیْمَن	(**उम्मे ऐमन** = बरकत व कुव्वत वाली, इन का अस्ल नाम **बरकत** था)
ثُوَیْبَہ	(**सुवैबा** = रुजूअ़ करने वाली, लौटने वाली)
حَلِیْمَہ	(**ह़लीमा** = बुर्दबार, मुतह़म्मिल मिज़ाज ख़ातून)

11 उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के मुक़द्दस नाम

خَدِیجَہ	(**ख़दीजा** = वक़्त से पहले पैदा होने वाली बच्ची)
سَوْدَہ	(**सौदा** = सियाह रंगत वाली)
عائِشہ	(**आइशा** = ख़ुशह़ाल)
حَفْصَہ	(**ह़फ़्सा** = ख़ूब सूरत)
اُمِّ سَلَمَہ	(**उम्मे सलमा** = ए'तिराफ़ करने वाली की मां)
اُمِّ حَبِیبہ	(**उम्मे ह़बीबा** = मह़बूब हस्ती की मां)

1 .....सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जितनी बीबियों ने दूध पिलाया सब इस्लाम लाईं । (السیرۃ الحلبیۃ، ۱/۱۲۸، فتاوی رضویہ، ۳۰/۲۹۶)

www.dawateislami.net

زَینب	(**ज़ैनब**[1] = एक ह़सीन ख़ुश्बूदार पौदा)
زَینب	(**ज़ैनब**[2] = एक ह़सीन ख़ुश्बूदार पौदा)
مَیْمُوْنَه	(**मैमूना** = बरकत वाली)
جُوَیْرِیَه	(**जुवैरिया** = छोटी लड़की)
صَفِیَّه	(**सफ़िय्या** = चुनी हुई)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकारे मदीना ﷺ की 4 शहज़ादियों के मुबारक नाम

زَینب	(**ज़ैनब** = एक ह़सीन महक दार पौदा)
رُقَیَّه	(**रुक़य्या** = तरक़्क़ी करने वाली)
اُمِّ کُلثوم	(**उम्मे कुलसूम** = पुरगोश्त चेहरे वाली की मां)
فاطِمه	(**फ़ातिमा** = आतशे जहन्नम से छुड़ाने वाली)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकारे मदीना ﷺ की 3 मुक़द्दस कनीज़ों के नाम

مارِیه	(**मारिया** = गोरी और चमक दमक वाली)
رَیْحَانه	(**रैह़ाना** = एक ख़ुश्बूदार पौदा)
نَفِیْسَه	(**नफ़ीसा** = पाक व साफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....बिन्ते जह़्श । 2....बिन्ते ख़ुज़ैमा

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना ﷺ की 4 नवासियों के नाम

اُمَامَہ	(**उमामा** = इरादा करने वाली)
رُقَیَّہ	(**रुक़य्या** = तरक़्क़ी करने वाली)
اُمِّ کُلثوم	(**उम्मे कुलसूम** = पुरगोश्त चेहरे वाली की मां)
زَینب	(**ज़ैनब** = एक ह़सीन महक दार पौदा)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

59 सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के नाम

آسِیَہ	(**आसिया** = सुतून)
اُثَیْلَہ	(**उसैला** = शरफ़ और बुज़ुर्गी वाली)
اَرْوَی	(**अरवा** = ह़सीनो जमील)
اَسْمَاء	(**अस्मा** = निशानी, अ़लामत)
اُمَیْمَہ	(**उमैमा** = पथ्थर)
اُمَیَّہ	(**उमय्या** = छोटी सी कनीज़)
اَنِیْسَہ	(**अनैसा** = रहनुमाई करने वाली, मेहरबानी करने वाली)
اَیْمَن	(**ऐमन** = सीधी, दाह़नी)
بَرِیْرَہ	(**बरीरा** = एक दरख़्त का फल)
بُسْرَہ	(**बुसरा** = कोंपल)
بَشِیْرَہ	(**बशीरा** = ख़ुश ख़बरी देने वाली)

www.dawateislami.net

بُهَيَّه	(**बुहय्या** = जमाल)
جَمِيلَه	(**जमीला** = ह़सीन, ख़ूब सूरत)
حَبِيبَه	(**ह़बीबा** = प्यारी)
حَرْمَلَه	(**ह़र्मला** = छोटी पोशाक)
حَسَنَه	(**ह़सना** = ने'मत)
حَكِيْمَه	(**ह़कीमा** = अ़क़्लमन्द ख़ातून)
حَمْنَه	(**ह़मना** = त़ाइफ़ के अंगूरों की एक क़िस्म जो सियाह सुर्ख़ी माइल होते हैं)
خالِده	(**ख़ालिदा** = देर तक रहने वाली)
خَوْلَه	(**ख़ौला** = हिरनी, ख़ूब सूरत)
خَيْرَه	(**ख़ैरा** = आ'ला और मुमताज़ ख़ातून)
دَقْرَه	(**दक़रा** = कसीर नबातात वाला ख़ुशनुमा बाग़)
رَبَاب	(**रबाब** = सफ़ेद बादल)
رُزَيْنَه	(**रुज़ैना** = अ़क़्लमन्द और पारसा ख़ातून)
رُفَيْدَه	(**रुफ़ैदा** = मददगार ख़ातून, अ़त़िय्या)
رُقَيْقَه	(**रुक़ैक़ा** = नर्म दिल)
رَمْلَه	(**रमला** = ज़मीन का बुलन्द ह़िस्सा)
رُمَيْثَه	(**रुमैसा** = ज़रख़ेज़ ज़मीन)
رُمَيْصَاء	(**रुमैसा** = एक सितारे का नाम)
زُرَيْنَه	(**ज़ुरैना** = सुनह़री)

www.dawateislami.net

سَائِرَه	(**साइरा** = सैर करने वाली)
سُبَيْعَه	(**सुबैआ़** = सात)
سَرَّاء	(**सर्रा** = ख़ुशहाली, उ़म्दा ज़मीन)
سُعْدٰى	(**सो'दा** = मुबारक, ख़ुश बख़्ती)
سُعَيْدَه	(**सुऐ़दा** = ख़ुश बख़्त ख़ातून)
سُكَيْنَه	(**सुकैना** = वक़ार, त़मानिय्यत, सुकून)
سَلْمٰى	(**सलमा** = आफ़त वग़ैरा से महफ़ूज़, नजात पाने वाली)
سُمَيَّه	(**सुमय्या** = अ़लामत)
سُنْبُل	(**सुम्बुल** = एक क़िस्म की ख़ुश्बूदार घास)
سِيما	(**सीमा** = निशान वाली, अ़लामत वाली)
شِفَاء	(**शिफ़ा** = तनदुरुस्ती, सिह़्ह़त)
عاتِكه	(**आ़तिका** = बहुत ख़ुश्बू मलने वाली)
عَفْرَاء	(**अ़फ़्रा** = कम रफ़्तार)
عَقِيله	(**अ़क़ीला** = अ़क़्ल वाली, समझदार)
عَطِيَّه	(**अ़त़िय्या** = इन्आ़म दी हुई चीज़)
فارِعه	(**फ़ारिआ़** = लम्बे बालों वाली)
قِرْصَافَه	(**क़िरसाफ़ा** = तेज़ रफ़्तार चीज़, घूमने वाली चीज़)
فُرَيْعَه	(**फ़ुरैआ़** = त़वील क़द वाली, लम्बे बालों वाली, पहाड़ का बुलन्द हिस्सा)
قُرَّةُ العَين	(**कुर्रतुल ऐ़न** = आंखों की ठन्डक)

www.dawateislami.net

كَبْشَه	(**कबशा** = हिफ़ाज़त का काम अन्जाम देने वाली)
كَرِيمه	(**करीमा** = मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ातून)
لُبابه	(**लुबाबा** = हर चीज़ का ख़ालिस और बेहतरीन हिस्सा)
لُبنٰى	(**लुबना** = ख़ुश्बूदार, ख़ूब सूरत ख़ातून)
مُطِيْعَه	(**मुतीआ़** = फ़रमां बरदार ख़ातून)
مُعاذَه	(**मुआ़ज़ा** = पनाह गाह)
مُلَيْكَه	(**मुलैका** = मलिका)
نَسِيْبه	(**नसीबा** = हसबो नसब में मश्हूर शरीफ़ ख़ातून)
هُجَيْمَه	(**हुजैमा** = मशकीज़े का दूध जो अभी पूरा न जमा हो, मोती)
يُسَيْرَه	(**युसैरा** = आसान, सीधी)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

49 दीगर बुज़ुर्ग ख़वातीन के नाम

اَنِيْقَه	(**अनीक़ा** = ख़ुश आइन्द, ख़ूब। एक क़ौल के मुताबिक़ हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए मोहतरमा हज़रते उम्मे सुलैम अन्सारिया का नामे मुबारक)
بَرْدَه	(**बर्दा** = कनीज़, बांदी, एक ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुरक़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का नाम)
بِلْقِيس	(**बिल्क़ीस** = मलिकए सबा का नाम, इस्लाम क़बूल करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام की ज़ौजा बनीं)

www.dawateislami.net

تَحِیَّه	(**तह़िय्या** = सलाम, सलामी, तह़िय्या बिन्ते सलमान, आ़लिमा ख़ातून जिन्हें लाख से ज़ाइद अह़ादीस याद थीं)
جَبَلَه	(**जबला** = क़ौम की सरदार, आ़लिमा, साबित क़दम, एक ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बेटी का नाम)
حَنِیْفَه	(**ह़नीफ़ा** = मज़हबी अ़क़ीदे की पुख़्ता, दीन में सच्ची। "बीबी ह़नीफ़ा" नवीं सदी हिजरी की शोहरए आफ़ाक़, आ़लिमा, मुह़द्दिसा, जिन को इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपने शुयूख़ में शुमार किया है)
حَمَّادَه	(**ह़म्मादा** = ह़म्द करने वाली, शुक्र करने वाली, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बेटी का नाम)
حَوَّاء	(**ह़व्वा** = ज़िन्दगी, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْهِ السَّلَام की ज़ौजए मोह़तरमा का नाम)
رَابِعَه	(**राबिआ़** = चौथी, शफ़्क़त करने वाली, रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने वाली। एक मश्हूर वलिय्या ख़ातून ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رحمة الله تعالی علیها)
رَئِیْسَه	(**रईसा** = दौलत मन्द। रावियए ह़दीस जिन से ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अ़ली जुन्जानी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی रिवायत करते हैं)
زُبْدَه	(**ज़ुब्दा** = किसी चीज़ का बेहतरीन हिस्सा, बरगुज़ीदा, मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बहन का नाम)
زَجْلَه	(**ज़ज्ला** = लोगों की आवाज़, शोर, ज़ज्ला बिन्ते मन्ज़ूर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आज़ाद कर्दा कनीज़ का नाम)
زِیْنَت	(**ज़ीनत** = ख़ूब सूरती, सजावट, रावियए ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ीनत बिन्ते अबी तुलैक़ رحمة الله تعالی علیها)

سَارَہ	(**सारा** = सरदार, शरीफ़, मुअ़ज़्ज़ज़, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम)
سَارِیَہ	(**सारिया** = रात में चलने वाली, ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सहेली थीं)
سِدْرَہ	(**सिदरा** = बेरी का दरख़्त, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहू का नाम)
سَفِیْنَہ	(**सफ़ीना** = नाव, कश्ती, राविएए ह़दीस ह़ज़रते सफ़ीना बिन्ते शैबा رحمۃاللہ تعالی علیہا)
سُکَیْنَہ	(**सुकैना** = सुकून, इत़मीनान, ह़ज़रते सय्यिदतुना सुकैना बिन्ते हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)
سَکِینہ	(**सकीना** = सुकून, इत़मीनान, मश्हूर सन्दूक़ "ताबूते सकीना" का नाम जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी है, इस सन्दूक़ में मुक़द्दस तबर्रुकात मौजूद थे और इस के तुफ़ैल बनी इस्राईल को फ़ुतूह़ात ह़ासिल होती थीं)
سَنِیّہ	(**सनिय्या** = रोशन, बुलन्द रुत्बा, ख़ूब सूरत। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब जो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें एक हुल्ला पहना कर अ़त़ा फ़रमाया था)
شَمْسَہ	(**शम्सा** = रोशनदान । एक ताबेइ़य्या ख़ातून رحمۃاللہ تعالی علیہا जो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के हाथ पर इस्लाम लाईं)
سُوَیْدَہ	(**सुवैदा** = सरदार, सांवली, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी का नाम)
شَعْوانہ	(**शा'वाना** = घने बिखरे हुए बाल, एक बुज़ुर्ग ख़ातून رحمۃاللہ تعالی علیہا का नाम)
صُغْرٰی	(**सुग़रा** = छोटी । इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साह़िबज़ादी का नाम)
صَفُوْرَہ	(**सफ़ूरा** = ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की बेटी और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ौजा का नाम)

www.dawateislami.net

طافِيه	(**ताफ़िया** = खोशए अंगूर में नुमायां और उभरा हुवा दाना, एक आबिदा ख़ातून رحمة الله تعالى عليها का नाम)
طَيِّبَه	(**तय्यिबा** = उम्दा, पाक। हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदए मोह्तरमा का नाम तय्यिबा बिन्ते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا था)
عَاتِكه	(**आतिका** = शरीफ़ औरत, ख़ुश्बूदार, क़बीलए बनी सुलैम से तअ़ल्लुक़ रखने वाली तीन पाकीज़ा बीबियों के नाम जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बचपन में दूध पिलाने की सआ़दत ह़ासिल की थी)
عَاطِفَه	(**आतिफ़ा** = मेहरबानी करने वाली। हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की बहन जो कि निहायत साबिरा, ज़ाहिदा और इबादत गुज़ार ख़ातून थीं)
عَالِيَه	(**आलिया** = हर चीज़ का बुलन्द हिस्सा, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पोती का नाम)
عَبْدَه	(**अ़ब्दा** = बन्दी, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पोती का नाम)
عَجْرَدَه	(**अ़जरदा** = तेज़ व सख़्त, हल्की फुलकी, बसरा की एक इबादत गुज़ार ख़ातून رحمة الله تعالى عليها का नाम)
عَزِيزه	(**अ़ज़ीज़ा** = मह़बूब, क़रीबी रिश्तेदार, दोस्त। रावियए ह़दीस हज़रते सय्यिदतुना अ़ज़ीज़ा رحمة الله تعالى عليها)
غُزَيَّه(غَزِيَّة)	(**ग़ुज़य्या-ग़ज़िय्या** = इरादा करने वाली, हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी का नाम)
عَالِيَه	(**आ़लिया** = बुलन्द, बुज़ुर्ग। रावियए ह़दीस हज़रते सय्यिदतुना आ़लिया बिन्ते ऐफ़अ़ बिन शराह़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, येह हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करती हैं)

فَسِيْلَه	(**फ़सीला** = खजूर की क़लम, ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी का नाम)
قُرَيْبَه	(**क़ुरैबा** = क़राबत वाली, ख़ुश्नूदी ह़ासिल करने वाली, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पोती का नाम)
ماجِدَه	(**माजिदा** = क़ाबिले ता'ज़ीम, सख़ी, बहुत उ़म्दा, क़बीलए क़ुरैश से तअ़ल्लुक़ रखने वाली एक इ़बादत गुज़ार ख़ातून)
مَرْجَانَه	(**मर्जाना** = मूंगा, मोती, एक सब्ज़ी का नाम, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा का नाम, ताबेइ़य्या हैं)
مَرْيَم	(**मरयम** = इ़बादत गुज़ार ख़ातून, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की वालिदए मोह़तरमा का नाम)
مُنِيْبَه	(**मुनीबा** = तौबा करने वाली, फ़रमां बरदार ख़ातून, बसरा की एक इ़बादत गुज़ार ख़ातून का नाम)
مُنِيْفه	(**मुनीफ़ा** = ह़सीन व ख़ुश क़ामत औ़रत, मुनीफ़ा बिन्ते अबी त़ारिक़, बह़रैन की एक इ़बादत गुज़ार ख़ातून का नाम)
مُنْيَه	(**मुन्या** = तमन्ना, ख़्वाहिश, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पोती का नाम)
مُوَافِقه	(**मुवाफ़िक़ा** = मुनासबत वाली, मिली हुई, एक इ़बादत गुज़ार ख़ातून का नाम)
نُدْبَه	(**नुदबा** = फ़सीह़ कलाम करने वाली, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुफ़ाफ़ बिन नुदबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का नाम)
وَجِيهَه	(**वजीहा** = ख़ूब सूरत। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की आज़ाद कर्दा कनीज़ का नाम)
هَالَه	(**हाला** = चांद के चारों अत़राफ़ का रोशन दाइरा। सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का नाम)

www.dawateislami.net

هَاجِرَه	(**हाजिरा** = निहायत गर्म दोपहर का वक़्त। हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम)
يَاسْمِين	(**यास्मीन** = चम्बेली का फूल। एक बुज़ुर्ग और रावियए हदीस हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़ब्दुल्लाह यास्मीन बिन्ते सालिम رحمة الله تعالى عليها का नाम)

तक़रीबन 16 मुतफ़र्रिक़ ज़नाना नाम

اِرَم	(**इरम** = एक क़ौल के मुताबिक़ जन्नत का नाम)
اَقْصٰى	(**अक़्सा** = बहुत दूर। हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की बनाई हुई मस्जिद बैतुल मुक़द्दस का नाम)
بَتُوْل	(**बतूल** = सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब)
تَسْنِيم	(**तस्नीम** = जन्नत की एक नहर का नाम)
حِرَا	(**हिरा** = मक्कए मुकर्रमा की पहाड़ियों में मौजूद ग़ार का नाम)
حَرَمَيْن	(**हरमैन** = मक्कए मुअ़ज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा दोनों को हरमैन कहते हैं)
حَرِيم	(**हरीम** = घर की चार दीवारी, ख़ानए का'बा की बैरूनी दीवार, मकान, घर)
حُمَيْرَا	(**हुमैरा** = सुर्ख़ रंग की। उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब)
زَهْرَاء	(**ज़हरा** = रोशन और सफ़ेद चेहरे वाली। बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब)
زَيْتُوْن	(**ज़ैतून** = एक मशहूर दरख़्त का नाम जिस का ज़िक्र कुरआने पाक में है)

www.dawateislami.net

سَعْدِیَہ	(**सा'दिया** = शीराज़ की मुज़ाफ़ात में वोह मक़ाम जहां शैख़ सा'दी शीराज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ार है)
صِدِّیقہ	(**सिद्दीक़ा** = निहायत सच्ची। ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा और ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का लक़ब)
طاھِرَہ	(**त़ाहिरा** = पाक। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब)
طُوبٰی	(**त़ूबा** = खुश ख़बरी। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जन्नत का नाम, दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ जन्नत में एक दरख़्त का नाम)
عَذْرا	(**अ़ज़रा** = कुंवारी, ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब)
کَوْثَر	(**कौसर** = बिहिश्त की एक नह्र, जन्नत का ह़ौज़, कुरआने पाक की एक सूरत का नाम)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सात अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कुन्यतें

मदनी आक़ा अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	अबुल क़ासिम, अबू इब्राहीम
ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	अबुल बशर, अबू मुह़म्मद
ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	अबुल अज़याफ़
ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	अबू सुलैमान
ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	अबू या'क़ूब
ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	अबू यूसुफ़
ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	अबुल अ़ब्बास

www.dawateislami.net

71 सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की कुन्यतें

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ عنہ	अबू हफ़्स
हज़रते सय्यिदुना उ़समान बिन अफ़्फ़ान رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह, अबू अ़ब्दिर्रहमान, अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم	अबुल हसन, अबू तुराब
हज़रते सय्यिदुना तलहा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ عنہ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ عنہ	अबू इस्हाक़
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ	अबुल आ'वर
हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन जर्राह رضی اللہ عنہ	अबू उ़बैदा
हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ	अबू मुहम्मद, अबू ज़ैद, अबू यज़ीद, अबू ख़ारिजा
हज़रते सय्यिदुना अस्लम राई رضی اللہ عنہ	अबू सलमा
हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رضی اللہ عنہ	अबू यह्या, अबू ईसा, अबू अ़तीक, अबू हुज़ैर, अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ	अबू हम्ज़ा

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رضی اللہ عنہ	अबू अम्र, अबू अम्मारा
हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन हराम رضی اللہ عنہ	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दिर्रहमान
हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ	अबुल फ़ज़्ल
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर	अबू बक्र, अबू खुबैब
हज़रते सय्यिदुना उसमान बिन हुनैफ़ رضی اللہ عنہ	अबू अम्र , अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर	अबू अब्दिर्रहमान
हज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबू अरक़म رضی اللہ عنہ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अश्अस बिन क़ैस رضی اللہ عنہ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना अन्जशा رضی اللہ عنہ	अबू मारिया
हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरा رضی اللہ عنہ	अबू अब्दिल्लाह, अबू ख़ालिद
हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दिर्रहमान, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू तालिब رضی اللہ عنہ	अबुल मसाकीन
हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन हिज़ाम رضی اللہ عنہ	अबू ख़ालिद
हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक رضی اللہ عنہ	अबू सुफ़्यान
हज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दुब رضی اللہ عنہ	अबू सुलैमान

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ	अबू सुलैमान
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आस رضی اللہ عنہ	अबू उहैहा
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا	अबू हाशिम
हज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہ	अबुल अ़ब्बास, अबू अ़ब्दिल्लाह, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رضی اللہ عنہ	अबू अ़ली, अबू अ़ब्दिल्लाह, अबू यसार
हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رضی اللہ عنہ	अबू अस्वद
हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رضی اللہ عنہ	अबू रुक़य्या
हज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رضی اللہ عنہ	अबू उ़समान
हज़रते सय्यिदुना उ़समान رضی اللہ عنہ (वालिदे सिद्दीक़े अकबर)	अबू क़हाफ़ा
हज़रते सय्यिदुना नुफ़ैअ़ बिन हारिस رضی اللہ عنہ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना अस्लम या इब्राहीम رضی اللہ عنہ	अबू राफ़ेअ़
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رضی اللہ عنہ	अबू सईद (खुदरी)
हज़रते सय्यिदुना सख़र बिन हर्ब رضی اللہ عنہ	अबू सुफ़्यान
हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सहल رضی اللہ عنہ	अबू तल्हा (अन्सारी)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना हारिस बिन रबई ﷺ	अबू क़तादा
हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन सख़र ﷺ	अबू हुरैरा
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक ﷺ	अबू हम्ज़ा
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ	अबू बुस्र, अबू सफ़्वान
हज़रते सय्यिदुना सुदय बिन अज्लान ﷺ	अबू उमामा (बाहिली)
हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन ﷺ	अबू नुजैद
हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन ज़ैद ﷺ	अबू अय्यूब (अन्सारी)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन क़ैस ﷺ	अबू मूसा (अश्अरी)
हज़रते सय्यिदुना उवैमिर बिन आमिर ﷺ	अबू दरदा
हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अबसा ﷺ	अबू नजीह
हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया ﷺ	अबू नजीह
हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ बिन ख़दीज ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना उहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़ारी ﷺ	अबू मुस्लिम
हज़रते सय्यिदुना जन्दरा बिन ख़ैशना ﷺ	अबू क़िरसाफ़ा
हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित ﷺ	अबुल वलीद
हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन हिज़ाम ﷺ	अबू ख़ालिद

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رضی اللہ عنہ	अबुल मुन्ज़िर, अबुत्तुफ़ैल
हज़रते सय्यिदुना जुरहुम बिन नाशिब رضی اللہ عنہ	अबू सा'लबा
हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رضی اللہ عنہ	अबू मा'बद, अबुल अस्वद
हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अ़ली رضی اللہ عنہما	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अ़ली رضی اللہ عنہما	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رضی اللہ عنہ	अबू यज़ीद
हज़रते सय्यिदुना जुन्दुब बिन जुनादा رضی اللہ عنہ	अजू ज़र (ग़िफ़ारी)
हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ	अबू अ़ब्दिल्लाह

13 सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ की कुन्यतें

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ عنہا	उम्मु हिन्द
उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदा बिन्ते जम्अ़ رضی اللہ عنہا	उम्मुल अस्वद
उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا	उम्मु अ़ब्दिल्लाह
उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह्श رضی اللہ عنہا	उम्मुल ह़कम

www.dawateislami.net

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मुल मसाकीन
उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना रमला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मे ह़बीबा
ह़ज़रते सय्यिदतुना हिन्द बिन्ते अबी उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मु सलमा
ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़म्ना बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मु ह़बीबा
ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ैरा बिन्ते अबी ह़दरद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मुद्दरदा
ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते ह़मज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मुल फ़ज़्ल
ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मु जमील
ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाख़िता बिन्ते अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मु हानी
ह़ज़रते सय्यिदतुना नुसैबा बिन्ते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا	उम्मु अ़म्मारा

दीगर 65 बुज़ुर्गाने दीन की कुन्यतें

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन (अ़ली बिन ह़ुसैन) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا	अबू मुह़म्मद, अबुल ह़सन, अबुल क़ासिम, अबू बक्र
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबू जा'फ़र
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबू अ़ब्दुल्लाह, अबू इस्माईल
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबुल ह़सन, अबू इब्राहीम
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबुल ह़सन, अबू मुह़म्मद
ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मा'रूफ़ करख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू मह़फ़ूज़

हज़रते सय्यिदुना सिरुद्दीन (सिर्री सक़ती) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबुल हसन
हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی	अबुल क़ासिम
हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र (अबू बक्र शिब्ली) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू बक्र
हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना आले मुहम्मद मारहरवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबुल बरकात
हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم	अबू इस्हाक़
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق	अबुल हुसैन
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू ईसा
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन यज़ीद इब्ने माजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना इमाम सुलैमान बिन अशअ़स सजिस्तानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	अबू दावूद
हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन शुऐ़ब नसाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू अ़ब्दिर्रहमान
हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी इ़याज़ मालिकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबुल फ़ज़्ल
हज़रते सय्यिदुना इमाम यह्या बिन शरफ़ नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू ज़करिय्या
हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन साबित इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم	अबू हनीफ़ा
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	अबू अ़ब्दिल्लाह

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	अबू अ़ब्दिल्लाह
ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस (इमामे मालिक) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد	अबू अ़ब्दिल्लाह
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम या'कूब बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْم	अबू यूसुफ़
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد	अबू अ़ब्दिल्लाह
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद त़ह़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	अबू जा'फ़र
ह़ज़रते सय्यिदुना रुफ़ैअ़ बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان	अबुल आ़लिया
ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	अबू इमरान
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد	अबू मुह़म्मद
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र (इमाम औज़ाई) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	अबू अ़म्र
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सौब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	अबू मुस्लिम (ख़ौलानी)
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक रक्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی	अबू क़िलाबा
ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अ़ली राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی	अबू बक्र (जस्सास)
ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन हु़सैन (इमाम बैहक़ी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	अबू बक्र
ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	अबू सई़द
ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अ़ली (ख़त़ीब बग़दादी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی	अबू बक्र
ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन नुसैर त़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	अबू सुलैमान

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन उ़मर (इमाम दारे कुत़नी) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	अबुल ह़सन
हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुस्लिम (इमाम ज़ोहरी) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر	अबू उ़मर
हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन सईद सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबू मुह़म्मद
हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुह़म्मद (इमाम जज़री) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	अबुल ख़ैर
हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर बिन अ़व्वाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم	अबू ह़फ़्स
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم	अबू अ़ब्दिर्रह़मान
हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد	अबू अ़ली
हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद (इमाम कुदूरी) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	अबुल हुसैन
हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली (मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबुल क़ासिम
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुसैन (इमाम करख़ी) عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	अबुल ह़सन
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबू अ़ब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मईन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن	अबू ज़करिय्या

www.dawateislami.net

क़ुत़्बे ज़माना अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی	अबू अ़ब्दिल्लाह
आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن	अबू मुह़म्मद
इमामुल मुह़द्दिसीन मौलाना सय्यिद मुह़म्मद दीदार अ़ली शाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अबू मुह़म्मद
मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی	अबुल फ़ज़्ल
फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद शरीफ़ कोटलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی	अबू यूसुफ़
सुलत़ानुल वाइज़ीन ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير	अबुन्नूर
उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد	अबुल बरकात
शारेह़े क़सीदए बुर्दा ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद अह़मद क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی	अबुल ह़सनात
अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	अबू बिलाल
शहज़ादए अमीरे अहले सुन्नत मौलाना उ़बैद रज़ा अ़त्त़ारी मदनी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	अबू उसैद
शहज़ादए अमीरे अहले सुन्नत ह़ाजी बिलाल रज़ा अ़त्त़ारी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	अबू हिलाल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

18 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अल्क़ाबात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللہُ عَنْہ	सिद्दीक़ (हमेशा तस्दीक़ करने वाला)
ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہ	फ़ारूक़ (बात़िल से ह़क़ को मुमताज़ करने वाला)
ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ	ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाला)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رضی اللہ عنہ	असदुल्लाह (अल्लाह का शेर)
ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ	सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तल्वार)
ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضی اللہ عنہ	साहिबु सिर्रि रसूलिल्लाह ﷺ (रसूलुल्लाह ﷺ के राज़दार)
ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ عنہ	अमीन (दियानतदार)
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہ	अल बह्र वल ह़िब्र (बहुत बड़ा आ़लिम)
ह़ज़रते सय्यिदुना खुज़ैमा बिन साबित رضی اللہ عنہ	जुश्शहादतैन (दो गवाहियों वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رضی اللہ عنہ	हुसाम (तेज़ तल्वार)
ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ	जुल उज़ुनैन (दो कानों वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رضی اللہ عنہ	जुल जनाह़ैन (दो बाज़ूओं वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا	रैह़ानता रसूलिल्लाह ﷺ (रसूलुल्लाह ﷺ के दो फूल)
ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رضی اللہ عنہ	साबिक़ुल ह़बशा (ह़बशा के बाशिन्दों में सब से पहले जन्नत में जाने वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رضی اللہ عنہ	साबिक़ुर्रूम (रूम के बाशिन्दों में सब से पहले जन्नत में जाने वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رضی اللہ عنہ	साबिक़ुल फ़रस (फ़ारस के बाशिन्दों में सब से पहले जन्नत में जाने वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ	साहिबुन्ना'लैन (हुज़ूर ﷺ के मुबारक ना'लैन उठाने वाले)

www.dawateislami.net

9 ताबेईन व मुह़द्दिसीन के अल्क़ाबात

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	अफ़्ज़लुत्ताबिईन (ताबेईन में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	ख़ैरुत्ताबिईन (ताबेईन में सब से ज़ियादा भलाई वाले)
ह़ज़रते सय्यिदुना ज़क्वान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	त़ाऊस (ख़ूब सूरत चेहरे वाला)
ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	मह़बूब (दोस्त)
ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر	उ़मरे सानी (दूसरे उ़मर)
इमाम अबू ज़करिय्या यह़्या बिन शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى	मुह़्यिुद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाले)
ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान सुयूती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى	जलालुद्दीन (दीन का जलाल)
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى	हुज्जतुल इस्लाम (इस्लाम की दलील)
ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى	नूरुद्दीन (दीन की रोशनी)

9 मश्हूर बुज़ुर्गाने दीन के अल्क़ाबात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	ग़ौसे आ'ज़म (बड़ा मददगार)
ह़ज़रते सय्यिदुना दाता अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	गन्ज बख़्श (बहुत बड़ा फ़य्याज़)
ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	गन्जे शकर (शकर का ख़ज़ाना)
ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى	ग़रीब नवाज़ (ग़रीबों की झोलियां भरने वाले)

हज़रते शैख़ अह्मद मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه	बदरुद्दीन (दीन को रोशन करने वाला)
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह शाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه	ग़ाज़ी (काफ़िरों से लड़ने वाला मुसलमान)
शाह आले रसूल मारहरवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه	ख़ातमुल अकाबिर (बुज़ुर्गों की निशानी)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना आले अह्मद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد	अच्छे मियां (अच्छे आदमी)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह्मद मदनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی	क़ुत्बे मदीना (मदीने के क़ुतुब) (मुसलमानों के अ़क़ीदे में वोह वली जिस के सिपुर्द किसी अ़लाक़े या बस्ती का इन्तिज़ाम हो)

पाक व हिन्द के 31 मश्हूर उ़लमाए किराम के अल्क़ाबात

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی	शैखे़ मुह़क़्क़िक़ (तहक़ीक़ करने वाले बुज़ुर्ग)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	रईसुल मुतकल्लिमीन (इल्मे कलाम के माहिर)
इमामे अहले सुन्नत इमाम अह्मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	आ'ला हज़रत (सब से बड़ी बारगाह)
मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	उस्ताज़े ज़मन (अपने वक़्त के उस्ताद)
सय्यिद अ़ली हुसैन अशरफ़ी मियां عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	शैख़ुल मशाइख़ (बुज़ुर्गों के बुज़ुर्ग)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द (हिन्द के सब से बड़े मुफ़्ती)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی	सदरुश्शरीआ (दीन के मसाइल के जानने वालों में बुलन्द मक़ाम रखने वाले)

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی	मलिकुल उ़लमा (उ़लमा का बादशाह)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अहमद सईद काज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی	ग़ज़ालिये ज़मान (अपने ज़माने के इमाम ग़ज़ाली)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن	हकीमुल उम्मत (उम्मत की इस्लाह़ करने वाले)
हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی	सदरुल अफ़ाज़िल (जय्यिद आ़लिम)
हज़रते पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	अमीरे मिल्लत (दीन के अमीर)
हज़रते पीर सय्यिद मुहम्मद मियां मारहरवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	ताजुल उ़लमा (उ़लमा का सरदार)
हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद किछौछवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द (हिन्द के सब से ज़ियादा अह़ादीस को ज़बानी करने वाले)
अ़ल्लामा मौलाना सिराज अहमद ख़ानपुरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	सिराजुल फ़ुक़हा (इ़ल्मे फ़िक़ह जानने वालों की चमक)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़श्मत अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن	शेरे बेशए अहले सुन्नत
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद अहमद क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی	ग़ाज़िये मिल्लत (क़ौम के ग़ाज़ी)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुबारक पुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	ह़ाफ़िज़े मिल्लत (दीन के निगह़बान)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अहमद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد	मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान (पाकिस्तान के सब से बड़े ह़दीस जानने वाले)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना शरीफ़ुल ह़क़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد	शारेह़े बुख़ारी / फ़क़ीहे आ'ज़म (बुख़ारी की शर्ह़ करने वाले, सब से बड़े फ़क़ीह)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना रैह़ान रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن	रैह़ाने मिल्लत (मिल्लत के फूल)
हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़फ़ूर हज़ारवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	शैख़ुल क़ुरआन (क़ुरआन के आ़लिम)
हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती ख़लील अहमद बरकाती عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی	ख़लीले मिल्लत (मिल्लत के दोस्त)

www.dawateislami.net

हज़रते मौलाना अ़ब्दुल हकीम शरफ़ क़ादिरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى	शरफ़े मिल्लत (क़ौम की इ़ज़्ज़त)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना उ़मर नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى	ताजुल उ़लमा (इ़ल्म वालों के ताज)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अरशदुल क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى	रईसुत्तहरीर (तहरीर के बादशाह)
हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى	ख़तीबे पाकिस्तान (पाकिस्तान के नामवर ख़तीब)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़ैज़ अहमद उवैसी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى	फ़ैज़े मिल्लत (क़ौम को फ़ैज़ देने वाले)
हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुर्रहीम बस्तवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى	उस्ताज़ुल फुक़हा (इ़ल्मे फ़िक़ह जानने वालों के उस्ताद)
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه	अमीरे अहले सुन्नत (सुन्नियों का अमीर, रहनुमा)
मुफ़्ती फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (दा'वते इस्लामी के मुफ़्ती)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चार चीज़ें सरदार बना देती हैं

शिहाबुद्दीन हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अहमद अबुल फ़त्ह अबशीही عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى **"अल मुस्ततरफ़"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : चार चीज़ें इन्सान को सरदार बना देती हैं :

اَلْعِلْمُ وَالْاَدَبُ وَالصِّدْقُ وَالْاَمَانَةُ

या'नी इल्म, अदब, सच्चाई और अमानत।

(المستطرف، ١/٤٢)

www.dawateislami.net

ماٰخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلامِ الٰہی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ١٣٤٠ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ١٣٩١ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
تفسیر صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفی ١٢٤١ھ	دار الفکر، بیروت ١٤٢١ھ
روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ١٢٧٠ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ١٤٢٠ھ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ٢٥٦ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ٢٦١ھ	دار ابن حزم، بیروت ١٤١٩ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ٢٧٩ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ٢٧٥ھ	دار احیاء التراث، بیروت ١٤٢١ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ٢٧٣ھ	دار الفکر، بیروت ١٤٢٠ھ
مؤطا امام مالک	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ١٧٩ھ	دار المعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ٢٤١ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ٣٦٠ھ	دار احیاء التراث ١٤٢٢ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ٣٦٠ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٠ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
الادب المفرد	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ٢٥٦ھ	تاشقند ایران، ١٣٩٠ھ
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر ہیثمی، متوفی ٨٠٧ھ	دار الفکر، بیروت ١٤٢٠ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٥ھ
التیسیر بشرح جامع الصغیر	علامہ عبد الرؤف مناوی، متوفی ١٠٠٣ھ	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ١٤٠٨ھ
مسند الفردوس	الحافظ شیرویہ بن شہردار الدیلمی، متوفی ١١٧٦ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٨ھ
مسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ٢٩٢ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ١٤٢٢ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والأثر	الامام مجد الدین المبارک بن محمد الجزری، متوفی ٦٠٦ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ٢٠١١ھ
الاذکار	الامام یحیٰی بن شرف النووی، متوفی ٦٧٦ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٠ھ

شرح السنۃ	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
سبل الہدی والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
مشکل الآثار	امام ابوجعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفّٰی ۳۲۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۵ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۲۶ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
المنتقی شرح مؤطا امام مالک	الامام القاضی سلیمان بن خلف الباجی، متوفی ۴۹۴ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
شرح البخاری للسفیری	شمس الدین محمد بن عمر بن احمد سفیری متوفّٰی ۹۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
نزھۃ القاری	علامہ مفتی شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اسٹال لاہور ۱۴۲۱ھ
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
شرح العلامۃ الزرقانی	محمد بن عبدالباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۷ھ
مجمع الانہر	عبدالرحمٰن بن محمد بن سلیمان کلیبولی، متوفی ۱۰۷۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
دُرِّ مُختار	علاءالدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
رَدُّالمُحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاوی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۸ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
جہان مفتی اعظم	علامہ محمد احمد مصباحی اعظمی، علامہ عبدالمبین نعمانی مصباحی، مولانا مقبول احمد سالک مصباحی،	رضا اکیڈمی ممبئی
الملفوظ (ملفوظات اعلیٰ حضرت)	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
فتاوی مصطفویہ	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	شبیر برادرز اردو بازار لاہور ۱۴۲۱ھ
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابوعمر یوسف عبداللہ قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
اسد الغابۃ	عزالدین ابوالحسن علی بن محمد الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۱۷ھ

www.dawateislami.net

الاصابۃ	الامام احمد بن علی بن حجر العسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۵ھ
الطبقات الکبری	محمد بن سعد بن منیع الہاشمی البصری المعروف بابن سعد، متوفی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
وفاء الوفاء	نورالدین علی بن احمد سمہودی، متوفی ۹۱۱ھ	داراحیاء التراث، بیروت
الکامل فی ضعفاء الرجال	الامام ابواحمد عبداللہ بن عدی الجرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
تاریخ دمشق	الامام ابوالقاسم علی بن حسن الشافعی المعروف بابن عساکر، المتوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
المواہب اللدنیہ	الشیخ احمد بن محمد القسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۶ھ
سیرت رسول عربی	پروفیسر علامہ نور بخش توکلی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
حیات اعلی حضرت	ملک العلما مولانا ظفر الدین بہاری متوفی ۱۳۸۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تاریخ مشائخ قادریہ	ڈاکٹر غلام یحیی انجم	کتب خانہ امجدیہ
کتاب التعریفات	السید الشریف علی بن محمد بن علی السید الزین ابی الحسن الحسینی الجرجانی الحنفی، متوفی ۸۱۶ھ	دارالمنار

आ़लिम जाहिल को पहचानता है मगर जाहिल आ़लिम को नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "**फ़ैज़ुल क़दीर**" में नक़्ल फ़रमाते हैं :

اَلْعَالِمُ یَعْرِفُ الْجَاھِلَ لِاَنَّہٗ کَانَ جَاھِلاً وَالْجَاھِلُ لَایَعْرِفُ الْعَالِمَ لِاَنَّہٗ لَمْ یَکُنْ عَالِمًا

या'नी आ़लिम जाहिल को पहचानता है क्यूंकि (ह़ुसूले इ़ल्म से पहले) वोह भी जाहिल था लेकिन जाहिल आ़लिम को नहीं पहचानता क्यूंकि वोह कभी आ़लिम नहीं रहा।

(فیض القدیر، ۳/ ۱۱)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़ह़ा	उन्वान	सफ़ह़ा
इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"	3	रिज़्क़ में बरकत हो जाती	24
दुरूद पढ़ने वाले का नाम बारगाहे		लफ़्ज़े "मुह़म्मद" के बारे में ईमान अफ़रोज़ मदनी	
रिसालत में पेश किया जाता है	6	फूल	24
नाम पूछा करते	6	"मुह़म्मद" नाम रखा	28
नाम बच्चे के लिये पहला तोह़फ़ा है	7	اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा	28
क़ियामत के दिन नाम से पुकारा जाएगा	9	बे अदबी न होने पाए	29
अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखें	9	आ'ला ह़ज़रत का त़रीक़ए कार	29
बच्चा फ़ौत हो जाए तो ?	10	आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत की अदा	29
नाम कब रखें ?	11	1000 डॉलर इन्आ़म	30
नाम कौन रखेगा ?	11	पुकारा जाने वाला नाम रखने की एक अहम एह़तियात़	31
मुआ़शरे में नाम रखने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़	12	मुफ़्तिये आ'ज़म ने इस्लाह़ फ़रमाई	31
नाम कैसा होना चाहिए ?	13	बेटे का नाम मुह़म्मद रखो तो उस की इ़ज़्ज़त करो	32
कहीं हुब्बे जाह तो नहीं ?	14	नाम बदल दिया	33
नाम रखते वक़्त अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये	14	मैं बे वुज़ू था	34
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम	15	ऐसी सूरत में "मुह़म्मद" पर दुरूदे पाक नहीं लिखा जाएगा	34
"अ़ब्दुर्रह़मान" और "अ़ब्दुल्लाह" नाम		"मुह़म्मद नबी, अह़मद नबी" नाम न रखा जाए	35
मुकम्मल बोलने की आ़दत बनाएं	15	"मुह़म्मद बख़्श, अह़मद बख़्श" नाम रखना	
"अ़ब्दुल्लाह" नाम रखा	16	जाइज़ है	36
एक "जिन्न" का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखा	17	"ग़ुलामे मुह़म्मद, ग़ुलामे सिद्दीक़" नाम रखना जाइज़ है	36
अ़ब्दुर्रह़मान नाम रखा	18	"अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा, अ़ब्दुन्नबी" नाम रखना जाइज़ है	36
तुम "अबू राशिद अ़ब्दुर्रह़मान" हो	18	"यासीन, त़ाहा" नाम रखना मन्अ़ है	37
अपने बेटे का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रखो	19	"ग़फ़ूरुद्दीन" नाम रखना मन्अ़ है	37
ज़रूरी वज़ाह़त	20	किसी बुज़ुर्ग को क़य्यूमे ज़मां कहना कैसा ?	37
अस्माए इलाहिय्या के साथ नाम रखने के मदनी फूल	21	आदमी को क़य्यूम, क़ुद्दूस और रह़मान कह कर न पुकारिये	38
"जब्बार" नाम तबदील कर के "अ़ब्दुल जब्बार" रखा	22	अ़ब्दुल क़ादिर को क़ादिर कहना कैसा ?	39
नामे मुह़म्मद की बरकतों पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	23	"अ़ब्दुल क़य्यूम" नाम रखा	40

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
बुज़ुर्गाने दीन से नाम रखवाना	40	अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखना	57
बच्चे का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रखा	41	अपने बच्चों की कुन्यत रखें	58
"इब्राहीम" नाम रखा	42	कुन्यत याद करने की बरकत	59
"अ़ब्दुल मलिक" नाम रखा	42	कुन्यत शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होनी चाहिए	60
"सिनान" नाम रखा	42	बड़े बेटे या बेटी के नाम पर कुन्यत इख़्तियार	
"मुसरिअ़" नाम रखा	43	करना बेहतर है	61
"यहूया" नाम रखा	44	ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत	61
ह़ज़रते सय्यिदुना यहूया عَلَيْهِ السَّلَام का नाम		कुन्यत अ़त़ा फ़रमाया करते	62
किस ने रखा ?	44	ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुन्यत अ़त़ा फ़रमाई	63
"मरयम" नाम अ़त़ा फ़रमाया	45	औ़रत भी अपनी कुन्यत रखे	63
पीर ख़ाने से नाम अ़त़ा हुवा	45	मदीने के पहले बच्चे के वालिद की कुन्यत	64
लोगों के बुरे नाम रखना	46	बेटी के नाम पर भी कुन्यत रखी जा सकती है	64
फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं	48	अमीरे अहले सुन्नत और कुन्यत	65
किसी को बे वुक़ूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म	48	कुन्यत की सुन्नत ज़िन्दा कीजिये	66
महब्बत भरे नाम से पुकारना	50	जब किसी का नाम याद न हो तो कैसे पुकारते ?	67
तुम "सफ़ीना" हो	51	पुकारने और ज़िक्र करने का अन्दाज़	68
लक़ब किसे कहते हैं ?	51	जन्नत में मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की	
तख़ल्लुस की ता'रीफ़	52	रफ़ाक़त पाने का नुस्ख़ा	69
12 अकाबिरीने अहले सुन्नत के तख़ल्लुस	52	सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारना	69
महब्बत बढ़ाने का सबब	53	सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का पुकारने का अन्दाज़	70
अच्छे नाम और कुन्यत से पुकारो	53	या रसूलल्लाह क्यूं न कहा ?	71
कुन्यत किसे कहते हैं ?	54	आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अन्दाज़	72
कुन्यत में "अबू" के मा'ना	54	अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मा'मूल	72
अबू हुरैरा (छोटी बिल्ली वाले)	54	अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पुकारना	73
अबू तुराब (मिट्टी वाले)	55	सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को पुकारना	74
अबू ज़र (चूंटियों वाला)	56	बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن को पुकारना	75
कुन्यत की अहम्मिय्यत	57	उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने इ़ज़ाम को पुकारना	76

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दीनी असातिज़ा को पुकारना	77	बस्तियों और अ़लाक़ों के नाम भी तब्दील	
सादाते किराम को पुकारना	78	फ़रमा देते	106
बूढ़े इस्लामी भाइयों को पुकारना	79	नाम के साथ अ़लाक़े का नाम भी बदल दिया	106
मां-बाप को पुकारना	79	चश्मे का नाम तब्दील फ़रमा दिया	108
रिश्तेदारों को पुकारना	79	कुंवें का नाम तब्दील फ़रमा दिया	108
मियां बीवी का एक दूसरे को बुलाना	80	"क़ादिरी अगरबत्ती" से "क़ौमी अगरबत्ती"	109
हम उ़म्र को बुलाना	82	लिबास का भी नाम रखते	110
बिला ज़रूरत दो तीन नाम मिला कर न रखें	83	चश्मे का नाम रखा	110
नाम रखने में मुज़क्कर और मुअन्नस का भी ख़याल रखें	83	रह़मते कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुवारियों के नाम	111
ग़ैर मुस्लिमों के लिये मख़्सूस नाम न रखिये	83	मुबारक बकरियों के नाम	111
बुरे नाम का असर	84	हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़्तलिफ़ अश्या के नाम	111
अच्छे नाम वाले से काम लिया	84	हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक बरतनों के नाम	112
नाम तब्दील फ़रमा दिया करते	86	बद शुगूनी की वज्ह से नाम न बदलें	112
बुरे नाम को बदल देते	87	तारीख़ी नाम रखना	113
वोह बा'ज़ नाम जो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा दिये	88	कुरआन से नाम निकालना	114
अब तक सख़्ती पाई जाती है	95	नेक शख़्स के नाम पर नाम रखने की बरकत	116
जिन नामों से अपनी ता'रीफ़ निकलती हो वोह न रखे जाएं	96	नेक लोगों के नाम पर नाम रखो	116
अमीरे अहले सुन्नत का खुद को फ़क़ीरे अहले सुन्नत कहना	97	नबियों के नाम पर नाम रखो	117
बुरा नाम तब्दील कर के जुवैरिया रखा	98	मह़बूबाने ख़ुदा के नामों पर नाम रखना मुस्तह़ब है	118
जिन नामों में कम तज़किया हो वोह रख सकते हैं	99	नवासों का नाम ह़सन और हुसैन रखा	119
तीन क़िस्म के नाम न रखें	102	अपने शहज़ादे का नाम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के नाम पर रखा	120
येह नाम रखना बेहतर नहीं है	103	खुलासए किताब	120
मन्अ़ करने की ख़्वाहिश थी लेकिन मन्अ़ नहीं किया	104		
बस्ती का नाम पसन्द आता तो खुश होते	105		

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
बच्चों और बच्चियों के लिये 538 प्यारे प्यारे नाम	122	मुक़द्दस नाम	146
बच्चों के लिये 391 प्यारे प्यारे नाम	122	सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की 4 शहज़ादियों के मुबारक नाम	147
"अ़ब्द" की इज़ाफ़त के साथ 59 रहमत भरे नाम	122	सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की 3 मुक़द्दस कनीज़ों के नाम	147
सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे अक़्दस	125	सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की 4 नवासियों के नाम	148
शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 119 बरकत वाले नाम	126	59 सहाबिय्यात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के नाम	148
26 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़ज़मत वाले नाम	132	49 दीगर बुज़ुर्ग ख़वातीन के नाम	151
शाहे अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 3 शहज़ादों के मुबारक नाम	134	तक़रीबन 16 मुतफ़र्रिक़ ज़नाना नाम	156
सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 5 नवासों के मुक़द्दस नाम	134	7 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कुन्यतें	157
अ़शरए मुबश्शरा के प्यारे प्यारे नाम	134	71 सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की कुन्यतें	158
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के 135 पाकीज़ा नाम	135	13 सहाबिय्यात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ की कुन्यतें	162
ताबेईन व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के 27 मुबारक नाम	142	दीगर 65 बुज़ुर्गाने दीन की कुन्यतें	163
निस्बतों वाले 8 मुतफ़र्रिक़ नाम	145	18 सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अल्क़ाबात	167
बच्चियों के लिये 150 प्यारे प्यारे नाम	146	9 मशहूर ताबेईन व मुहद्दिसीन के अल्क़ाबात	169
सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अम्मी जान का मुबारक नाम	146	9 मशहूर बुज़ुर्गाने दीन के अल्क़ाबात	169
सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ाई माओं के नाम	146	पाक व हिन्द के 31 मशहूर उ़लमाए किराम के अल्क़ाबात	170
11 उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के		मआख़िज़ो मराजेअ़	173
		याद दाश्त सफ़हा बराए मुतालआ़	180

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

DAWAT-E-ISLAMI

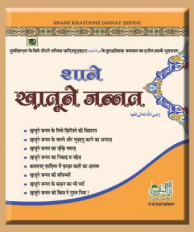

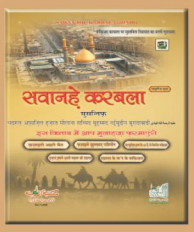

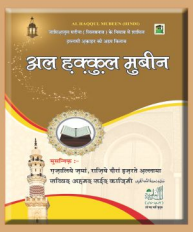

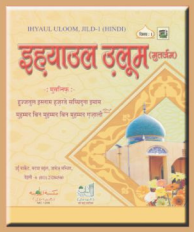

0133170

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislami.net